राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

क्रांति समय

कार्यालय ऑफिस

क्रांति समय दैनिक समाचार में प्रेसनोट,नोटिस,वेपार संबंधित संपर्क करें

पता:- एस.टी.पी.आई-सुरत-395023

संपर्क नं.-9879141480

ईमेल:-info.krantisamay@gmail.com

सुरत गुजरात से प्रकाशित, मुंबई,उत्तरप्रदेश,बिहार,राजस्थान,मध्यप्रदेश,उत्तरांचल,उत्तराखंड,दिल्ली,हरियाणा में प्रसारीत

सुरत–गुजरात,संस्करण गुरुवार, 14 अप्रैल 2022 वर्ष–4,अंक–78 पृष्ठ–08 मूल्य–01रूपये

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

कानपुर: 15000 नींबू की लूट

रखवाली के लिए बगीचों में अब लठैतों का पहरा

कानपुर। ठेलों पर मारा-मारा फिरने वाला अदना सा नींबू इन दिनों बेशकीमती हो गया है। सेब, आम, तरबूज, खरबूजा, कीवी, अंगूर जैसे फलों ने भी कीमत के मामले में नींबू के आगे घुटने टेक दिए हैं। हाल यह है कि पहली बार नींबू के लुटेरे पैदा हो गए हैं। बिठूर के बाग से लुटेरों ने 15000 नींबू लूट लिए। इसके बाद रात-रात भर नींबू के बाग में लठैत पहरा दे रहे हैं। नींबू लूट की तहरीर पुलिस को दी गई है। चौबेपुर, बिठूर कटरी, मंधना, परियर में करीब 2000 बीघा जमीन पर नींबू के बगीचे हैं। यह पहली बार है कि नींबू के बगीचों में रखवाली हो रही है। दरअसल नींबू की कीमत दस रुपये का एक या 250 रुपये किलो होते ही लूट शुरू हो गई। गंगा कटरी के बिठूर में लुटेरे बाग से 15 हजार नींबू तोड़ ले गए। बिठूर कटरी में नींबू उगाने वाले राम नरेश, चिरंजू, चौभी निषाद, जगरूप, जारी पोखर बगीचा केयर टेकर राजेंद्र पाल ने बताया अब नींबू के बगीचे में दिन रात रखवाली करनी पड़ रही है। यह पहली बार है कि नींबू लूटा जा रहा है। बगीचा मालिकों ने नींबू की रखवाली के लिए कर्मचारी रखे हैं। शिवदीन पुरवा के अभिषेक निषाद ने बिठूर थाने में नींबू लूट की एफआईआर लिखाने के लिए तहरीर दी है। इसके मुताबिक उनके तीन बीघा बगीचे में

तीन दिन के अंदर चोर दो हजार नींबू तोड़कर ले गए। परेशान अभिषेक निषाद ने नींबू तैयार होने तक बाग में ही अपना बसेरा बना लिया है। यही नजारा लगभग सभी नींबू बगीचों का है। केयरटेकर एक-एक नींबू की गिनती कर रिकॉर्ड मेनटेन कर रहे हैं।

काली नदी में पत्थर से बंधी मिली युवती की लाश

कासगंज। सदर कोतवाली क्षेत्र के कानरखेड़ा गांव के समीप से गुजरती काली नदी में बुधवार को एक युवती का शव पुलिस ने बरामद किया है। माना जा रहा है कि युवती की हत्या कर-के शव नदी में फेंका गया है। युवती का शव नदी से निकाले जाने के बाद भी नाक से खून बह रहा था। पुलिस ने शव का पोस्टमार्टम कराया है। पोस्टमार्टम के बाद युवती की हत्या के कारणों की स्थिति स्पष्ट होगी। कोतवाली पुलिस को बुधवार को पूर्वाह्न के समय युवती का शव नदी में पड़े होने की कानरखेड़ा के ग्रामीणों ने जानकारी दी। नदी में जिस तरफ युवती का शव पड़ा हुआ था वहीं पर उदय सिंह का खेत था। सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंच गई। पुलिस ने ग्रामीणों की सूचना पर युवती का शव बरामद कर लिया।

केएस ईश्वरप्पा के मामले में युवा कांग्रेस ने खोला मोर्चा, अमित शाह के घर का घेराव

नई दिल्ली। युवा कांग्रेस के कार्यकताओं ने कर्नाटक में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के एक कार्यकर्ता की आत्महत्या के लिए कथितरूप से जिम्मेदार राज्य के पंचायती राज मंत्री के.एस. ईश्वरप्पा को मंत्री पद से हटाने की मांग को लेकर बुधवार को यहां गृहमंत्री अमित शाह के घर का घेराव किया। युवा कांग्रेस कार्यकर्ता संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीनिवास बी वी के नेतृत्व में सुनहरी बाग चौराहे में एकत्रित हुए और वहां से श्री शाह के आवास के तरफ कूच किया लेकिन दिल्ली पुलिस ने भारी बैरिकेडिंग लगाकर उत्तेजित कार्यकताओं को रोक दिया और फिर कई कार्यकताओं को हिरासत में ले लिया। इस दौरान प्रदर्शनकारी सरकार के विरोध में नारे लगाने लगे और श्री ईश्वरप्पा को बर्खास्त कर मामले की जांच की मांग करने लगे। प्रदर्शनकारियों को संबोधित करते हुए श्री श्रीनिवास ने कहा कि कर्नाटक में

भ्रष्टाचार चरम पर है और मंत्री तथा नेताओं के कमीशन के कारण पूरे प्रदेशों में आराजकता के माहौल है। उन्होंने कहा कि कर्नाटक में भाजपा के पेशे ठेकेदार कार्यकर्ता ने आरोप लगाया है कि श्री ईश्वरप्पा ने उनसे काम के बदले 40 प्रतिशत कमीशन मांगकर उन्हें तंग किया है और इससे परेशान होकर वह आत्महत्या कर रहे हैं। कांग्रेस नेता ने कहा ह्लभाजपा कार्यकर्ता संतोष पाटिल ने आत्महत्या से पहले लिखा है, मैं भारत के प्रधानमंत्री, कर्नाटक के मुख्यमंत्री और हमारे सीनियर लीडर येदुरप्पा से आग्रह करता हूं कि मेरे परिवार का ध्यान रखें। मैं हाथ जोड़कर विनती करता हूं कि जो संतोष तथा प्रशांत मेरे साथ आए थे, वे मेरी मृत्यु के जिम्मेवार नहीं हैं, मेरी मृत्यु के जिम्मेवार के.एस. ईश्वरप्पा हैं।

आजम खां के समर्थन में इस्तीफा

सपा नेता कहा-परिवार समेत जेल में डाल दिया, लेकिन खामोश रहे अखिलेश

लखनऊ। उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव के बाद समाजवादी पार्टी में बगावत के सुर तेज होते जा रहे हैं। सपा के कुछ नेता अपने राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव से नाराज चल रहे हैं। सीतापुर जेल में बंद सपा नेता आजम खां के समर्थन में सपा के एक बड़े नेता ने इस्तीफा दे दिया है। एक पत्र लिखकर उन्होंने अखिलेश यादव गंभीर आरोप भी लगाए हैं। सुल्तानपुर विधानसभा सीट से सचिव सलमान जावेद राइन ने अखिलेश यादव मुसलमानों के लिए न बोलने का आरोप लगाया है। उन्होंने कहा कि सपा नेताओं पर हो रही कार्रवाई पर भी अखिलेश यादव ने मौन साध रखा है, उनकी

चुप्पी की वजह से ही वह इस्तीफा दे रहे हैं। सलमान जावेद के पत्र के अनुसार, आजम खां को परिवार सहित जेल में डाल दिया। नाहिद हसन को जेल भेज दिया गया। विधायक शलजिल इस्लाम का पेट्रोल पंप गिरा दिया और एनओसी रद्द कर दी गई। इतना होने के बाद भी अखिलेश यादव चुप हैं, उन्होंने आगे लिखा कि जो कायर नेता अपने विधायकों के लिए आवाज नहीं उठा सकता वो आम आदमी आजम खां का जिक्र किया।

कैबिनेट ने राष्ट्रीय ग्राम स्वराज अभियान को आगे बढ़ाने की दी मंजूरी, 2025-26 तक बढ़ाया गया

नई दिल्ली। केंद्रीय सूचना और प्रसारण मंत्री अनुराग ठाकुर ने कहा कि आर्थिक मामलों की मंत्रिमंडलीय समिति (सीसीईए) ने बुधवार को 5,911 करोड़ रुपये के खर्च के साथ 2025-26 तक राष्ट्रीय ग्राम स्वराज अभियान (आरजीएसए) को जारी रखने की मंजूरी दी है। सीसीईए ने एक आधिकारिक बयान में कहा कि इस योजना के कुल वित्तीय परिव्यय में केंद्रीय हिस्सा 3,700 करोड़ रुपये और राज्य का हिस्सा 2,211 करोड़ रुपये है। इसने यह भी कहा कि पंचायती राज संस्थानों (पीआरआई) की शासन क्षमताओं को विकसित करने के लिए 1 अप्रैल, 2022 से 31 मार्च, 2026 (15वें वित्त आयोग की अवधि के साथ सह-टर्मिनस) की अवधि के दौरान आरजीएसए की संशोधित केंद्र प्रायोजित योजना को लागू करने के लिए अनुमोदित किया गया है। कैबिनेट ने कहा कि आरजीएसए की स्वीकृत योजना

देश भर में पारंपरिक निकायों सहित 2.78 लाख से अधिक ग्रामीण स्थानीय निकायों को उपलब्ध संसाधनों के अधिकतम उपयोग पर ध्यान देने के साथ समावेशी स्थानीय शासन के माध्यम से एसडीजी को वितरित करने के लिए शासन क्षमता विकसित करने में मदद करेगी। कैबिनेट ने कहा कि राष्ट्रीय महत्व के विषयों को मुख्य रूप से गांवों में गरीबी मुक्त और बढ़ी आजीविका, स्वस्थ गांव, बच्चों के अनुकूल गांव, पानी पर्याप्त गांव, स्वच्छ और हरे गांव, गांव में आत्मनिर्भर बुनियादी ढांचा, सामाजिक रूप से प्राथमिकता दी जाएगी।

गिरफ्तार भाजपा नेताओं को दौसा बॉर्डर पर छोड़ा

तेजस्वी बोले-हिंदू विरोधी सरकार के खिलाफ लड़ते रहेंगे

करौली। करौली हिंसा को लेकर भाजयुमो और भाजपा नेताओं की न्याय यात्रा को करौली बॉर्डर पर रोक दिया गया। जिसके बाद कार्यकताओं और पुलिस के बीच झड़प हुई। हालात काबू करने के लिए पुलिस ने लाठीचार्ज भी किया। उसके बाद भाजपा युवा मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष तेजस्वी सूर्या और प्रदेश अध्यक्ष सतीश पूनिया सहित 400 कार्यकताओं को गिरफ्तार कर महुआ थाने ले जाया गया। गिरफ्तार भाजपा नेता सतीश पूनिया, तेजस्वी, सांसद मनोज, सांसद रंजीता कोली, भाजयुमो के प्रदेश अध्यक्ष हिमांशु शर्मा सहित सभी बड़े नेताओं और कार्यकताओं को दौसा बॉर्डर पर लाकर छोड़ दिया गया है। मौके पर पुलिस बल अभी भी तैनात है। जब तक सभी कार्यकताओं की रवानगी नहीं होती, पुलिस मौके पर ही बनी रहेगी। पूनिया ने कहा कि हमने नामजद गिरफ्तारियां दी है। हमने गहलोत सरकार को नंगा कर दिया है, जो न्याय की जगह लाठियों पर बल देती है। 2023 में इसका जवाब मिलेगा। वहीं तेजस्वी सूर्या ने कहा कि ये ट्रेलर है पिक्चर बाकी है। राजस्थान की हिंदू विरोधी सरकार को आज पूरे देश ने देखा है। लड़ाई लंबी है। युवा मोर्चा अपनी ऊर्जा बनाए रखें क्योंकि ये लड़ाई सरकार

बदलने तक जारी रहेगी। बता दें कि यात्रा को रोकने से आक्रोशित सतीश पूनिया, सासंद रंजीता कोली, सांसद मनोज राजौरिया सड़क पर ही धरने पर बैठ गए थे। भाजपा युवा मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष तेजस्वी सूर्या ने गहलोत सरकार को चेतावनी दी थी कि उन्हें अगर जाने नहीं दिया गया तो यहीं पर उग्र आंदोलन किया जाएगा। सूर्या ने कहा कि हर कीमत पर करौली जाएंगे, नहीं तो सामूहिक रूप से गिरफ्तारियां देंगे। इस दौरान 'गहलोत हमसे डरता है' और 'जय श्री राम' की जमकर नारेबाजी हुई। भारी पुलिस बल मौके पर तैनात है। मौके पर तीन लेयर बैरिकेड्स लगाया गया है। अधिकारियों ने मौके पर मौजूद भाजपा नेताओं और कार्यकताओं से समझाइश करने की कोशिश की लेकिन वे नहीं माने। पुलिस पक्ष का कहना है कि अगर सरकार इजाजत देती है, तभी जाने देंगे। तेजस्वी सूर्या ने मीडिया से बात करते हुए कहा कि हम जहां अभी हैं, वहां धारा 144 लागू नहीं है। करौली जाना हमारा संवैधानिक अधिकार है। यह तानाशाही सरकार हमारे अधिकारों को छीन रही है, इसलिए हम विरोध कर रहे हैं।' इधर, राज्यपाल कलराज मिश्र ने करौली हिंसा को लेकर डीजीपी एमएल लाठर को तलब किया है।

उन्होंने मामले की जांच पूरी निष्ठा और ईमानदारी से करने के निर्देश दिए हैं। बता दें कि करौली हिंसा को लेकर प्रदेश में दो अप्रैल से सियासत गरमाई हुई है। भाजपा और कांग्रेस एक दूसरे पर तुष्टीकरण के आरोप लगाए हैं। तेजस्वी सूर्या बुधवार को करौली पहुंचे। उनका करौली हिंसा पीड़िता हिंदू परिवारों से मुलाकात करने का कार्यक्रम था। भाजपा के कई बड़े नेता इस न्याय यात्रा में शामिल हुए।

हेट स्पीच मामले में अकबरुद्दीन ओवैसी बरी

हैदराबाद। हेट स्पीच की वजह से चर्चा में रहने वाले असदुद्दीन ओवैसी के भाई अकबरुद्दीन ओवैसी को कोर्ट से बड़ी राहत मिली है। हैदराबाद के नामपल्ली मेट्रोपोलिटन कोर्ट ने एआईएमआईएम विधायक अकबरुद्दीन ओवैसी को दो हेट स्पीच मामले में बरी कर दिया है। ये दोनों मामले निरमल और निजामाबाद जिले से जुड़े हुए थे। कोर्ट ने कहा कि अभियोजक पर्याप्त सबूत नहीं दे पाए। कोर्ट ने अकबरुद्दीन ओवैसी को हिदायत दी है कि वह कोई भी विवादित बयान न दें। कोर्ट ने कहा कि देश कि

अखंडता का ध्यान रखते हुए अपनी भाषा पर नियंत्रण करना जरूरी है। बता दें कि यह मामला 2012 का था जब उन्होंने निजामाबाद और निरमल में हेट स्पीच दी थी। मंगलवार को कोर्ट ने इन मामलों में सुनवाई की थी लेकिन फैसला सुरक्षित रख लिया था। बता दें कि अकबरुद्दीन ओवैसी एआईएमआईएम चीफ और सांसद असदुद्दीन ओवैसी के भाई हैं।

महिलाओं से रेप की धमकी देने वाले के घर कब चलेगा बुलडोजर? महंत की गिरफ्तारी न होने पर सपा ने उठाए सवाल

लखनऊ। यूपी में मुख्य विपक्षी दल समाजवादी पार्टी (सपा) ने सीतापुर जिले में मुस्लिम महिलाओं से बलात्कार की खुली धमकी देने वाले एक कथित महंत को अब तक गिरफ्तार नहीं किए जाने पर सवाल उठाए हैं। सपा ने अपने आधिकारिक हैंडल से किए गए ट्वीट में कहा, भाईचारे और सद्भावना की सबसे बड़ी दुश्मन भाजपा सरकार। सीतापुर में धर्म विशेष की महिलाओं को पुलिस की मौजूदगी में रेप की धमकी देने वाले आरोपी की अब तक गिरफ्तारी न होना घोर निंदनीय है। पुलिस अब तक क्यों है खाली हाथ ? जवाब दे

सरकार। पार्टी ने इसी ट्वीट में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से पूछा है कि आखिर ऐसी भड़काऊ टिप्पणी करने वाले महंत पर बुलडोजर कब चलेगा। गौरतलब है कि पिछली दो अप्रैल को हिंदू नव वर्ष पर बड़ी संगत उदासीन आश्रम के महंत बजरंग मुनि उर्फ अनुपम मिश्रा ने सीतापुर जिले में कथित रूप से एक मस्जिद के सामने गाड़ी में बैठ कर लाउडस्पीकर से भड़काऊ बयान दिया था। उसने पुलिस की मौजूदगी में कहा था कि अगर कोई मुस्लिम व्यक्ति क्षेत्र की किसी हिंदू महिला या लड़की को परेशान करेगा तो वह मुसलमानों के घर में घुसकर उनकी बहू-बेटियों से बलात्कार करेगा। इसके अलावा उसने मुस्लिम समाज को लेकर और भी आपत्तिजनक बातें कही थी। हालांकि बाद में उसने एक वीडियो जारी कर माफी भी मांगी थी। राष्ट्रीय महिला आयोग ने इस मामले का संज्ञान लेते हुए राज्य के पुलिस महानिदेशक को पत्र लिखकर कार्रवाई करने को कहा था।

महंगाई की मार: उबर के बाद ओला ने बढ़ाया किराया, जानें कितना महंगा हो जाएगा सफर

नई दिल्ली। देश में सड़क से रसोई तक महंगाई की तगड़ी मार आम जनता पर पड़ रही है। बीते दिनों लगातार वृद्धि के बाद हालांकि, पेट्रोल और डीजल के दम में ठहराव आया है लेकिन फिर भी पेट्रोल, डीजल, सीएनजी सभी के दाम हाई पर बने हुए हैं। इसके चलते खाने-पीने की चीजों पर महंगाई बढ़ी है, तो साथ ही सफर भी महंगा हो गया है। अब किराए पर टैक्सी बुक कराके जाने के लिए भी आपको ज्यादा खर्च करना होगा। एप आधारित टैक्सी सेवा प्रदान करने वाली कंपनियों पर पेट्रोल-डीजल और सीएनजी के दामों में इजाफे का असर साफ दिखाई दे रहा है। इसके चलते एक के बाद एक कंपनियों ने अपने किराये में वृद्धि की घोषणा की है। पहले उबर ने अपने किराए में बढ़ोतरी की, तो अब ओला ने भी कैब सर्विस का किराया बढ़ा दिया है। ओला ने भी देश के कई शहरों में किराये में वृद्धि की घोषणा की है। इसके लिए पेट्रोल-डीजल और सीएनजी के दाम में इजाफे को जिम्मेदार बताया गया है। कंपनी की

ओर से हैदराबाद के अपने पार्टनर ड्राइवर्स को भेजे गए ई-मेल में किराया बढ़ाने की जानकारी साझा की गई है। हैदराबाद में चलने वाले मिनी और प्राइम कैब सर्विसेज के किराये में 16 फीसदी तक की बढ़ोतरी करने की जानकारी ई-मेल में दी गई है। हालांकि, कंपनी ने किराये में वृद्धि को लेकर अभी आधिकारिक घोषणा नहीं की है। ओला से पहले बीते दिन एप के जरिए कैब सुविधा देने वाली बड़ी कंपनी उबर ने भी अपने किराये में बढ़ोतरी करते हुए ग्राहकों को तगड़ा झटका दिया था। गौरतलब है कि उबर ने दिल्ली-एनसीआर में किराए में 12 फीसदी की बढ़ोतरी का एलान किया है। उबर इंडिया और दक्षिण एशिया के सेंट्रल ऑपरेशंस के प्रमुख नीतीश भूषण ने कहा है- हमने ड्राइवरों के फीडबैक को सुना और समझा कि हाल ही में ईंधन की कीमतों में हुई बढ़ोतरी से उन्हें दिक्कत हो रही है। जिस हिसाब से एप आधारित टैक्सी सेवा देने वाली कंपनियों ने किराया बढ़ाने का फैसला किया है, उसे देखकर ये कहना गलत न होगा कि ऑटो और बसों के किराये में भी आने वाले समय में इजाफा हो सकता है। जिन कंपनियों ने दाम बढ़ाए हैं, उनका कहना है कि आने वाले हफ्तों में भी हम ईंधन की कीमतों पर लगातार नजर रखेंगे और उसी के हिसाब से अपना अगला कदम उठाएंगे।

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

सुविचार जिस प्रकार बिना जल के धान नहीं उगता उसी प्रकार बिना विनय के प्राप्त की गयी विधा फलदायी नहीं होती। - भगवान महावीर

संपादकीय

मोदी-बाइडन वार्ता

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन के बीच हुई आभासी शिखर-वार्ता के गहरे निहितार्थ हैं। रियायती दर पर भारत को तेल बेचने के रूसी प्रस्ताव को लेकर एकाधिक अमेरिकी बयानों से भ्रम की स्थिति बन गई थी। पश्चिमी मीडिया का एक हिस्सा इन बयानों को अमेरिकी नाखुशी के रूप में पेश करने में जुटा था, लेकिन विदेश मंत्री एस जयशंकर ने भारत-अमेरिकी 2+2 वार्ता के बाद आयोजित संवाददाता सम्मेलन में स्पष्ट कर दिया कि रूस से पेट्रो उत्पादों की खरीद के संदर्भ में भारत को लेकर अमेरिका को चिंतित होने की जरूरत नहीं है, क्योंकि यूरोप जितना एक दोपहर में उससे तेल खरीदता है, भारत उतना महीने भर में भी आयात नहीं करता। वाशिंगटन को यह मानना पड़ा है कि भारत का तेल आयात मॉस्को पर आयद प्रतिबंधों का उल्लंघन नहीं है और यूक्रेन युद्ध के मामले में भारत अपनी भूमिका लेने के लिए आजाद है। रूस-यूक्रेन युद्ध के बाद दुनिया की बड़ी शक्तियां अब खुलकर आमने-सामने आ चुकी हैं और अमेरिका चाहता है कि रूस पर आर्थिक दबाव बनाए रखा जाए। इसलिए मॉस्को से पेट्रो उत्पादों के अलावा हथियार खरीद के नए समझौतों को लेकर भी उसने अपने तेवर कड़े कर लिए हैं। लेकिन वाशिंगटन को यह समझने की जरूरत है कि रूस के साथ भारत के दशकों पुराने सामरिक संबंध हैं और वह अपने हितों की अनदेखी नहीं कर सकता। यूक्रेन मामले पर संयुक्त राष्ट्र की तमाम वोटिंग के दौरान अनुपस्थित रहकर भी भारत ने यह साफ कर दिया है कि वह अपने कंधे का इस्तेमाल करने की इजाजत किसी को नहीं देगा। अब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के रुख से भी वाशिंगटन को स्पष्ट हो जाना चाहिए कि भारत वैश्विक शांति और अपने हितों के बीच संतुलन साधना जानता है। प्रधानमंत्री ने बातचीत के दौरान एक बार भी रूस का नाम नहीं लिया। भारत को अपने पक्ष में करने की अमेरिकी रणनीति समझी जा सकती है। ये दोनों देश दुनिया के दो सबसे बड़े लोकतंत्र हैं। फिर वाशिंगटन जानता है कि चीन पहले से मॉस्को के साथ है। उसके पास मजबूत आर्थिक व सैन्य ताकत के अलावा एक विशाल बाजार भी है, जिसका जवाब सिर्फ भारत हो सकता है। भारत और चीन के तनावपूर्ण संबंधों में भी वह अपने लिए संभावनाएं देख रहा है। चंद रोज पहले उसके उप-राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार दलीप सिंह की अराजनयिक टिप्पणी इसी बात की तस्दीक करती है। अब वह भारत की ऊर्जा व सैन्य जरूरतों में अपनी दिलचस्पी दिखा रहा है। यह सही है कि अंतरराष्ट्रीय कूटनीति परिस्थितियों से संचालित होती है, लेकिन नाजुक मौकों पर रूस के सहयोग को भारत कैसे भूल सकता है? वह भी उस अमेरिका के मुकाबले, जिसने तमाम सुबूतों के बावजूद पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद के मामले में भारतीय हितों की हमेशा अनेदखी की? इन सबके बावजूद प्रधानमंत्री ने यूक्रेन के मासूम नागरिकों की हत्या की तीखी निंदा की है। और यह भारत का पुराना रुख है, वह किसी अमानवीय कृत्य की हिमायत नहीं कर सकता। निस्संदेह, भारत को भी अमेरिका के साथ और सहयोग की आवश्यकता है, पर वाशिंगटन को समझना होगा कि इकतरफा दबाव का दौर अब खत्म हो चुका है। यूरोप का रूस से जारी कारोबार इसका सबसे बड़ा उदाहरण है। इसलिए परस्पर सम्मान और समझदारी से ही भारत-अमेरिकी संबंध भी एक नई ऊंचाई को छू सकेंगे।

आज के कार्टून

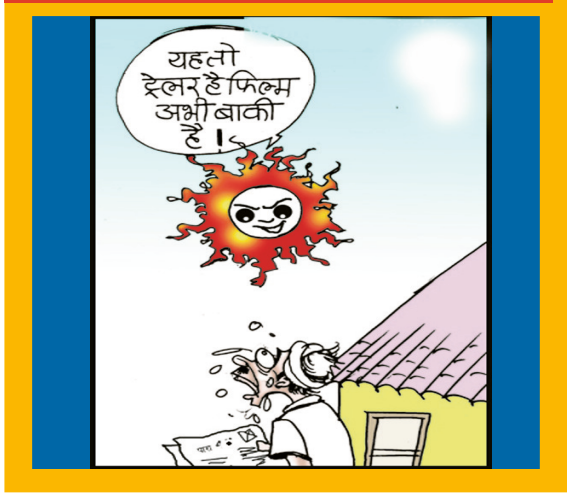

ब्रह्मचर्य

आचार्य रजनीश ओशो/ जब दो शरीर के बीच आकर्षण होता है तो काम; जब दो मनों के बीच आकर्षण होता है तो प्रेम--जिसे हम प्रेम कहते हैं; जब दो आत्माओं के बीच आकर्षण होता है तब प्रार्थना; और जब दो बिल्कुल खो जाते हैं, दो ही नहीं रह जाते, तब इश्क, जिसको दादू प्रेम कहते हैं; जिसको जीसस ने प्रेम कहा है। वह आखिरी ऊंचाई है। वे सीढ़ियां तुम्हारे भीतर हैं। तुम पहली ही सीढ़ी पर खड़े रह जाओ तो कोई और जिम्मेवार नहीं है। दूसरी सीढ़ी पास ही थी, लेकिन कोई अड़चन होनी चाहिए। कोई गहरी बाधा होनी चाहिए। इतने लोग चूक जाते हैं कि करीब-करीब ऐसा लगता है, चूकना स्वाभाविक है। और इतने कम लोग उपलब्ध हो पाते हैं कि ऐसा लगता है, पाना अपवाद है, नियम नहीं। कोई बुद्ध, कोई चैतन्य, कोई दादू, कोई नानक--कभी करोड़ों लोगों में एक। बाधा है - मरने का डर। क्योंकि जितनी ऊंचाई पर तुम जाते हो, उतना ही तुम्हारा अहंकार क्षीण होने लगता है, गलने लगता है। जितनी ऊंचाई होगी, उतने ही तुम कम हो जाओगे। यह डर है। जितनी निचाई होगी, उतने ही तुम रहोगे। ठीक जमीन पर पड़े रहो तो पत्थर की चट्टान की तरह तुम होओगे। स्वभावत- ऊपर उठना हो तो पत्थर की चट्टानें ऊपर नहीं उठतीं; सुगंध उठती है, अग्नि की शिखा उठती है, भाप उठती है। विरल हो जाना पड़ता है। स्वयं को खोना पड़ता है। कामवासना में कोई खोता नहीं अपने को। कामवासना में तुम-तुम रहते हो। तुम दूसरे का उपयोग कर लेते हो। तुम मिटते नहीं, वस्तुत- तुम दूसरे को मिटाने की चेष्टा करते हो। इसीलिए तो पति-पत्नियों में इतनी कलह है सारे संसार में पूरे मनुष्य-जाति के इतिहास में। हजार तरह से सोचा गया है कि पति-पत्नी की कलह कैसे मिटे। कोई उपाय नहीं दिखता। कलह मिट नहीं सकती, ऐसा लगता है। जब तक मनुष्य ऊपर न उठना सीखे, कलह नहीं मिट सकती। कलह यही है कि पत्नी पति को मिटाने की चेष्टा कर रही है, पति पत्नी को मिटाने की चेष्टा कर रहा है। एक गहन संघर्ष है, जो चाहे उन्हें ज्ञात भी न हो। पति कोशिश कर रहा है कि मैं सब कुछ हूं, तू मेरी परिधि है। पत्नी भी यही कोशिश कर रही है कि मैं केंद्र हूं, तुम परिधि हो। दोनों के अहंकार अपने को बचाने की चेष्टा में संलग्न हैं। कहीं दूसरा मिटा न दे। इसके पहले कि दूसरा मिटाए, मैं उसे मिटा दूं; यही सुरक्षा का उपाय मालूम पड़ता है। इसलिए कामवासना प्रेम की तो बड़ी दूर की खबर है, हिंसा की ज्यादा।

जाति प्रथा के विरोधी थे डा.आम्बेडकर

(14 अप्रैल जयन्ती पर विशेष)

(लेखक- रमेश सर्राफ धमोरा)

भारतीय संविधान के रचयिता डॉ. भीमराव आम्बेडकर का सपना था कि भारत जाति-मुक्त हो, औद्योगिक राष्ट्र बने, सदैव लोकतांत्रिक बना रहे। लोग आम्बेडकर को एक दलित नेता के रूप में जानते है। जबकि उन्होने बचपन से ही जाति प्रथा का खुलकर विरोध किया था। उन्होने जातिवाद से मुक्त आर्थिक दृष्टि से सुदृढ़ भारत का सपना देखा था। मगर देश की गन्दी राजनीति ने उन्हे सर्वसमाज के नेता के बजाय दलित समाज का नेता के रूप में स्थापित कर दिया। डा.आम्बेडकर का एक और सपना भी था कि दलित धनवान बनें। वे हमेशा नौकरी मांगने वाले ही न बने रहें अपितु नौकरी देने वाले भी बनें। बाबा साहब का मानना था कि वर्गहीन समाज गढने से पहले समाज को जाति विहीन करना होगा। आज महिलाओं को अधिकार दिलाने के लिए हमारे पास जो भी संवैधानिक सुरक्षाकवच, कानूनी प्रावधान और संस्थागत उपाय मौजूद हैं। इसका श्रेय किसी एक मनुष्य को जाता है वे हैं डॉ. भीमराव आम्बेडकर। भारतीय संदर्भ में जब भी समाज में व्याप्त जाति, वर्ग और लिंग के स्तर पर व्याप्त असमानताओं और उनमें सुधार के मुद्दों पर चिंतन हो तो डॉ. आंबेडकर के विचारों और दृष्टिकोण को शामिल किए बिना बात पूरी नहीं हो सकती। हर वर्ष 14 अप्रैल को बाबासाहेब डा.भीमराव आम्बेडकर की जयन्ती मनायी जाती है। बाबासाहेब की जयन्ती पर लोगों को संकल्प लेना चाहिये कि हम सब सच्चे मन से उनके बताये मार्ग का अनुशरण करेगें। उनके बनाये संविधान का पालन करेगें। ऐसा कोई काम नहीं करेगें जिससे देश के किसी कानून का उल्लघंन होता हो। चूंकि बाबासाहेब हमेशा जाति प्रथा, ऊंच नीच की बातों के विरोधी थे। इसलिये उनकी जयन्ती पर उनको श्रधांजली देने का सबसे अच्छा तरीका है उनके सिद्धांतो को अपने जीवन में अपनाये। बाबासाहेब भीमराव आम्बेडकर का जन्म 14 अप्रैल 1891 को मध्यप्रदेश के मऊ में एक गरीब परिवार मे हुआ था। वो भीमराव रामजी मालोजी सकपाल और भीमाबाई की 14 वीं सन्तान थे। उनका परिवार मराठी था जो महाराष्ट्र के रत्नागिरी जिले मे स्थित अम्बावडे नगर से सम्बंधित था। उनके बचपन का नाम रामजी सकपाल था। वे हिंदू महार जाति के थे जो अछूत कहे जाते थे। उनकी जाति के साथ सामाजिक और आर्थिक रूप से गहरा भेदभाव किया जाता था। एक अस्पृश्य परिवार में जन्म लेने के कारण उनको बचपन कष्टों में बिताना पड़ा था। भारतीय संदर्भ में देखा जाए तो आम्बेडकर संभवतः पहले अध्येता रहे हैं। जिन्होंने जातीय संरचना में महिलाओं की स्थिति को समझने की कोशिश की थी। उनके संपूर्ण विचार मंथन के दृष्टिकोण में सबसे महत्वपूर्ण मंथन का हिस्सा महिला सशक्तिकरण था। आम्बेडकर यह बात समझते थे कि स्त्रियों की स्थिति सिर्फ ऊपर से उपदेश देकर नहीं सुधरने वाली, उसके लिए कानूनी व्यवस्था करनी होगी। हिंदू कोड बिल महिला सशक्तिकरण का असली आविष्कार है। इसी कारण आंबेडकर हिंदू कोड बिल लेकर आये थे। हिंदू कोड बिल भारतीय महिलाओं के लिए सभी मर्ज की दवा थी। पर अफसोस यह बिल संसद में पारित नहीं हो पाया और इसी कारण आम्बेडकर ने कानून मंत्री पद का इस्तीफा दे दिया था। स्त्री सरोकारों के प्रति डॉ भीमराव आम्बेडकर का समर्पण किसी जुनून से कम नहीं था। डा.भीमराव आम्बेडकर का मानना था कि भारतीय महिलाओ के पिछड़ेपन की मूल वजह भेदभावपूर्ण समाज व्यवस्था और शिक्षा का अभाव है। शिक्षा में समानता के संदर्भ में आंबेडकर के विचार स्पष्ट थे। उनका मानना था कि यदि हम लडकों के साथ-साथ लड़कियों की शिक्षा पर ध्यान देने लग जाए तो प्रगति कर सकते है। शिक्षा पर किसी एक ही वर्ग का अधिकार नहीं है। समाज के प्रत्येक वर्ग को शिक्षा का समान अधिकार है। नारी शिक्षा पुरुष शिक्षा से भी अधिक महत्वपूर्ण है। चूंकि पूरी पारिवारिक व्यवस्था की धुरी नारी है उसे नकारा नहीं जा सकता है। आम्बेडकर के प्रसिद्ध मूलमंत्र की शुरुआत ही 'शिक्षित करो' से होती है। इस मूलमंत्र की पालना से आज कितनी ही महिलाएं शिक्षित होकर आत्मनिर्भर बन रही है। बाबा साहेब आम्बेडकर कुल 64 विषयों में मास्टर थे। वे हिन्दी, पाली, संस्कृत, अंग्रेजी, फ्रेंच, जर्मन, मराठी, पर्शियन और गुजराती जैसे 9 भाषाओं के जानकार थे। इसके अलावा उन्होंने लगभग 21 साल तक विश्व के सभी धर्मों की तुलनात्मक रूप से पढाई की थी। डॉक्टर आम्बेडकर अकेले ऐसे भारतीय है जिनकी प्रतिमा लंदन संग्राहलय में कार्ल मार्क्स के साथ लगाई गई है। इतना ही नहीं उन्हें देश विदेश में कई प्रतिष्ठित सम्मान भी मिले है। भीमराव आंबेडकर के पास कुल 32 डिग्री थी। डॉक्टर भीमराव आम्बेडकर के निजी पुस्तकालय राजगृह में 50 हजार से भी अधिक किताबें थी। यह विश्व का सबसे बडा निजी पुस्तकालय था। जब 15 अगस्त 1947 में भारत की स्वतंत्रता के बाद कांग्रेस के नेतृत्व वाली नई सरकार बनी तो उसमें डा.आम्बेडकर को देश का पहले कानून मंत्री नियुक्त किया गया। 29 अगस्त 1947 को डा.आम्बेडकर को स्वतंत्र भारत के नए संविधान की रचना कि लिए बनी संविधान मसौदा समिति के अध्यक्ष नियुक्त किया गया। 26 नवम्बर 1949 को संविधान सभा ने उनके नेतृत्व में बने संविधान को अपना लिया। अपने काम को पूरा करने के बाद बोलते हुए डा.आम्बेडकर ने कहा मैं महसूस करता हूं कि भारत का संविधान साध्य है, लचीला है पर साथ ही यह इतना मजबूत भी है कि देश को शांति और युद्ध दोनों समय जोड़ कर रखने में सक्षम होगा। मैं कह सकता हूं कि अगर कभी कुछ गलत हुआ तो इसका कारण यह नही होगा कि हमारा संविधान खराब था बल्कि इसका उपयोग करने वाला मनुष्य ही गलत था। आम्बेडकर ने 1952 में निर्दलीय उम्मीदवार के रूप मे लोक सभा का चुनाव लड़ा पर हार गये। मार्च 1952 मे उन्हें राज्य सभा के लिए मनोनित किया गया। अपनी मृत्यु तक वो उच्च सदन के सदस्य रहे। डा.आम्बेडकर ने 14 अक्टूबर 1956 को नागपुर में अपने लाखों समर्थकों के साथ एक सार्वजनिक समारोह में एक बौद्ध भिक्षु से बौद्ध धर्म ग्रहण कर लिया। राजनीतिक मुद्दों से परेशान आम्बेडकर का स्वास्थ्य बिगड़ता चला गया। 6 दिसम्बर 1956 को आम्बेडकर की नींद में ही दिल्ली स्थित उनके घर मे मृत्यु हो गई। 7 दिसम्बर को बम्बई में चैपाटी समुद्र तट पर बौद्ध शैली मे उनका अंतिम संस्कार किया गया जिसमें उनके हजारों समर्थकों, कार्यकर्ताओं और प्रशंसकों ने भाग लिया। 1990 में बाबासाहेब डा.आम्बेडकर को भारत रत्न से सम्मानित किया गया। सरकारों की उपेक्षा के चलते बाबा साहेब को भारत रत्न सम्मान बहुत देर से प्रदान किया गया। जिसके वे सबसें पहले हकदार थे। आम्बेडकर के दिल्ली स्थित 26 अलीपुर रोड के उस घर में एक स्मारक स्थापित किया गया है जहां वो सांसद के रूप में रहते थे। देश भर में आम्बेडकर जयन्ती पर सार्वजनिक अवकाश रखा जाता है। अनेको सार्वजनिक संस्थानो का नाम उनके सम्मान में उनके नाम पर रखा गया है। आम्बेडकर का एक बड़ा चित्र भारतीय संसद भवन में लगाया गया है। हर वर्ष 14 अप्रैल व 6 दिसम्बर को मुम्बई स्थित उनके स्मारक पर हर साल काफी लोग उन्हे अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए आते हैं।

क्रांति के युगांतकारी चिंतक डॉ. अंबेडकर

(लेखक - डॉ. अशोक कुमार भार्गव/ 14 अप्रैल 2022 डॉ. अंबेडकर जयंती पर विशेष)

सामाजिक क्रान्ति के महानायक डॉ. अम्बेडकर का जीवन संघर्षों का महाकाव्य है जिसने इन्सानियत को सही अर्थों में समझा और मानवीय गरिमा के इतिहास को गौरान्वित किया। मध्य भारत महू में 14 अप्रेल, 1891 को अछूत महार जाति में जन्में डॉ. भीमराव अम्बेडकर भारतीय समाज के तलस्पर्शी अध्येता थे जिन्होंने गैर बराबरी, जातीय भेदभाव, छुआछूत, अन्याय, शोषण, दमन, घृणा, तिरस्कार, घोर अभावों और वेदना की पराकाष्ठा की भट्टी में तपकर सतह से शिखर की ऊंचाई को स्पर्श किया। उनका नाम प्रत्येक वंचित के मन में स्पन्दन पैदा करता है। महाचेता डॉ. अम्बेडकर ने निष्प्राण सामाजिक जीवन को जड़मूल से उखाड़कर लोकतांत्रिक आधार पर पुर्नगठित करने का संकल्प लेते हुए कहा कि ''मैं अछूत हूँ, यह पाप है। लोग अछूतों को पशुओं से भी गया बीता समझते हैं। वे कुत्ते बिल्ली तो छू सकते हैं परंतु अछूत को नहीं। किसने बनाई है छुआछूत की व्यवस्था? किसने बनाया है किसी को नीच, किसी को ऊंच? भगवान ने? हरगिज़ नहीं! वह ऐसा नहीं करेगा, वह सब को समान रूप से जन्म देता है। यह बुराई तो मनुष्य ने पैदा की है। मैं इसे समाप्त करके ही रहूंगा। डॉ. अम्बेडकर ने बचपन से ही मर्मांतक पीड़ा को अनुभूत किया। एक दलित बालक जिसे बचपन में गाड़ियों से बाहर फेंका गया, विद्यालयों में बहिष्कृत किया गया, अछूत होने के कारण संस्कृत के अध्ययन से वंचित रखा गया, जिसे मटके से लेकर पानी पीने की मनाही हो, नाई जिसके बाल नहीं काटता हो, जिसे एक प्रोफेसर के रूप में सरेआम बेइज्जत किया, सार्वजनिक जलाशयों, होटलों, सेलूनों, मंदिरों से दुत्कारा गया हो, बम्बई जैसे महानगर में कोई रहने के लिए किराए से मकान देने को तैयार न हो, जो वकालत आरम्भ करे तो अछूत वकील को कोई केस देने को तैयार न हो। चपरासी तक दूर से ही उनकी मेज पर फाईलें फेंका करते हों , जिसे ब्रिटिश कठपुतली ओर दैत्य की संज्ञा दी गई वही अछूत बालक भीम संस्कृत के मूल वेदों और शास्त्रों का अध्ययन कर, पश्चिम में ज्ञान के विविध क्षेत्रों में अपनी विद्वता का लोहा मनवाकर भारतीय संविधान का मुख्य निर्माता बना। दरअसल सुविधाओं का रोना उन्होंने कभी नहीं रोया वरन् अर्थाभाव की अत्यन्त विषम स्थिति में भी अपने

इरादों की दृढता ओर संकल्पों को जीतने की भीष्म तूलिका से समाज में व्याप्त अनावश्यक ऊंचाईयों को उन्मूलित कर स्वतंत्रता, समानता और बन्धुता की बुनियाद पर नए मानवीय समाज की रचना की। बड़ौदा महाराज की सहायता से डॉ. अम्बेडकर ने कोलम्बिया विश्वविद्यालय, बॉन विश्वविद्यालय, जर्मनी ग्रेज-इन तथा लन्दन स्कूल ऑफ इकनॉमिक्स से उच्च अध्ययन किया। एमए, पीएचडी, डीएससी, एमएससी, बार एट लॉ तथा डी.लिट् की उपाधियॉ प्राप्त की। वे संभवत- अपने समय के सबसे ज्यादा पढे लिखे व्यक्ति थे फिर भी उनकी सामाजिक स्थिति में कोई बदलाव नहीं हुआ। इस दौरान उन्होंने पश्चिम के श्रेष्ठतम शैक्षिक मूल्यों को आत्मसात कर यह निश्चय किया कि वे भारत लौटने पर सोये हुये दलित समाज में मानवाधिकारों के प्रति व्यापक चेतना जागृत करेंगे। इस हेतु मूक नायक, बहिष्कृत भारत, प्रबुद्ध भारत तथा जनता समाचार पत्रों का संपादन किया। वे चाहते थे कि स्वाधीनता की रोशनी में दलितों के लिए अवसरों के द्वार समान रूप से खुले रहें। उन्होंने अपनी शक्ति को राजनीतिक आजादी के बजाय सामाजिक आजादी पर केन्द्रित किया। उनके मन में ज्ञान की तीव्र लालसा और अन्याय के प्रतिकार की प्रबल आंधी थी। हिन्दू समाज से निरन्तर उपेक्षा और अपमान की सौगातें मिलने पर भी उनका देशप्रेम किसी भी बड़े देशभक्त नेता से कम नहीं था। प्रथम गोलमेज सम्मेलन में डॉ. अम्बेडकर ने दृढ़ता के साथ दलितोत्थान के प्रति अंग्रेज राज की उदासीनता को रेखांकित करते हुए दलितों के आत्मसम्मान ओर उनके मानवाधिकारों का पक्ष समर्थन किया।तब गॉधी ने उन्हें उत्कृष्ट देशभक्त कहा।डॉ. अम्बेडकर ने पलटकर गॉधीजी से कहा ' 'आप कहते हैं कि मेरा स्वदेश है किन्तु मैं फिर भी दोहराता हूं कि मैं स्वदेश से वंचित हूं । मैं इस देश को कैसे अपना देश और इस धर्म को कैसे अपना धर्म कह सकता हूं जिसमें हमारे साथ कुत्तें, बिल्लियों से भी बदतर बर्ताव किया जाता है। जहॉ हमें पीने का पानी तक नहीं मिल पाता। कोई भी स्वाभिमानी अछूत इस देश पर गर्व नहीं कर सकता।' ' वे नहीं चाहते थे कि नेतृत्व आवाम को पशुओं की तरह हांके। डॉ. अम्बेडकर ने शिक्षित बनो, संगठित रहो और संघर्ष करो का अदभुत मंत्र दिया। उन्होंने दलितों में हीन ग्रंथि दूर करने का एहसास जगाया कि वे किसी से भी कमतर नहीं है। पीपुल्स एजूकेशन सोसायटी, मिलिन्द कॉलेज और सिद्धार्थ कॉलेज की स्थापना कर दलित समाज में शिक्षा के प्रति चेतना जागृति की क्योंकि आत्मसम्मान मानवाधिकार तथा सामाजिक न्याय केवल मांगने से नहीं मिलते। इन्हेंक प्राप्त करने के लिए स्वयं को काबिल बनाना पड़ता है। जिसकी बुद्धि गुलाम है वह कभी आजाद नहीं हो सकता। शिक्षा आदमी को इन्सान बनाती है। अपने आप पर भरोसा करना सिखाती है न कि देवी-देवताओं पर। किन्तु दुर्भाग्य से उनके प्रेरक संदेश को विस्मृत कर उन्हें विलक्षण प्रतिभा से पत्थर की प्रतिमा में तब्दील किया जा रहा है। बीसवीं सदी के मानवाधिकारों के श्रेष्ठतम प्रवक्ता डॉ. अम्बेडकर सदैव सवर्णों और निम्न जातियों के मध्य समानता समरसता लाने के लिए आंदोलित रहे। अछूतोद्धार के लिए महाद चवदार तालाब, मनुस्मृति दहन तथा कालाराम मंदिर प्रवेश सत्याग्रह प्रारंभ किए थे, किन्तु सवर्णों के चवदार तालाब को शुद्ध करने के कर्मकाण्ड से वे अत्यन्त उद्विग्न हुए। अतः मंदिर प्रवेश की लड़ाई के प्रति अनास्था व्यक्त करते हुए कहा कि अस्पृश्यता हिन्दू धर्म पर नहीं हम पर कलंक है। उसे धोने का पवित्र कार्य हम करेंगे। डॉ. अम्बेडकर मूलत- महान अर्थशास्त्री थे और सामाजिक अनर्थ को मानवीय अर्थ देने की उनमें अद्भूत क्षमता थी।

सू-दोकू नवताल -2091

4			9		6	1		8
6	8							
	1	7	3	8		4		
3	4		6		7			9
5		1	8			2		7
2			5		1		8	4
		3		7	5	8	6	
							9	5
7		6	2		8			1

सू-दोकू - 2090 का हल

2	9	8	3	5	6	1	7	4
4	5	3	2	1	7	9	8	6
7	1	6	4	8	9	2	5	3
8	2	5	6	9	1	3	4	7
3	6	4	7	2	5	8	1	9
1	7	9	8	3	4	5	6	2
5	4	1	9	7	2	6	3	8
6	3	2	1	4	8	7	9	5
9	8	7	5	6	3	4	2	1

प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं। इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है। आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3 X 3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें।

फिल्म वर्ग पहेली-2091

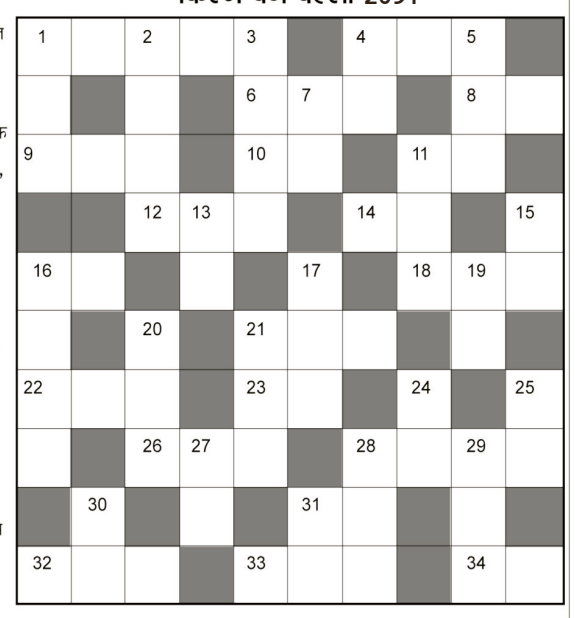

बायें से दायें:-

1. फिल्म 'लगे रहो मुन्ना भाई' में संजय दत्त के साथ नायिका कौन थी-2,3
4. बॉबी देओल, करिश्मा कपूर की 'तुम क्या जानो दिल करता' गीत वाली फिल्म-3
6. अजय देवगन, अभिषेक, बिपाशा बसु की फिल्म-3
8. मोहित अहलावत, निशा कोठारी की 'कैसे कहें तम्हें कैसे कहें' गीत वाली फिल्म-2
9. सैफअली खान,काजोल की फिल्म-3
10. फिल्म 'विक्टोरिया नं.203' में ओम पुरी के किरदार का नाम-2
11. शाहरुख, चंद्रचूड़ सिंह, ऐश्वर्या राय, प्रिया गिल की फिल्म-2
12. किरण झंजानी, गणेश यादव, प्रीति झंगियानी, ईशा कोप्पिकर, तारा शर्मा की 'मेहंदी लाया साजन मेरा' गीत वाली फिल्म-3
14. फिल्म 'घातक' में सनी देओल के किरदार का नाम-2
16. 'देखो देखो जानम हम' गीत वाली फिल्म-2
18. विनोद खन्ना, डिम्पल की फिल्म-3
21. देव आनंद, मधुबाला की फिल्म-3
22. 'सात सहेलियां खड़ी खड़ी' गीत वाली फिल्म-3
23. गोविंदा, सोनम की 'रेशम जैसा रंग देखो' गीत वाली फिल्म-2
26. बॉबी देओल, अक्षय खन्ना, उर्वशी शर्मा की फिल्म-3
28. अजय देवगन, जूही चावला की 'लाल लाल होंठों पे' गीतवाली फिल्म-4
31. मिथुन, स्वाति, मानवी गोस्वामी की फिल्म-2
32. अजय देवगन, आयशा टाकिया की फिल्म-3
33. राजेंद्र कुमार, कामिनी कदम की 'हाथों में किताब है' गीत वाली फिल्म-3
34. फिल्म 'ओ डार्लिंग ये है इंडिया' में 'मिस इंडिया' कौन बनी-2

ऊपर से नीचे:-

1. शाहिद कपूर, अमृता राव की 'मिलन अभी अधूरा है' गीत वाली फिल्म-3
2. 'कहना है जो दिल से कहो' गीत वाली शाहरुख खान, ट्विंकल खन्ना की फिल्म-4
3. राजेश खन्ना, श्रीदेवी, स्मिता पाटिल की 'इससे पहले कि याद तू आए' गीत वाली फिल्म-4
4. 'खेलो रंग हमारे संग' गीत वाली दिलीप कुमार, निम्मी की फिल्म-2
5. परदेसी अनजाने से लगते हैं' गीत वाली फिल्म-3
7. फिल्म 'ईना मीना डीका' में जूही के किरदार का नाम-2
11. सनी, अनिल कपूर, श्रीदेवी,मीनाक्षी की फिल्म-3
13. बलराज साहनी, नूतन की फिल्म-2
15. शाहरुख, प्रियंका चोपड़ा की 'ये मेरा दिल यार का दीवाना' गीत वाली फिल्म-2
16. 'धीरे धीरे इस दिल का' गीत वाली शाहिद कपूर और अमृता राव की फिल्म-2,2
17. 'तेरे बिन मैं कुछ नहीं' गीत वाली फिल्म-3
19. दिलीपकुमार, रेखा,ममता कुलकर्णी की फिल्म-2
20. शत्रुघ्न सिन्हा, शर्मिला टैगोर की फिल्म-3
21. 'मरना तेरी गली में जीना तेरी गली में' गीत वाली भारतभूषण, नूतन की फिल्म-3
24. ऋतिक रोशन, करिश्मा कपूर, नेहा की 'मैं नाचूं बिन पायल' गीत वाली फिल्म-2
25. 'ये दौलत भी ले लो ये शोहरत भी ले लो' गीत वाली कुमार गौरव, अनामिका पाल की फिल्म-2
27. अजय, जॉन, विवेक, लारा, एशा देओल की 'तौबा तौबा इश्क' गीत वाली फिल्म-2
28. 'जीवन भर ढूंढ़ा जिस को' गीत वाली नवीन निश्चल, आशा पारेख की फिल्म-3
29. 'दिल से तुझ को बेदिली है' गीतवाली फिल्म-3
30. सनी देओल, प्रीति जिंटा की फिल्म-2
31. 'बाबुल का ये घर बहना' गीत वाली मिथुन चक्रवर्ती, पद्मिनी कोल्हापुरी की फिल्म-2

फिल्म वर्ग पहेली-2090

उ	म	रा	व	जा	न		आ	गा	ज
मं		हु		न		र	ति		मा
ग	ज	ल		शी	बा		श	बा	ना
	मी		अ	न	जा	ना		रू	
स	र	ग	म		र		स	द	मा
हे		द	ला	ल		सु	र		ई
ली	ड	र		ज्जा		ख		खे	ल
	कै		का		सो		आ		व
रा	त	औ	र	दि	न		रे		
खी			वां		म	न	प	सं	द

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

सरसों के रेकॉर्ड पैदावार से कीमत में आई नरमी

नई दिल्ली । देसी बाजारों में सरसों तेल की कीमत घट रही है। वहीं घरेलू खाद्य तेलों ने अंतरराष्ट्रीय खाद्य तेलों की आवक पर दबाव बना दिया है। ऐसा सरसों की रेकॉर्ड पैदावार होने से हुआ है। मार्च में 16 लाख टन सरसों की पेराई हुई है। दिल्ली वेजिटेबल ऑयल ट्रेडर्स एसोसिएशन के मुताबिक इस साल देश में करीब 110 लाख टन सरसों की फसल हुई है। वहीं 16 लाख टन सरसों की पेराई पिछले महीने हुई, जिसमें करीब साढ़े 5 लाख टन तेल निकला। इस महीने 11 लाख टन सरसों की आवक हुई है। हालांकि, अभी मंडियों में उम्मीद के मुताबिक सरसों नहीं आ रही है। इसके पीछे बड़ी वजह यह है कि किसान अभी जरूरत के मुताबिक ही सरसों बेच रहे हैं। उन्हें लगता है कि अभी सरसों का दाम बढ़ेगा, तब ऊंचे रेट में फसल बेचेंगे। बताया जा रहा है कि देश में सरसों, सोयाबीन, पामोलीन की पर्याप्त उपलब्धता है। क्रूड पाम ऑयल इंडोनेशनिया और मलेशिया से आ रहा है। ब्राजील और अर्जेंटीना से सोयाबीन का तेल आ रहा है। अगले दो-तीन महीने बाजार में सरसों का दबाव रहेगा। हर साल आम लोगों से लेकर ट्रेडर्स भी इन दिनों में सरसों के तेल का स्टॉक करते हैं, क्योंकि तेल लंबे समय तक सही रहता है।

सीजन में किफायती दामों में तेल मिल जाता है। मलेशिया और शिकागो एक्सचेंज में तेजी के कारण सोयाबीन तेल और सीपीओ एवं पामोलीन तेल कीमतों में सुधार आया। सूत्रों ने कहा कि आयातित तेलों के मुकाबले देसी तेल कहीं सस्ते हैं। सरसों तेल, थोक भाव से 148 रुपए किलो में बैठता है। इसका खुदरा भाव अधिकतम 155-160 रुपए लीटर (एक लीटर में 912 ग्राम तेल) से अधिक नहीं बैठना चाहिए। आयातित तेलों के मुकाबले देसी तेल 12-13 रुपए किलो सस्ते हैं। ऐसे में सरकार को अधिकतम खुदरा मूल्य पर अधिक ध्यान और निगरानी रखनी चाहिए, जिससे उपभोक्ताओं को खाद्य तेल वाजिब दाम पर मिले।

टाटा रियल्टी की दो परियोजनाओं में 2,600 करोड़ निवेश करेगा सीपीपीआईबी

नई दिल्ली । कनाडा पेंशन योजना निवेश बोर्ड (सीपीपीआईबी) टाटा रियल्टी एंड इंफ्रास्ट्रक्चर की चेन्नई और गुरुग्राम स्थित दो वाणिज्यिक कार्यालय परियोजनाओं में 49 प्रतिशत हिस्सेदारी हासिल करने के लिए 2,600 करोड़ रुपए निवेश करने की योजना बना रहा है। संयुक्त उद्यम भविष्य में भूमि और तैयार संपत्ति खरीदने के लिए 2,000 करोड़ रुपए और निवेश करेगा। टाटा रियल्टी एंड इंफ्रास्ट्रक्चर के एमडी और सीईओ संजय दत्त ने कहा कि कंपनी ने वाणिज्यिक अचल संपत्ति विकसित करने के लिए सीपीपीआईबी के साथ साझेदारी की है। हम अपने वाणिज्यिक रियल एस्टेट कारोबार को बढ़ाना चाहते हैं। हमने अगले 5-7 वर्षों में 4.5 करोड़ वर्ग फुट क्षेत्र के विकास का लक्ष्य तय किया है। कंपनी ने पहले ही 75 लाख वर्ग फुट का वाणिज्यिक पोर्टफोलियो पूरा कर लिया है, जबकि 1.4 करोड़ वर्ग फुट क्षेत्र डिजाइन और विकास के विभिन्न चरणों में है। उन्होंने कहा कि हम नई जमीन खरीदने के लिए कम से कम 2,000 करोड़ रुपए का निवेश करना चाहते हैं। इसके लिए हमने कनाडा पेंशन योजना निवेश बोर्ड के साथ साझेदारी की है। संपत्ति सलाहकार एनरॉक ने सौदे में मदद की। साझेदारी के तहत सीपीपीआईबी दो परियोजनाओं में 49 प्रतिशत हिस्सेदारी हासिल करेगा।

सेबी ने बीएसई और एनएसई पर लगाया 5 करोड़ का जुर्माना

नई दिल्ली । कार्वी स्टॉक ब्रोकिंग लिमिटेड घोटाले में लापरवाही बरतने के आरोप में अबाजार नियामक सेबी ने देश के दो प्रमुख स्टॉक एक्सचेंज बीएसई और एनएसई पर जुर्माना लगाया है। सेबी ने मंगलवार देर रात इस संबंध में ऑर्डर जारी किया है। अपने आदेश में सेबी ने कहा है कि बीएसई और एनएसई ने कार्वी स्टॉक ब्रोकिंग द्वारा ग्राहकों की सिक्योरिटीज के दुरुपयोग को रोकने के लिए सही समय पर कदम नहीं उठाया। साथ ही मामले की जांच में सुस्ती बरती। सेबी ने इसी वजह से जुर्माना लगाया है। सेबी ने आदेश में बीएसई पर 3 करोड़ रुपए और एनएसई पर 2 करोड़ रुपए जुर्माना लगाने की जानकारी दी है। ब्रोकरेज कंपनी कार्वी स्टॉक ब्रोकिंग पर 2,000 करोड़ रुपए के घोटाले का आरोप है। यह देश का अब तक का सबसे बड़ा इक्विटी ब्रोकर घोटाला है। सेबी के मुताबिक कार्वी स्टॉक ब्रोकिंग ने अपने ग्राहकों के खातों में रखे शेयर बेचकर 1,096 करोड़ रुपए समूह की अपनी दूसरी कंपनी कार्वी रियल्टी में ट्रांसफर कर दिए। शेयरों की यह बिक्री अप्रैल 2016 से दिसंबर 2019 के बीच की गई। यह घोटाला जब सामने आया तो सेबी ने इसकी जांच की। सेबी ने अपनी जांच की शुरुआत में कहा था कि ब्रोकरेज कंपनी ने ग्राहकों की सिक्योरिटीज का दुरुपयोग किया। ग्राहकों की जानकारी के बिना उनकी सिक्योरिटीज का दूसरे कामों में इस्तेमाल किया और ऐसे ट्रेड में शामिल हुआ, जिसकी अनुमति उसे नहीं दी गई थी। यह घोटाला सामने आने के बाद सेबी ने तत्काल प्रभाव से नए ग्राहकों को जोड़ने से कार्वी स्टॉक ब्रोकिंग को रोक दिया था।

क्रूड 110 डॉलर हुआ तो इसका बोझ आम लोगों को भी सहना होगाः सीईए

नई दिल्ली । पेट्रोल और डीजल की कीमतों में 10 रुपए से ज्यादा की बढ़ोतरी के बाद कंपनियों ने अपने फिलहाल रोक लिए हैं। उपभोक्ताओं को मिली इस राहत के बीच मुख्य आर्थिक सलाहकार (सीईए) के बयान ने चिंताएं फिर बढ़ा दी हैं। सीईए वी अनंत नागेश्वरन ने कहा कि अगर वैश्विक बाजार में क्रूड ऑयल के दाम 110 डॉलर प्रति बैरल से ऊपर जाते हैं तो इसका बोझ सरकार, तेल विपणन कंपनियों और उपभोक्ताओं को मिलकर उठाना होगा। अभी घरेलू बाजार में तेल की कीमतें इसलिए ज्यादा हैं क्योंकि विभिन्न कारणों से वैश्विक बाजार में सप्लाई पर असर पड़ा है और कंपनियां भी बाहर से महंगा तेल मंगा रही हैं। वैश्विक सप्लाई पर संकट की वजह से ये स्थितियां पैदा हुई हैं और इस महंगाई को झेलना किसी एक के बस की बात नहीं है। इसीलिए मैं कह रहा हूं कि अगर क्रूड के दाम 110 डॉलर के ऊपर बने रहे तो इसका बोझ सरकार के साथ तेल कंपनियों और आम लोगों को भी सहना होगा। सरकार भी अपनी तरफ से राहत देने की पूरी कोशिश करेगी और जिसमें टैक्स कटौती जैसे कदम भी शामिल हैं। मुख्य आर्थिक सलाहकार ने कहा कि पेट्रोल-डीजल पर सरकार की ओर से लिया जाने वाला टैक्स दूसरी राहत योजनाओं में इस्तेमाल हो रहा है। सरकार ने प्रधानमंत्री गरीब कल्याण योजना का दायरा बढ़ाया है, ताकि देश के गरीबों-मजदूरों को मुफ्त राशन की सुविधा कुछ और समय तक दी जा सके।

संक्षिप्त समाचार

नुबिया रेड मैजिक 7 प्रो को ग्लोबली लांच, हैंडसेंट को कूल रखने दिया गया फैन

मुंबई । नुबिया रेड मैजिक 7 प्रो को ग्लोबली लांच कर दिया गया है। गेमिंग स्मार्टफोन के तौर पर लांच किया गया है।हैंडसेट में स्पैनड्रैगन 8 जनरेशन 1 प्रोसेसर 16जीबी एलपीडीडीआर 5 रैम के साथ आता है। इसका प्राइमरी कैमरा 64-मेगापिक्सल का है। डुअल नैनो सिम पर चलने वाले नुबिया रेड मैजिक 7 प्रो में एड्राइंड 12-बेस्ड बेस्ड रेड मैजिक ओएस 5.0 दिया गया है। इसमें 6.8-इंच की एमलोयड फुलएचडी प्लस स्क्रीन दी गई है। इसका रिफ्रेश रेट 120 एचजेड का है। इसमें डेडिकेटेड रेड कोर 1 गेमिंग चिप दिया गया है। इससे गेमिंग से जुड़े टास्ट जैसे ट्रिगल, साउंड, हैप्टिक फीडबैक और लाइटिंग इफैक्ट्स को हैंडल किया जाता है। हैंडसेंट को कूल रखने के लिए कंपनी ने आईसीई 9.0 कूलिंग सिस्टम टर्बो आरजीबी फैन 20,000 आरपीएम के साथ दिया गया है। इसके अलावा इसमें वेपर चैम्बर, कॉपर फॉइल और एक ग्रेफाइट थर्मल पैड दिया गया है। फोन में 64-मेगापिक्सल का प्राइमरी कैमरा दिया गया है। इसके अलावा इसमें 8-मेगापिक्सल का अल्ट्रावाइड कैमरा और एक 2-मेगापिक्सल का मैक्रो कैमरा दिया गया है।फ्रंट में सेल्फी और वीडियो कॉल के लिए 16-मेगापिक्सल का कैमरा दिया गया है। फोन में 512जीबी इनबिल्ट मेमोरी दी गई है।इसमें 5,0000 एमएएच की बैटरी 65 वॉट फास्ट चार्जिंग के साथ दी गई है।

ईडी ने शियोमी के वैश्विक उपाध्यक्ष को फेमा जांच के लिए तलब किया

नई दिल्ली । प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने चीन की मोबाइल विनिर्माता कंपनी शियोमी के वैश्विक उपाध्यक्ष मनु कुमार जैन को विदेशी मुद्रा कानून के कथित उल्लंघन से जुड़ी जांच के सिलसिले में पूछताछ के लिए तलब किया है। अधिकारियों ने बुधवार को यह जानकारी दी। सूत्रों ने बताया कि जांच एजेंसी फेमा (विदेशी मुद्रा प्रबंधन अधिनियम) के प्रावधानों के तहत कंपनी और उसके अधिकारियों की जांच कर रही है। उन्होंने बताया कि चीन की इस कंपनी की भारतीय इकाई में विदेशी मुद्रा कानून के उल्लंघन का आरोप है, यह जांच इसी सिलसिले में की जा रही है। जैन भारत में शियोमी के पूर्व प्रमुख रह चुके हैं। उनसे कहा गया है कि कंपनी से जुड़े कुछ वित्तीय दस्तावेज लेकर वह बुधवार को पेश हों या फिर ये दस्तावेज किसी आधिकारिक प्रतिनिधि के जरिए पहुंचाए जाएं। शियोमी के प्रवक्ता ने कहा कि हम कानून का पालन करते हैं। जांच में अधिकारियों के साथ पूरा सहयोग किया जा रहा है। शियोमी समेत चीन की कुछ अन्य मोबाइल विनिर्माता कंपनियों पर कर चोरी के आरोप के बाद आयकर विभाग ने पिछले वर्ष दिसंबर में उन पर छापे मारे थे।

ट्रेन टिकट बुक करने रेडरेल ऐप हुआ लांच

नई दिल्ली । ट्रेन टिकट बुक करने के लिए मेक माय ट्रिप ग्रुप की कंपनी रेडबस रेडरेल ऐप लॉन्च किया है। इस ऐप की मदद से आप ट्रेन टिकट बुक कर सकते हैं। कंपनी को उम्मीद है कि अगले 3 से 4 साल में उनकी ग्रॉस टिकट बुकिंग वैल्यू में इस नए ऐप की 10 से 15 फीसदी की हिस्सेदारी होगी। फिलहाल ऑनलाइनट ट्रेन टिकट बुकिंग के लिए लोग डायरेकट आईआरसीटीसी की वेबसाइट उपयोग करते हैं। रेडबस के सीईओ प्रकाश संगम ने कहा कि स्टैंड अलोन रेडरेल ऐप ऐसे वक्त पर लॉन्च हुआ है, जब बहुत संभावनाएं हैं। इस वक्त बस और ट्रेन दोनों ही सेगमेंट में पिछले दो साल से टिकट बुकिंग के लिए डिजिटल एडॉप्शन लगातार बढ़ रहा है। ऑनलाइन ट्रेन टिकट बुकिंग मार्केट में हर दिन पूरे देश में लगभग 10 लाख ट्रांजेक्शन होते हैं, जो एक बड़ी अपॉर्चुनिटी है। यानी कोरोना काल में टिकट बुकिंग के लिए लोगों ने डिजिटल प्लेटफॉर्म्स की ओर रुख किया है। कंपनी को बस और ट्रेन यात्री के ओवरलैप का भी फायदा मिलेगा। लगभग 65 परसेंट बस से यात्रा करने वाला लोग ट्रेन और ट्रेन यात्री बस का भी इस्तेमाल करते हैं और कंपनी इस यूजर बेस का यूज रडरेल को आगे बढ़ाने में कर सकती है। चूंकि कंपनी लंबे समय से बस टिकट बुकिंग सेगमेंट में मौजूद है, इसलिए उनके पास बस यात्रियों की एक बडी संख्या है। जिसे ट्रेन टिकट बुक करने के लिए रेडरेल पर आकर्षित किया जा सकता है। उनका मानना है कि इस सेगमेंट की कंपनी की कुल टिकट बुकिंग वैल्यू में 10 से 15 प्रतिशत की हिस्सेदारी हो। लॉन्च करने की योजना बना रहा है।

एयरटेल मुश्किल जंग से लड़कर मजबूत होकर उभरीः मित्तल

नई दिल्ली । भारती एयरटेल के चेयरमैन सुनील मित्तल ने कहा कि उनकी कंपनी ने मुश्किल जंग लड़ी और इससे मजबूत होकर उभरी है। मित्तल ने हाल ही में ऑल इंडिया मैनेजमेंट एसोसिएशन (एआईएमए) के एक कार्यक्रम को संबोधित करते हुए यह बात कही। उन्होंने कहा कि दूरसंचार उद्योग में पांच साल तक तूफान का दौर था। इस दौरान उद्योग की आमदनी घटी और कर्ज बढ़ा। ऐसे दौर में एयरटेल कठिन समय का मुकाबला करने के बाद एक मजबूत स्थिर संगठन के रूप में उभरी है। उन्होंने कहा कि पिछले चार-पांच साल में उद्योग का राजस्व नीचे आया और खर्च ऊंचा था। उन्होंने कहा कि एक भी साल ऐसा नहीं रहा है जब हमने तीन-चार अरब डॉलर खर्च नहीं किए हों। इस उद्योग ने हर साल 20,000 करोड़ रुपए से अधिक खर्च किए।

डीजीसीए ने स्पाइसजेट के 90 पायलटों के बोइंग 737 विमान उड़ाने पर लगाई रोक

नई दिल्ली । नागर विमानन महानिदेशालय (डीजीसीए) ने स्पाइसजेट के 90 पायलटों के बोइंग 737 मैक्स विमान उड़ाने पर रोक लगा दी है। डीजीसीए ने इन पायलटों को ठीक से प्रशिक्षित न पाए जाने के बाद यह फैसला लिया है। डीजीसीए के प्रमुख अरुण कुमार ने कहा कि अभी के लिए हमने इन पायटलों के मैक्स विमान उड़ाने पर रोक लगा दी है। विमान उड़ाने के लिए इन्हें दोबारा सफलतापूर्वक प्रशिक्षण हासिल करना होगा। उन्होंने यह भी कहा कि नियामक प्रशिक्षण में चूक के लिए जिम्मेदार लोगों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करेगा। गौरतलब है कि डीजीसीए ने अदीस अबाबा के पास इथियोपियन एयरलाइंस के एक 737 मैक्स विमान के दुर्घटनाग्रस्त होने के तीन दिन बाद 13 मार्च 2019 को बोइंग 737 मैक्स विमानों के परिचालन पर रोक लगा दी थी। इस हादसे में चार भारतीयों सहित कुल 157 लोग मारे गए थे। हालांकि, डीजीसीए के अमेरिका की विमान निर्माता कंपनी बोइंग द्वारा विमान में सॉफ्टवेयर संबंधी जरूरी सुधार किए जाने से संतुष्ट होने के बाद पिछले वर्ष अगस्त में विमानों पर लगाई गई रोक हटा दी गई थी। स्पाइसजेट के प्रवक्ता ने इस बात की पुष्टि की कि डीजीसीए ने स्पाइसजेट के 90 पायलटों को मैक्स विमान उड़ाने से प्रतिबंधित कर दिया है। उन्होंने कहा कि स्पाइसजेट के 650 पायलट बोइंग 737 मैक्स उड़ाने के लिए प्रशिक्षित हैं। हालांकि डीजीसीए को 90 चालकों के प्रशिक्षण विवरण पर आपत्ति है। इसके बाद डीजीसीए की सलाह के अनुरूप स्पाइसजेट ने 90 पायलटों के बोइंग 737 मैक्स विमान उड़ाने पर रोक लगा दी है। प्रवक्ता के मुताबिक यह रोक तब तक प्रभावी रहेगी, जब तक ये पायलट डीजीसीए की संतुष्टि के स्तर का प्रशिक्षण नहीं प्राप्त कर लेते। हालांकि वे बोइंग 373 के अन्य विमान उड़ाने के लिए उपलब्ध रहेंगे। उन्होंने कहा कि इस प्रतिबंध से मैक्स विमान का संचालन प्रभावित नहीं होगा। स्पाइसजेट मौजूदा समय में 11 मैक्स विमानों का संचालन करती है। इन विमानों के संचालन के लिए कंपनी को करीब 144 पायलटों की जरूरत है। मैक्स विमान उड़ाने के लिए प्रशिक्षित 650 पायलटों में से 560 पायलट अभी भी उपलब्ध हैं। यह संख्या मौजूदा आवश्यकता से कहीं ज्यादा है।

भारत के विदेश मंत्री और अमेरिकी व्यापारिक प्रतिनिधि ने द्विपक्षीय व्यापार पर चर्चा की

यूक्रेन पर रूस के हमले के वैश्विक व्यापार तथा आर्थिक मामलों पर असर के बारे में चर्चा की गई

वाशिंगटन । अमेरिका की व्यापारिक प्रतिनिधि (यूएसटीआर) राजदूत कैथरीन टाई ने अमेरिका दौरे पर आए भारत के विदेश मंत्री एस जयशंकर से मुलाकात की। उन्होंने भारत और अमेरिका के बीच द्विपक्षीय व्यापार संबंधों और वर्तमान हालात के बारे में चर्चा की। जानकारी के मुताबिक इस बैठक में अमेरिका की उप व्यापारिक प्रतिनिधि सारा बिआंची भी शामिल हुईं। इस दौरान अमेरिका और भारत के बीच व्यापारिक संबंधों में आए हालिया परिवर्तनों के बारे में बात की गई और यूक्रेन पर रूस के हमले के वैश्विक व्यापार तथा आर्थिक मामलों पर असर के बारे में चर्चा की गई। जयशंकर और टाई ने राष्ट्रपति जो बाइडन की हिंद-प्रशांत आर्थिक रूपरेखा शुरू करने संबंधी पहल के बारे में भी विचारों का आदान-प्रदान किया। इस पहल का उद्देश्य आपूर्ति श्रृंखला जैसे अहम मुद्दों पर क्षेत्रीय आर्थिक सहयोग को मजबूत करना है। यूएसटीआर की ओर से कहा गया कि दोनों नेताओं का यह मानना था कि नवंबर 2021 में फिर से शुरू किया गया अमेरिका-भारत व्यापार नीति मंच (टीपीएफ) कृषि क्षेत्र समेत अन्य क्षेत्रों में द्विपक्षीय व्यापार का विस्तार करने और अवरोधकों को कम करने के लिहाज से लाभदायक है। अमेरिका की वाणिज्य मंत्री जीना रेईमोंडो ने भी विदेश मंत्री जयशंकर से मुलाकात की और द्विपक्षीय वाणिज्यिक संबंधों के बारे में बात की। रेईमोंडो ने भारत के साथ सरोकार निरंतर बनाए रखने में रूचि दिखाई। अमेरिका के वाणिज्य मंत्रालय की ओर से जारी विज्ञप्ति के मुताबिक वाणिज्य मंत्री ने अमेरिका-भारत सीईओ फोरम के बारे में जानकारी साझा की। यह भारत और अमेरिका के लिए वाणिज्यिक संबंधों को प्रगाढ़ करने और व्यापार में अवरोधकों को दूर करने के लिए एक अहम मंच है। अमेरिका के लिए वाणिज्यिक संबंधों को प्रगाढ़ करने और व्यापार में अवरोधकों को दूर करने के लिए एक अहम मंच है। वाणिज्य मंत्रालय के आंकड़ों के मुताबिक वित्त वर्ष 2021-22 में अमेरिका ने भारत को 1.6 अरब डॉलर से अधिक के कृषि उत्पादों का निर्यात किया। 2020-21 में दोनों देशों के बीच कुल 80.5 अरब डॉलर का द्विपक्षीय कारोबार हुआ जबकि 2019-20 में 88.9 अरब डॉलर का द्विपक्षीय कारोबार हुआ था। भारत द्वारा 2020-21 में अमेरिका को 51.62 अरब डॉलर का निर्यात किया गया, 2019-20 में यह आंकड़ा 53 अरब डॉलर था। 2020-21 में भारत ने अमेरिका से 28.9 अरब डॉलर का आयात किया। 2020-21 में भारत ने अमेरिका से 28.9 अरब डॉलर का आयात किया। 2019-20 में यह आंकड़ा 35.9 अरब डॉलर था।

होंडा ने मार्च में बेचे 3,09,549 टू-व्हीलर्स

नई दिल्ली । मार्च 2022 की होंडा मोटरसाइकिल एंड स्कूटर इंडिया ने सेल्स रिपोर्ट जारी कर दी है। मार्च महीने में कंपनी ने 3,09,549 टू-व्हीलर्स की भारतीय बाजार में बिक्री की। वहीं, इस दौरान कंपनी ने कुल 11,794 दोपहिया वाहनों का निर्यात किया। कुल बिक्री की बात करें तो होंडा ने पिछले महीने कुल (घरेलू + निर्यात) 3,21,343 दोपहिया वाहनों की बिक्री की। 31 मार्च को समाप्त होने वाले वित्तीय वर्ष के लिए, कंपनी ने वित्त वर्ष 2021-22 को 37,99,680 दोपहिया वाहनों की कुल बिक्री के साथ समापन किया। इसमें 34,68,828 इकाइयों की भारतीय बाजार में बिक्री हुई। जबकि, 12 महीने की इस अवधि में कंपनी ने 3,30,852 दोपहिया वाहनों का निर्यात किया। होंडा शाइन ने भारतीय बाजार में एक नया मील का पत्थर हासिल करते हुए 1 करोड़ बिक्री का आंकड़ा पार कर लिया। बता दें कि होंडा टू-व्हीलर ने अपनी होंडा शाइन को साल 2006 में भारत में लॉन्च किया था। तब से अब तक में होंडा शाइन को 1 करोड़ भारतीय ग्राहकों ने खरीदा है। कंपनी के मुताबिक 125 सीसी सेगमेंट में यह पहली ऐसी बाइक है, जिसे 1 करोड़ ग्राहकों ने खरीदा है। यह होंडा की 125 सीसी सेगमेंट में बेस्ट सेलिंग बाइक है।बता दें कि पिछले वर्ष (एफवाय 20-21) में कंपनी 2,09,789 दोपहिया वाहनों का निर्यात किया था। ऐसे में पिछले वित्तीय वर्ष के निर्यात के मुकाबले इस वित्त वर्ष कंपनी के निर्यात में 58 फीसदी की बढ़ोतरी दर्ज की गई।बता दें कि होंडा मोटरसाइकिल एंड स्कूटर इंडिया ने भारतीय बाजार में पिछले 20 सालों में 5 करोड़ से अधिक दोपहिया वाहनों की बिक्री की है।

स्कूटर बाउंस इनफिनिटी ई1 की शुरु होगी डिलेवरी

नई दिल्ली । बीते दिनों बाउंस कंपनी ने अपने पहले इलेक्ट्रिक स्कूटर बाउंस इनफिनिटी ई1 को लॉन्च किया। अब इस महीने इस इलेक्ट्रिक स्कूटर की डिलीवरी शुरू होने वाली है। बाउंस इनफिनिटी ई1 का भारत में प्रोडक्शन शुरू हो गया है और आने वाले समय में जो लोग इस इलेक्ट्रिक स्कूटर का इंतजार कर रहे हैं, उन्हें पैसे बचाने का यह कारगर वाहन मिलने वाला है। चलिए, अब डिटेल में इस इलेक्ट्रिक स्कूटर के बारे में जानते हैं। बाउंस इनफिनिटी ई1 को पिछले साल दिसंबर में लॉन्च किया गया था। यह इलेक्ट्रिक स्कूटर शानदार लुक, लेटेस्ट फीचर्स और अच्छी बैटरी रेंज के साथ ही स्वैपेबल बैटरी ऑप्शन के साथ लॉन्च किया गया था। बाउंस इनफिनिटी को ई1 की कीमत 68,999 रुपये (एक्स शोरूम, दिल्ली) है। इनफिनिटी ई1 में बैटरी को एक सर्विस ऑप्शन के रूप में रखा गया है। बाउंस इनफिनिटी ई1 को महज 499 रुपये टोकन अमाउंट में लोगों ने बुक कराया था। बाउंस के पहले इलेक्ट्रिक स्कूटर को भारत में टीवीएस, ओला इलेक्ट्रिक, सिंपल एनर्जी के साथ ही हीरो इलेक्ट्रिक और ओकिनावा समेत अन्य पॉपुलर कंपनियों के इलेक्ट्रिक स्कूटर से मुकाबले को पेश किया गया है। बाउंस इनफिनिटी ई1 इलेक्ट्रिक स्कूटर को 5 आकर्षक कलर ऑप्शन के साथ पेश किया है। देखने में यह इलेक्ट्रिक स्कूटर काफी अच्छा है और इसकी बैटरी रेंज भी अच्छी है। बाउंस के इस इलेक्ट्रिक स्कूटर में 2 केडब्ल्यूएच का लिथियम आयन बैटरी पैक दिया गया है, जिसे फुल चार्ज करने पर 85 किलोमीटर तक की रेंज का दावा किया जा रहा है। बाउंस इनफिनिटी ई1 इलेक्ट्रिक स्कूटर की टॉप स्पीड 65 किलोमीटर प्रति घंटे की है। वहीं, फीचर्स की बात करें तो बाउंस इनफिनिटी ई1 में 12 इंच की फ्रंट और रियर व्हील्ज, डिस्क ब्रेक, कनेक्टेड टेक्नॉलजी, स्मार्टफोन कनेक्टिविटी के साथ ही रिवर्स मोड, क्रूज कंट्रोल और ड्रैग मोड जैसे स्डैंडर्ड और सेफ्टी फीचर्स हैं। ड्रैग मोड जैसे स्डैंडर्ड और सेफ्टी फीचर्स हैं।

बता दें कि भारत में आए दिन नई इलेक्ट्रिक वीइकल्स स्टार्टअप कंपनियां अपने प्रोडक्ट पेश कर रही है, जो अच्छे लुक और फीचर्स के साथ ही रेंज के मामले में भी ठीक होती है।

मदर डेयरी पश्चिम बंगाल में मूल्यवर्धित डेयरी उत्पादों की विनिर्माण क्षमता बढ़ाएगी

कोलकाता । राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड (एनडीडीबी) की पूर्ण स्वामित्व वाली अनुषंगी मदर डेयरी फ्रूट एंड वेजिटेबल प्राइवेट लिमिटेड ने कहा कि वह अगले पांच वर्षों में पश्चिम बंगाल में मूल्यवर्धित डेयरी उत्पादों की विनिर्माण क्षमता को बढ़ाकर और अधिक जिलों तक अपनी पहुंच का विस्तार करने को तैयार है। आइसक्रीम, दही और मक्खन सहित कंपनी के मूल्यवर्धित डेयरी उत्पाद वर्तमान में राज्य के 10 जिलों में उपलब्ध हैं और इसका लक्ष्य पांच साल के भीतर 20 जिलों तक पहुंचना है। मदर डेयरी फ्रूट एंड वेजिटेबल के डेयरी उत्पादों के एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा कि पूर्वी क्षेत्र हमारे मूल्यवर्धित डेयरी उत्पादों के पोर्टफोलियो के लिए सबसे तेजी से बढ़ते बाजारों में से एक है, जिसने पिछले पांच वर्षों में लगभग 35 प्रतिशत की सालाना वार्षिक वृद्धि (सीएजीआर) हासिल की है। आगे चलकर हम पूरे क्षेत्र में पोर्टफोलियो और विनिर्माण क्षमताओं के साथ-साथ अपनी ब्रांड उपस्थिति और पहुंच बढ़ाने की योजना बना रहे हैं, पोर्टफोलियो और विनिर्माण क्षमताओं के साथ-साथ अपनी ब्रांड उपस्थिति और पहुंच बढ़ाने की योजना बना रहे हैं, जो हमेशा हमारी विस्तार रणनीतियों के केन्द्र में रहेगा। वरिष्ठ अधिकारी ने कहा कि कंपनी वर्ष 2022-23 में पूर्वी बाजार से मूल्यवर्धित डेयरी उत्पाद खंड में 170-175 करोड़ रुपए का कारोबार हासिल करने और मजबूत मांग के कारण वर्ष 2026-27 तक 500 करोड़ रुपए का कारोबार हासिल करने पर नजर है।

एकदिवसीय विश्व कप की जीत में था पूरी टीम का योगदान - हरभजन

नई दिल्ली । दिग्गज स्पिनर हरभजन सिंह ने कहा है कि 2011 एकदिवसीय विश्व कप में भारतीय टीम की जीत का पूरा श्रेय तब कप्तान रहे महेन्द्र सिंह धोनी को ही नहीं दिया जा सकता। इसमें टीम के सभी सदस्यों का योगदान था। हरभजन ने कहा, अगर ऑस्ट्रेलियाई टीम विश्व कप कप जीतती है, तो सभी कहते हैं कि ऑस्ट्रेलिया ने जीता पर जब भारतीय टीम विश्व कप में जीत हासिल करती है तो सभी कहते हैं कि धोनी ने जीता। इससे क्या मतलब निकालें कि अन्य खिलाड़ी वहां लस्सी पीने गए थे। उन्होंने कहा कि तब अन्य 10 खिलाड़ी क्या करने गए थे। साथ ही कहा कि क्रिकेट एक टीम गेम और जब 7-8 खिलाड़ी अच्छा प्रदर्शन करते हैं, तभी कोई टीम जीत सकती है। गौरतलब है कि धोनी की कप्तानी में टीम इंडिया ने पहली बार 2007 में टी20 विश्व कप जीता था। फिर 2011 में उन्होंने 28 साल बाद भारत को एकदिवसीय विश्वकप का खिताब दिलाया था। गौरतलब है कि धोनी की कप्तानी में टीम इंडिया ने पहली बार 2007 में टी20 विश्व कप जीता था। फिर 2011 में उन्होंने 28 साल बाद भारत को एकदिवसीय विश्वकप का खिताब दिलाया था। भज्जी से पहले पूर्व सलामी बल्लेबाज गौतम गंभीर ने भी कहा था कि 2011 का विश्व कप पूरी टीम ने जीता था। 2011 एकदिवसीय विश्व कप के फाइनल में धोनी ने 79 गेंद पर नाबाद 91 रन बनाए थे और वह प्लेयर ऑफ द मैच रहे थे।

बोल्ट और सोफी को दिया जाएगा न्यूजीलैंड के सर्वश्रेष्ठ टी20 अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी का पुरस्कार

वेलिंगटन ।

न्यूजीलैंड की पुरुष क्रिकेट टीम के तेज गेंदबाज ट्रेंट बोल्ट और महिला टीम की कप्तान सोफी डिवाइन को शानदार प्रदर्शन के लिए न्यूजीलैंड के साल के सर्वश्रेष्ठ टी20 अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ियों का पुरस्कार मिला है। ये पुरस्कार तीन दिनों तक जारी एक ऑनलाइन समारोह में दिए जाएंगे। टी20 विश्व कप में शानदार प्रदर्शन के लिए बोल्ट को यह पुरस्कार मिला है । न्यूजीलैंड की टीम टी20 विश्व कप के फाइनल में पहुंची थी और बोल्ट ने अपनी टीम के फाइनल तक के सफर में अहम भूमिका निभाते हुए टूर्नामेंट में सबसे ज्यादा 13 विकेट लिए थे। बोल्ट के अलावा इन पुरस्कारों की दौड़ में तेज गेंदबाज टिम साउथी, डेवोन कॉनवे और स्पिनर ईश सोढ़ी भी शामिल थे। बोल्ट ने कहा कि टी20 एक ऐसा प्रारूप है जिसका मैं काफी आनंद उठाता हूं और बेहतर गेंदबाज बनने के लिए लगातार अपने खेल से तालमेल बैठाने का प्रयास करता हूं। यह पुरस्कार जीतना विशेष है। वहीं दूसरी ओर सोफी ने लगातार दूसरे साल सर्वश्रेष्ठ महिला टी20 अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी का पुरस्कार जीता। उन्होंने चार मैच में 29.50 की औसत से 118 रन बनाए और इस दौरान उनका स्ट्राइक रेट 113.46 रहा। उनका शीर्ष स्कोर होव में इंग्लैंड के खिलाफ 50 रन रहा। उन्होंने चार मैच में 29.50 की औसत से 118 रन बनाए और इस दौरान उनका स्ट्राइक रेट 113.46 रहा। उनका शीर्ष स्कोर होव में इंग्लैंड के खिलाफ 50 रन रहा।

सर्वश्रेष्ठ प्रशंसक क्षण क्राइस्टचर्च टेस्ट में बांग्लादेश के खिलाफ अंतिम टेस्ट के साथ संन्यास ले रहे रोस टेलर के अंतिम विकेट को चुना गया। इसके अलावा मेली केर और माइकल ब्रेसवेल को वेलिंगटन की ओर से शानदार प्रदर्शन के लिए अपने अपने वर्ग में 'सुपर स्मैश प्लेयर आफ द ईयर' चुना गया। पुरस्कारों के दूसरे दिन प्रथम श्रेणी और घरेलू बल्लेबाजी और गेंदबाजी कप के अलावा साल के सर्वश्रेष्ठ पुरुष और महिला एकदिवसीय अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी चुने जाएंगे।

म्यूनिख को हराकर चैम्पियंस लीग फुटबॉल के सेमीफाइनल में पहुंची विलारियाल

म्यूनिख ।

विलारियाल टीम चैम्पियंस लीग फुटबॉल के सेमीफाइनल में पहुंच गयी है। विलारियाल ने क्वार्टर फाइनल में बायर्न म्यूनिख को हराकर अंतिम चार में जगह बनायी। विलारियाल टीम साल 2006 के बाद पहली बार चैम्पियंस लीग के सेमीफाइनल में पहुंची है। विलारियाल ने क्वार्टरफाइनल के दूसरे मैच में मंगलवार को 1-1 से ड्रा की सहायता से कुल 2-1 के स्कोर के साथ ही अंतिम चार में जगह बनायी है। क्वार्टरफाइनल के पहले मैच में उसे म्यूनिख को अपने घरेलू मैदान पर 1-0 से हराया था। इस मैच में विलारियाल की ओर से

मैच समाप्त होने के दो मिनट पहले 88वें मिनट में सैमुअल चुकवुएजे ने एक गोल दागकर अपनी टीम को 1-1 की बराबरी पर ला दिया था। वहीं इससे पहले म्यूनिख ने 52वें मिनट में रोबर्ट लेवांडोवस्की के गोल से बढ़त बनायी थी पर इसके बाद उसके खिलाड़ी अवसरों का लाभ नहीं उठा पाये। विलारियाल के स्ट्राइकर गेरार्ड मोरेनो ने कहा, ''आज बायर्न ने गलती की जिसका हमने पूरा लाभ उठाया है।

इस टीम ने शानदार प्रदर्शन किया है।'' विलारियाल ने यूरोपा लीग में जीत से चैम्पियंस लीग के लिये क्वालीफाई किया था जबकि स्पेनिश लीग में वह सातवें स्थान पर रही है। वहीं बायर्न म्यूनिख ने 2020 में यूरोपीय कप जीता था जबकि बुंदेसलीगा में वह शीर्ष पर रही है।

आईपीएल छोड़कर अपने देश का समर्थन करें श्रीलंकाई क्रिकेटर : रणतुंगा

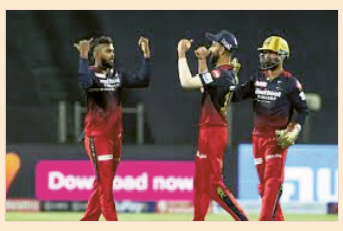

कोलंबो । भयंकर आर्थिक संकट के कारण दिवालिया हुए देश श्रीलंका के क्रिकेटर अभी भारत में आईपीएल में व्यस्त हैं। वहीं पूर्व श्रीलंकाई क्रिकेटर और केन्द्रीय मंत्री रहे अर्जुन रणतुंगा ने आईपीएल खेल रहे सभी श्रीलंकाई खिलाड़ियों से कहा कि वे आगे आएं और उन्हें इस कठिन समय में अपने देश के समर्थन में उतरें। उन्होंने कहा कि कुछ क्रिकेटर ऐसे हैं जो आईपीएल में शानदार खेल रहे हैं और अपने देश में बारे में बात नहीं करते। इसके साथ ही कहा कि ये क्रिकेटर किसी भी मामले पर बोलने से डरते हैं। ये क्रिकेटर मंत्रालय के तहत आने वाले क्रिकेट बोर्ड के लिए भी काम कर रहे हैं और ऐसे में अपनी नौकरी बचाने का प्रयास कर रहे हैं पर अब उन्हे देश हित में आगे आना होगा के योंकि कुछ युवा क्रिकेटर आए हैं और विरोध के समर्थन में बयान भी दिया। उन्होंने साथ ही कहा कि जब कुछ गलत हो रहा है तो आपमें अपने कारोबार के बारे में सोचे बिना उसके खिलाफ बोलने के लिए आगे आने की हिम्मत होनी चाहिए। रणतुंगा ने कहा कि लोग उनसे पूछते हैं कि मैं विरोध प्रदर्शन में के यों नहीं हूं। बात सिर्फ यही है कि मैं पिछले 19 साल से राजनीति में हूं और यह कोई राजनीतिक मुद्दा नहीं है। अभी तक किसी भी राजनीतिक दल या राजनेता ने विरोध प्रदर्शन में हिस्सा नहीं लिया है और यही इस देश के लोगों की सबसे बड़ी ताकत है।

दिल्ली कैपिटल्स से जुड़ते ही बदली कुलदीप की तकदीर , पर्पल कैप की दौड़ में सबसे आगे

पोंटिंग ने नीलामी में खरीदने का कारण बताया

मुम्बई ।

इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) के 15 वें सत्र में दिल्ली कैपिटल्स की ओर से खेलते हुए चाइनामैन गेंदबाज कुलदीप यादव ने शानदार प्रदर्शन किया है। कुलदीप अब तक खेले गये 4 मैचों में कुल 10 विकेट लेकर पर्पल कैप की दौड़ में सबसे आगे हैं। इस प्रदर्शन से कुलदीप के करियर को नई उर्जा मिली है क्योंकि पिछले कुछ समय में उनका प्रदर्शन अच्छा नहीं रहा है। इसी कारण कोलकाता नाइट राइडर्स (केकेआर) की ओर से उन्हें खेलने के काफी कम अवसर मिले थे। यहां तक कि केकेआर ने उन्हें आईपीएल 2022 की मेगा नीलामी से पहले ही रिलीज कर दिया था। इस बार मेगा नीलामी में कुलदीप को कैपिटल्स ने खरीदा और इस टीम के साथ जुड़ते ही कुलदीप की गेंदबाजी बेहतर हो गयी। टीम के मुख्य कोच रिकी पोंटिंग ने नीलामी में कुलदीप को खरीदने का कारण भी बताया है।

पोंटिंग ने कहा, कुलदीप यादव को केकेआर के साथ दो साल तक बहुत कम अवसर मिले। वहीं हमें पता था कि अगर इस गेंदबाज में भरोसा रखा जाये तो वह वह बेहतर हो सकता है। इसी कारण हम छोटे-छोटे हैंडब्रेक अनलॉक कर रहे, जो खिलाड़ियों को खुलकर खेलने से रोक रहे हैं। कुलदीप के मामले में भी ऐसा ही है। उनके जैसे स्तर के गेंदबाज के लिए केकेआर में रहना और नहीं खेलना समझ से परे है। नीलामी में उन्हें जोड़ने का एक कारण यह भी था कि हम उनमें आत्मविश्वास जगा कर एक बेहतर गेंदबाज बनाना चाहते थे।

पोंटिंग के अनुसार कुलदीप जैसे गेंदबाजों के साथ आपको धैर्य रखना होता है क्योंकि टी20 क्रिकेट में स्पिन गेंदबाजों के लिए हर समय एक समान नहीं रहता है। कुलदीप जैसा भी प्रदर्शन करें हमारा व्यवहार उनके प्रति बदलेगा नहीं। कुलदीप ने अब तक खेले 4 मैच में 15.4 ओवर गेंदबाजी करते हुए 10 विकेट लिए हैं। उन्होंने कोलकाता नाइट राइडर्स के खिलाफ पिछले मैच में 35 रन देकर 4 विकेट लिए। यह आईपीए में उनका साल 2022 में उनका अब तक का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन है.

संक्षिप्त समाचार

युवराज से तुलना होना सम्मान की बात : शिवम

मुंबई । रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु (आरसीबी) के खिलाफ 95 रनों की पारी खेलकर अपनी टीम को जीत दिलाने वाले चेन्नई सुपर किंग्स (सीएसके) के बल्लेबाज शिवम दुबे छाये हुए हैं। इसका कारण शिवम का पूर्व ऑलराउंडर युवराज सिंह की तरह बल्लेबाजी करना माना जा रहा है। शिवम भी इससे उत्साहित हैं। इस क्रिकेटर ने कहा कि युवराज सिंह से तुलना होना सम्मान की बात है। इससे वह गर्व का अनुभव कर रहे हैं। शिवम ने उनके बल्लेबाजी स्टाइल की तुलना युवराज से किए जाने पर कहा, निश्चित रूप से, युवराज जैसे व्यक्ति हमेशा बाएं हाथ के बल्लेबाज के लिए एक आदर्श होते हैं। कई लोगों ने मुझसे कहा है कि मैं उनकी तरह खेलता हूं। यह मेरे लिए बेहद सम्मान की बात है। शिवम ने बेंगलुरु के खिलाफ 46 गेंदों में 5 चौके और 8 छक्के की बदौलत 95 रन बनाए थे। उन्होंने रॉबिन उथप्पा के साथ मिलकर 165 रनों की साझेदारी की थी। शिवम ने कहा, हम पहली जीत की तलाश में थे और मैं वास्तव में खुश हूं कि मैंने अपनी टीम के लिए योगदान दिया।

महिला पेशेवर गोल्फ की संस्थापक रहीं शर्ली का निधन

डेटोना बीच । महिला पेशेवर गोल्फ टूर (एलपीजीए) के संस्थापक सदस्यों में से एक शर्ली स्पोर्क का निधन हो गया है। शर्ली 94 वर्ष की थी। एलपीजीए ने कहा कि उनका कैलिफोर्निया के पाम स्प्रिंग्स में निधन हुआ जहां वह रहा करती थीं। वह अपने पेशवर करियर में कभी एलपीजीए टूर पर खिताब नहीं जीत सकी थीं हालांकि उनका सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन 1962 एलपीजीए चैम्पियनशिप में रहा था। एलपीजी के अनुसार दो सप्ताह पहले ही शर्ली को पता चला था कि उन्हें 'एलपीजीए हॉल ऑफ फेम' में शामिल किया जायेगा।

दीपक चाहर की पीठ में भी लगी चोट , आईपीएल से बाहर हुए

मुंबई । चेन्नई सुपर किंग्स (सीएसके) टीम के ऑलराउंडर दीपक चाहर इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) से बाहर हो गये हैं। चाहर को बेंगलुरु में राष्ट्रीय क्रिकेट अकादमी में रिहैबिलिटेशन के दौरान दोबारा चोट लग गयी। चाहर फरवरी में पैर में लगी चोट से उबरने के लिए एनसीए गए थे, मगर वहां उनकी पीठ में भी चोट लग गई। आईपीएल 2022 की मेगा नीलामी में सीएसके ने चाहर को 14 करोड़ रुपये में खरीदा था। सीएसके को उम्मीद है कि वह अप्रैल के दूसरे सप्ताह से पहले फिट हो जाएंगे पर उनकी चोट की गंभीरता को देखते हुए इसकी संभावना नहीं है। चाहर को एनसीए में रिहैबिलिटेशन के दौरान चोट लगी। वो एक महीने से अधिक समय से एनसीए में हैं, जहां वह फरवरी में वेस्टइंडीज के खिलाफ टी20 सीरीज के दौरान पैर में लगी चोट से उबरने के लिए गए थे। चाहर को फरवरी में वेस्टइंडीज के खिलाफ तीसरे टी20 के दौरान पैर में चोट लगी थी और इस कारण वह अपना स्पैल पूरा किए बगैर मैदान से बाहर हो गये थे।

आजम आईसीसी टी-20 बल्लेबाजी रैंकिंग में शीर्ष पर कायम

दुबई ।

पाकिस्तान क्रिकेट टीम के कप्तान बाबर आजम अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) की टी-20 बल्लेबाजी रैंकिंग में शीर्ष पर बने हुए हैं। वहीं पिछले साल के आईसीसी 'पुरुष टी-20 प्लेयर ऑफ द ईयर रहे पाक विकेटकीपर बल्लेबाज मोहम्मद रिजवान एक पायदान नीचे आकर तीसरे नंबर पर फिसल गये हैं। वहीं पाक के ही तेज गेंदबाज शाहीन आफरीदी टी-20 गेंदबाजी रैंकिंग में शीर्ष 10 में पहुंच गये हैं। शाहीन 634 रेटिंग अंकों के साथ 10वें स्थान पर पहुंच गए हैं। शाहीन ने हाल ही में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ एकमात्र टी-20 मैच में 21 रन देकर दो विकेट लिए थे। वहीं इसी बीच ऑस्ट्रेलियाई तेज गेंदबाज जोश हेजलवुड एक स्थान नीचे खिसक कर तीसरें नंबर पर आ गए हैं। हेजलवुड पाक के खिलाफ हुए एकमात्र टी20 मैच से बाहर थे। इंग्लैंड के ही लेग स्पिनर आदिल राशिद लाभ के साथ ही दूसरे नंबर पर आ गए हैं। वहीं नेपाल के दीपेंद्र सिंह ऐरी पीएनजी और मलेशिया के खिलाफ त्रिकोणीय श्रृंखला में शानदार ऑलराउंड प्रदर्शन के बाद बल्लेबाजी, गेंदबाजी और ऑलराउंडर रैंकिंग में ऊपर आये हैं। सीरीज के फाइनल में नाबाद 54 रन और 18 रन पर चार विकेट लेने वाले दीपेंद्र ने बल्लेबाजी रैंकिंग में 13 स्थानों की छलांग लगायी है। इसी के साथ ही वह 38वें, गेंदबाजी रैंकिंग में 47 स्थानों के लाभ से 135वें और ऑलराउंडर रैंकिंग में 10 स्थानों की छलांग से 10वें नंबर पर पहुंच गए हैं। ऑलराउंडर रैंकिंग में ही नामीबिया के जेजे स्मिट को छह स्थानों का फायदा हुआ है और वह नंबर चार पर पहुंच गए हैं। उन्होंने युगांडा के खिलाफ हाल ही में समाप्त हुई सीरीज में 35 गेंदों पर 71 रन की आक्रामक पारी खेलने के अलावा हैट्रिक समेत 10 रन पर छह विकेट लिए थे। दूसरी ओर टेस्ट रैंकिंग में दक्षिण अफ्रीकी स्पिनर केशव महाराज को लाभ हुआ है। बंगलादेश के खिलाफ हाल ही में संपन्न दो मैचों की टेस्ट सीरीज में बल्ले और गेंद के साथ महत्वपूर्ण योगदान देने के कारण केशव गेंदबाजी रैंकिंग में सात स्थानों की छलांग लगाकर 21वें और ऑलराउंडर रैंकिंग में 13वें स्थान पर आ गए हैं। वहीं दक्षिण अफ्रीका के ही साइमन हार्मर भी 13 विकेट लेकर गेंदबाजी रैंकिंग में 26 नंबर पर पहुंच गए हैं।

जिन पुराने खिलाड़ियों को टीम ने नहीं किया रीटने, नई टीम में जाकर ढ़ह रहे कहर

मुंबई । आईपीएल 2022 में जहां कुछ अनकैप्ड खिलाड़ियों ने अपने प्रदर्शन के दम पर फैंस और दिग्गजों का दिल जीता है। वहीं, कई अनुभवी खिलाड़ी भी अपनी चमक बिखेरने में सफल रहे, जिन्हें इस साल मेगा ऑक्शन से पहले फ्रेंचाइजी ने रीटेन नहीं किया। या यूं कहें कि इतने सालों का पुराना नाता तोड़ लिया। इसके बाद इन्हें नीलामी में उतरना पड़ा और इस बार नई टीमों की तरफ से खेलते हुए धमाल मचा रहे। लिस्ट में युजवेंद्र चहल, कुलदीप यादव, राहुल चाहर और उमेश यादव जैसे खिलाड़ी शामिल हैं। युजवेंद्र चहल को आईपीएल 2022 के मेगा ऑक्शन से पहले रॉयल चैलेंजर्स बैंगलोर ने रीटेन नहीं किया था।ऐसी खबरें भी आई कि सैलरी को लेकर उनकी टीम से अनबन हुई थी। हालांकि, चहल ने इस बारे में कहा कि उनसे टीम ने रीटेन के बारे में पूछा तक नहीं था। जबकि वहां 2014 से 2021 तक यानी पूरे 8 साल इस टीम के साथ रहे और इन सालों में टीम के लिए सबसे अधिक 139 विकेट हासिल किए। इतने चमकदार प्रदर्शन के बावजूद एक झटके में आरसीबी का उनके साथ 8 साल पुराना रिश्ता टूट गया। इसके बाद इस लेग स्पिनर को राजस्थान रॉयल्स ने मेगा ऑक्शन में 6.5 करोड़ रुपये में खरीदा और इस सीजन में चहल ने अब तक राजस्थान के लिए सबसे अधिक विकेट झटके हैं। उन्होंने 4 मैच में 7 विकेट हासिल किए हैं, और सबसे अधिक विकेट लेने वाले टॉप-5 गेंदबाजों में शामिल हैं। कुलदीप यादव चाइनामैन गेंदबाज का आईपीएल 2022 में अब तक प्रदर्शन शानदार रहा है और वहां पर्पल कैप के मजबूत दावेदार बनकर उभरे हैं। कुलदीप पिछले 4 साल से कोलकाता नाइट राइडर्स के साथ थे। लेकिन इस टीम के साथ पिछले कुछ सीजन उनके अच्छे नहीं बीते। वहां टीम का हिस्सा रहे, लेकिन मैच खेलने के मौके कम ही मिले। आईपीएल 2021 में तब कुलदीप एक भी मैच में प्लेइंग-इलेवन का हिस्सा नहीं बने। इस बार मेगा ऑक्शन से पहले कुलदीप को केकेआर ने रीटेन नहीं किया। फरवरी में हुई नीलामी में उन्हें नई फ्रेंचाइजी ने खरीदा। वह दिल्ली कैपिटल्स का हिस्सा बने और नई टीम से जुड़ते ही उनका खेल बदल गया। इसका सबूत है आईपीएल 2022 में उनके गेंदबाजी आंकड़े। कुलदीप अब तक 4 मैच में 10 विकेट ले चुके हैं। कुलदीप न कोलकाता नाइट राइडर्स के खिलाफ 4 विकेट झटककर टीम से बाहर करने का हिसाब चुकता कर लिया।

नये गेंदबाज मुकेश का हौंसला बढ़ाते नजर आये धोनी

मुंबई । चेन्नई सुपर किंग्स (सीएसके) का आंखिरकार इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) के 15 वें सत्र में खाता खुल गया है। सीएसके ने रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु (आरसीबी) को 23 रनों से हराकर इस टूर्नामेंट में पहली जीत दर्ज की। इस मैच में सीएसके ने पहले बल्लेबाजी करते हुए आरसीबी को जीत के लिए 217 रनों का लक्ष्य दिया था पर आरसीबी ने नौ विकेट पर 193 रन ही बनाये। सीएसके की ओर से इसी सत्र में आईपीएल पदार्पण करने वाले नये बाएं हाथ के तेज गेंदबाज मुकेश चौधरी का प्रदर्शन इस मैच में अच्छा नहीं रहा। मुकेश ने गेंदबाजी में काफी रन दिये और को कैच भी छोड़ दिये। इससे वह बेहद निराश नजर आये। ऐसी हालत में अनुभवी विकेटकीपर बल्लेबाज महेन्द्र सिंह धोनी ने मुकेश का हौंसला बढ़ाया। सोशल मीडिया पर इसकी तस्वीरों के साथ ही एक वीडियो भी वायरल हुआ है। गेंदबाजी की बात करें तो मुकेश चौधरी ने तीन ओवर में 40 रन दिए हैं। इस गेंदबाज के एक ही ओवर में 23 रन गये। राहत की बात केवल इतनी रही कि मुकेश को एक विकेट मिल गया। मुकेश ने पूर्व कप्तान विराट कोहली का सबसे अहम विकेट लिया, जो उनके लिए विशेष क्षण था।

मप्र राज्य रैंकिंग टेनिस टूर्नामेंट मनवर्धन, माधव, कुश, राघव क्वाटर फायनल में

इन्दौर ।

म.प्र. टेनिस संघ के तत्वावधान में इन्दौर टेनिस क्लब में आयोजित आई.पी.एस. प्रथम मध्य प्रदेश राज्य स्तरीय रैंकिंग टेनिस टूर्नामेन्ट में इन्दौर के खिलाड़ी मनवर्धन राखेचा, माधव पाटीदार, रेहान मलिक, राघव जयसिंघानी, कुश भसीन ने अपने-अपने वर्गों के मुकाबले जीतकर क्वाटर फाइनल में प्रवेश कर लिया है। मंगलवार को खेले गए पुरूष एकल प्री-क्वाटरफाइनल में माधव पाटीदार (इन्दौर) ने विराट चौधरी (इन्दौर) को 6-0, 6-2 से, प्रत्यक्ष सोनी (खण्डवा) ने रेहान मलिक (इन्दौर) को 6-0, 7-5 से, राघव जयसिंघानी (इन्दौर) ने जयेश करणावत (इन्दौर) को 6-1, 6-1 से शिकस्त दी। वहीं अंडर-18 बालक एकल प्री-क्वाटरफाइनल में मनवर्धन राखेचा (इन्दौर) ने शिखर सिंह (इन्दौर) को 6-3, 6-0 से, कुश भसीन (इन्दौर) ने कनिष्क खथुरिया (इन्दौर) को 6-3, 5-7, 10-6 से तथा अर्भा अंश परवाल (इन्दौर) ने आदित्य वर्मा (भोपाल) को 6-1, 6-3 से हराया। अंडर-14 बालक एकल प्री-क्वाटरफाइनल में खुशवंत जेफरी (भोपाल) ने जयदेव शर्मा (ग्वालियर) को 9-1 से, पुष्पेन्द्र जाट (विर्दी शा) ने आदित्य वर्मा (भोपाल) को 9-7 से, मोहम्मद आसिम (भोपाल) ने गणेश स्वामी (महु) को 9-3 से शिकस्त दी।

अलिफीया दूसरे दौर में

अंडर-14 बालिका एकल के प्रथम दौर के मुकाबलों में अलिफीया रूबी (इन्दौर) ने अनवी पालोद (इन्दौर) को 8-0 से शिकस्त दी।

वहीं काशवी ठुकराल (विदिशा) ने गीतिका वोहरा (इन्दौर) को 8-2 से, संस्कृति स्वामी (रतलाम) ने सामिया वाधवानी (इन्दौर) को 8-0 से, अविशी शर्मा (भोपाल) ने अवनि जाट (इन्दौर) को 8-0 से हराया।।

दक्षिण कोरिया में योनेक्स कोरिया मास्टर्स में खेलते हुए वांग यिलयू और हुआंग डोनपिंग।

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

भारत रत्न बाबासाहेब

भारत के संविधान निर्माता.... दलितों व पिछड़ो के मसीहा... समाज सुधार के प्रेरक...

डॉ. भीमराव रामजी आंबेडकर (14 अप्रैल , 1891 – 6 दिसंबर, 1956) एक भारतीय विधिवेत्ता थे। वे एक बहुजन राजनीतिक नेता, और एक बौद्ध पुनरुत्थानवादी होने के साथ साथ, भारतीय संविधान के मुख्य वास्तुकार भी थे। उन्हें बाबासाहेब के नाम से भी जाना जाता है। इनका जन्म एक गरीब अस्पृश्य परिवार मे हुआ था। बाबासाहेब आंबेडकर ने अपना सारा जीवन हिंदू धर्म की चतुवर्ण प्रणाली, और भारतीय समाज में सर्वव्यापित जाति व्यवस्था के विरुद्ध संघर्ष में बिता दिया। हिंदू धर्म में मानव समाज को चार वर्णों में वर्गीकृत किया है। उन्हें बौद्ध महाशक्तियों के दलित आंदोलन को प्रारंभ करने का श्रेय भी जाता है। बाबासाहेब अम्बेडकर को भारत रत्न से भी सम्मानित किया गया है, जो भारत का सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार है।

कई सामाजिक और वित्तीय बाधाएं पार कर, आंबेडकर उन कुछ पहले अछूतों मे से एक बन गये जिन्होने भारत में कॉलेज की शिक्षा प्राप्त की। आंबेडकर ने कानून की उपाधि प्राप्त करने के साथ ही विधि, अर्थशास्त्र व राजनीतिक विज्ञान में अपने अध्ययन और अनुसंधान के कारण कोलंबिया विश्वविद्यालय और लंदन स्कूल ऑफ इकॉनॉमिक्स से कई डॉक्टरेट डिग्रियां भी अर्जित कीं। आंबेडकर वापस अपने देश एक प्रसिद्ध विद्वान के रूप में लौट आए और इसके बाद कुछ साल तक उन्होंने वकालत का अभ्यास किया। इसके बाद उन्होंने कुछ पत्रिकाओं का प्रकाशन किया, जिनके द्वारा उन्होंने भारतीय अस्पृश्यों के राजनैतिक अधिकारों और सामाजिक स्वतंत्रता की वकालत की। डॉ. आंबेडकर को भारतीय बौद्ध भिक्कू ने बोधिसत्व की उपाधि प्रदान की है।

प्रारंभिक जीवन

भीमराव रामजी आंबेडकर का जन्म ब्रिटिशों द्वारा केन्द्रीय प्रांत (अब मध्य प्रदेश में) में स्थापित नगर व सैन्य छावनी मऊ में हुआ था।[1] वे रामजी मालोजी सकपाल और भीमाबाई मुरबादकर की 14 वीं व अंतिम संतान थे।[2] उनका परिवार मराठी था और वो अंबावडे नगर जो आधुनिक महाराष्ट्र के रत्नागिरी जिले मे है, से संबंधित था। वे हिंदू महार जाति से संबंध रखते थे, जो अछूत कहे जाते थे और उनके साथ सामाजिक और आर्थिक रूप से गहरा भेदभाव किया जाता था। अम्बेडकर के पूर्वज लंबे समय तक ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की सेना में कार्यरत थे, और उनके पिता,भारतीय सेना की मऊ छावनी में सेवा में थे और यहां काम करते हुये वो सूबेदार के पद तक पहुँचे थे। उन्होंने मराठी और अंग्रेजी में औपचारिक शिक्षा की डिग्री प्राप्त की थी। उन्होने अपने बच्चों को स्कूल में पढने और कड़ी मेहनत करने के लिये हमेशा प्रोत्साहित किया।

कबीर पंथ से संबंधित इस परिवार में, रामजी सकपाल, अपने बच्चों को हिंदू ग्रंथों को पढ़ने के लिए, विशेष रूप से महाभारत और रामायण प्रोत्साहित किया करते थे। उन्होने सेना मे अपनी हैसियत का उपयोग अपने बच्चों को सरकारी स्कूल से शिक्षा दिलाने मे किया, क्योंकि अपनी जाति के कारण उन्हें इसके लिये सामाजिक प्रतिरोध का सामना करना पड़ रहा था। स्कूली पढ़ाई में सक्षम होने के बावजूद आंबेडकर और अन्य अस्पृश्य बच्चों को विद्यालय मे अलग बिठाया जाता था और अध्यापकों द्वारा न तो ध्यान ही दिया जाता था, न ही कोई सहायता दी जाती थी। उनको कक्षा के अन्दर बैठने की अनुमति नहीं थी, साथ ही प्यास लगने प ?र कोई ऊँची जाति का व्यक्ति ऊँचाई से पानी उनके हाथों पर पानी डालता था, क्योंकि उनको न तो पानी, न ही पानी के पात्र को स्पर्श करने की अनुमति थी। लोगों के मुताबिक ऐसा करने से पात्र और पानी दोनों अपवित्र हो जाते थे। आमतौर पर यह काम स्कूल के चपरासी द्वारा किया जाता था जिसकी अनुपस्थिति में बालक आंबेडकर को बिना पानी के ही रहना पड़ता था। 1894 मे रामजी सकपाल सेवानिवृत्त हो जाने के बाद सपरिवार सतारा चले गए और इसके दो साल बाद, अम्बेडकर की मां की मृत्यु हो गई। बच्चों की देखभाल उनकी चाची ने कठिन परिस्थितियों में रहते हुये की। रामजी सकपाल के केवल तीन बेटे, बलराम, आनंदराव और भीमराव और दो बेटियाँ मंजुला और तुलासा ही इन कठिन हालातों मे जीवित बच पाये।

अपने भाइयों और बहनों मे केवल अम्बेडकर ही स्कूल की परीक्षा में सफल हुए और इसके बाद बड़े स्कूल मे जाने में सफल हुये। अपने एक देशस्त ब्राह्मण शिक्षक महादेव अम्बेडकर जो उनसे विशेष स्नेह रखते थे के कहने पर अम्बेडकर ने अपने नाम से सकपाल हटाकर अम्बेडकर जोड़ लिया जो उनके गांव के नाम अंबावडे पर आधारित था।

रामजी सकपाल ने 1898 मे पुनर्विवाह कर लिया और परिवार के साथ मुंबई (तब बंबई)चले आये। यहाँ अम्बेडकर एल्फिंस्टोन रोड पर स्थित गवर्न्मेंट हाई स्कूल के पहले अछूत छात्र बने।[3] पढ़ाई में अपने उत्कृष्ट प्रदर्शन के बावजूद, अम्बेडकर लगातार अपने विरुद्ध हो रहे इस अलगाव और, भेदभाव से व्यथित रहे। 1907 में मैट्रिक परीक्षा पास करने के बाद अम्बेडकर ने बंबई विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया और इस तरह वो भारत में कॉलेज में प्रवेश लेने वाले पहले अस्पृश्य बन गये। उनकी इस सफलता से उनके पूरे समाज मे एक खुशी की लहर दौड़ गयी , और बाद में एक सार्वजनिक समारोह उनका सम्मान किया गया इसी समारोह में उनके एक शिक्षक कृषणजी अर्जुन केलूसकर ने उन्हें महात्मा बुद्ध की जीवनी भेंट की, श्री केलूसकर, एक मराठा जाति के विद्वान थे। अम्बेडकर की सगाई एक साल पहले हिंदू रीति के अनुसार दापोली की, एक नौ वर्षीय लड़की, रमाबाई से तय की गयी थी।[3] 1908 में, उन्होंने एलिफिंस्टोन कॉलेज में प्रवेश लिया और बड़ौदा के गायकवाड़ शासक सहयाजी राव तृतीय से संयुक्त राज्य अमेरिका मे उच्च अध्धयन के लिये एक पच्चीस रुपये प्रति माह का वजीफा़ प्राप्त किया। 1912 में उन्होंने राजनीतिक विज्ञान और अर्थशास्त्र में अपनी डिग्री प्राप्त की, और बड़ौदा राज्य सरकार की नौकरी को तैयार हो गये। उनकी पत्नी ने अपने पहले बेटे यशवंत को इसी वर्ष जन्म दिया। अम्बेडकर अपने परिवार के साथ बड़ौदा चले आये पर जल्द ही उन्हें अपने पिता की बीमारी के चलते बंबई वापस लौटना पडा़, जिनकी मृत्यु 2 फरवरी 1913 को हो गयी।

छुआछूत के विरुद्ध संघर्ष

भारत सरकार अधिनियम 1919, तैयार कर रही साउथबोरोह समिति के समक्ष, भारत के एक प्रमुख विद्वान के तौर पर अम्बेडकर को गवाही देने के लिये आमंत्रित किया गया। इस सुनवाई के दौरान, अम्बेडकर ने दलितों और अन्य धार्मिक समुदायों के लिये पृथक निर्वाचिका और आरक्षण देने की वकालत की। 1920 में, बंबई में, उन्होंने साप्ताहिक मूकनायक के प्रकाशन की शुरूआत की। यह प्रकाशन जल्द ही पाठकों मे लोकप्रिय हो गया, तब्, अम्बेडकर ने इसका इस्तेमाल रूढ़िवादी हिंदू राजनेताओं व जातीय भेदभाव से लड़ने के प्रति भारतीय राजनैतिक समुदाय की अनिच्छा की आलोचना करने के लिये किया। उनके दलित वर्ग के एक सम्मेलन के दौरान दिये गये भाषण ने कोल्हापुर राज्य के स्थानीय शासक शाहू चतुर्थ को बहुत प्रभावित किया, जिनका अम्बेडकर के साथ भोजन करना रूढ़िवादी समाज मे हलचल मचा गया। अम्बेडकर ने अपनी वकालत अच्छी तरह जमा ली, और बहिष्कृत हितकारिणी सभा की स्थापना भी की जिसका उद्देश्य दलित वर्गों में शिक्षा का प्रसार और उनके सामाजिक आर्थिक उत्थान के लिये काम करना था। सन् 1926 में, वो बंबई विधान परिषद के एक मनोनीत सदस्य बन गये। सन 1927 में डॉ. अम्बेडकर ने छुआछूत के खिलाफ एक व्यापक आंदोलन शुरू करने का फैसला किया। उन्होंने सार्वजनिक आंदोलनों और जुलूसों के द्वारा, पेयजल के सार्वजनिक संसाधन समाज के सभी लोगों के लिये खुलवाने के साथ ही उन्होनें अछूतों को भी हिंदू मंदिरों में प्रवेश करने का अधिकार दिलाने के लिये भी संघर्ष किया। उन्होंने महड में अस्पृश्य समुदाय को भी शहर की पानी की मुख्य टंकी से पानी लेने का अधिकार दिलाने कि लिये सत्याग्रह चलाया।

1 जनवरी 1927 को डॉ अम्बेडकर ने द्वितीय आंग्ल – मराठा युद्ध, की कोरेगाँव की लड़ाई के दौरान मारे गये भारतीय सैनिकों के सम्मान में कोरेगाँव विजय स्मारक मे एक समारोह आयोजित किया। यहाँ महार समुदाय से संबंधित सैनिकों के नाम संगमरमर के एक शिलालेख पर खुदवाये। 1927 में, उन्होंने अपना दूसरी पत्रिका बहिष्कृत भारत शुरू की, और उसके बाद रीक्रिश्टेन्ड जनता की। उन्हें बॉंबे प्रेसीडेंसी समिति मे सभी यूरोपीय सदस्यों वाले साइमन आयोग 1928 में काम करने के लिए नियुक्त किया गया। इस आयोग के विरोध मे भारत भर में विरोध प्रदर्शन हुये, और जबकि इसकी रिपोर्ट को ज्यादातर भारतीयों द्वारा नजरअंदाज कर दिया गया, डॉ अम्बेडकर ने अलग से भविष्य के संवैधानिक सुधारों के लिये सिफारिशें लिखीं।

संविधान निर्माण

अपने विवादास्पद विचारों, और गांधी और कांग्रेस की कटु आलोचना के बावजूद अम्बेडकर की प्रतिष्ठा एक अद्वितीय विद्वान और विधिवेत्ता की थी जिसके कारण जब, 15 अगस्त, 1947 में भारत की स्वतंत्रता के बाद, कांग्रेस के नेतृत्व वाली नई सरकार अस्तित्व मे आई तो उसने अम्बेडकर को देश का पहले कानून मंत्री के रूप में सेवा करने के लिए आमंत्रित किया, जिसे उन्होंने स्वीकार कर लिया। 29 अगस्त 1947 को, अम्बेडकर को स्वतंत्र भारत के नए संविधान की रचना कि लिए बनी के संविधान मसौदा समिति के अध्यक्ष पद पर नियुक्त किया गया। अम्बेडकर ने मसौदा तैयार करने के इस काम मे अपने सहयोगियों और समकालीन प्रेक्षकों की प्रशंसा अर्जित की। इस कार्य में अम्बेडकर का शुरुआती बौद्ध संघ रीतियों और अन्य बौद्ध ग्रंथों का अध्ययन बहुत काम आया।

संघ रीति मे मतपत्र द्वारा मतदान, बहस के नियम, पूर्ववर्तिता और कार्यसूची के प्रयोग, समितियाँ और काम करने के लिए प्रस्ताव लाना शामिल है। संघ रीतियाँ स्वयं प्राचीन गणराज्यों जैसे शाक्य और लिच्छवि की शासन प्रणाली के निदर्श (मॉडल) पर आधारित थीं। अम्बेडकर ने हालांकि उनके संविधान को आकार देने के लिए पश्चिमी मॉडल इस्तेमाल किया है पर उसकी भावना भारतीय है।

अम्बेडकर द्वारा तैयार किया गया संविधान पाठ मे संवैधानिक गारंटी के साथ व्यक्तिगत नागरिकों को एक व्यापक श्रेणी की नागरिक स्वतंत्रताओं की सुरक्षा प्रदान की जिनमें, धार्मिक स्वतंत्रता, अस्पृश्यता का अंत और सभी प्रकार के भेदभावों को गैर कानूनी करार दिया गया। अम्बेडकर ने महिलाओं के लिए व्यापक आर्थिक और सामाजिक अधिकारों की वकालत की, और अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के लोगों के लिए सिविल सेवाओं, स्कूलों और कॉलेजों की नौकरियों मे आरक्षण प्रणाली शुरू के लिए सभा का समर्थन भी हासिल किया, भारत के विधि निर्माताओं ने इस सकारात्मक कार्यवाही के द्वारा दलित वर्गों के लिए सामाजिक और आर्थिक असमानताओं के उन्मूलन और उन्हे हर क्षेत्र मे अवसर प्रदान कराने की चेष्टा की जबकि मूल कल्पना मे पहले इस कदम को अस्थायी रूप से और आवश्यकता के आधार पर शामिल करने की बात कही गयी थी. 26 नवंबर, 1949 को संविधान सभा ने संविधान को अपना लिया। अपने काम को पूरा करने के बाद, बोलते हुए, अम्बेडकर ने कहा =

मैं महसूस करता हूं कि संविधान, साध्य (काम करने लायक) है, यह लचीला है पर साथ ही यह इतना मज़बूत भी है कि देश को शांति और युद्ध दोनों के समय जोड़ कर रख सके। वास्तव में, मैं कह सकता हूँ कि अगर कभी कुछ गलत हुआ तो इसका कारण यह नही होगा कि हमारा संविधान खराब था बल्कि इसका उपयोग करने वाला मनुष्य अधम था।

1951 मे संसद में अपने हिन्दू कोड बिल के मसौदे को रोके जाने के बाद अम्बेडकर ने मंत्रिमंडल से इस्तीफा दे दिया इस मसौदे मे उत्तराधिकार, विवाह और अर्थव्यवस्था के कानूनों में लैंगिक समानता की मांग की गयी थी। हालांकि प्रधानमंत्री नेहरू, कैबिनेट और कई अन्य कांग्रेसी नेताओं ने इसका समर्थन किया पर संसद सदस्यों की एक बड़ी संख्या इसके खिलाफ़ थी। अम्बेडकर ने 1952 में लोक सभा का चुनाव एक निर्दलीय उम्मीदवार के रूप मे लड़ा पर हार गये। मार्च 1952 मे उन्हें संसद के ऊपरी सदन यानि राज्य सभा के लिए नियुक्त किया गया और इसके बाद उनकी मृत्यु तक वो इस सदन के सदस्य रहे।

देश में अलग-अलग जाति नहीं सिर्फ इंसान रहें

भारतीय संस्कृति को अक्षुण्ण रखते हुए देश और समाज में दलितों का सम्मान बढ़े और उन्हें वांछित अधिकार मिल सकें- यही चाहते थे डा. अंबेदकर।

स्वतंत्रता प्राप्ति में बड़े-बड़े नेताओं की अपनी भूमिका रही है, लेकिन सामाजिक न्याय के संदर्भ में डा. भीमराव अंबेदकर का योगदान भुलाया नहीं जा सकता। डा. अंबेदकर का जीवन संघर्षों का एक सफरनामा है। इतने पढ़े-लिखे होने के बावजूद एक गरीब परिवार में जन्म लेने के कारण उन्हें अनेक मुश्किलों का सामना करना पड़ा। कांशीराम और मायावती जैसे राजनेताओं ने दलितों के आंदोलन को नई दिशा देने का ह्रश्वयास किया। काफी हद तक वे कामयाब भी रहे, लेकिन अंबेदकर का दृष्टिकोण इनसे पृथक था। उन्होंने अपने विचार और कार्यशैली से किसी भी स्तर पर दलित समाज को जो दिया, वैसा योगदान राष्ट्रहित को दृष्टिगत रखते हुए कोई नहीं दे सकता। वे चाहते थे कि भारतीय संस्कृति को अक्षुण्ण रखते हुए देश और समाज में दलितों का सम्मान बढ़े और उन्हें वांछित अधिकार मिल सकें।

अंतत: डा. अंबेदकर का संघर्ष रंग लाया। दलित कामयाबी की राह पर अग्रसर हुआ। शिखर पर पहुंचा, लेकिन धीरे-धीरे दलित आंदोलन में भटकाव आया। वह सामाजिक परिवर्तन को ताक पर रखकर समानता, भाईचारा और दलित आंदोलन को भूल बैठा और अवसरवादी समझौते करते हुए टुकड़ों में बंटता गया। इसके बावजूद दलित स्वर मुखर एवं देश की भागीदारी में शिखर स्वर है। अभी भी दलितों में राजनीतिक इच्छाशा ि त का अभाव है। अन्य वर्गों की दलितों के प्रति सहानुभूति कभी परिलक्षित नहीं हुई। आज का दलित नेतृत्व भी मनोवैज्ञानिक पीड़ा, सामाजिक शोषण, आर्थिक दुर्दशा और मानसिक उत्पीड़न का शिकार है। ऐसे में कैसे अपेक्षा करें कि दलित अपनी अस्मिता को बचाकर रख सकता है? दलित अलग-अलग प्रतिध्रुव बना रहे हैं। दलित ही आपस में कई फाकों में विभ त हैं, योंकि आज की विषम परिस्थितियों में दलित नेतृत्व के पास न तो वैचारिक सोच है, न ही सामाजिक ढांचे को मापदंड में लाने का पैमाना जो डा. अंबेदकर की सोच को अंजाम दे सके। अंग्रेजों के शासनकाल में देश में 2000 जातियां थीं। इस कारण नेतृत्व में डा. अंबेदकर सबल थे। आज जातियां बंटकर 4000 हो गई हैं। कहने का भाव यह है कि उतने ही संवेग में दलितों को संघर्ष करना होगा, तभी इसका लाभ मिल सकेगा। इसीलिए अंबेदकर चाहते थे कि देश में जाति न रहे, इंसान रहे। फरवरी 1933 में इंग्लैंड के गार्जियन समाचार पत्र और अमरीका के न्यूयार्क टाइ स के प्रतिनिधि भारतीय नेताओं का इंटरव्यू लेने आए। गांधी, जिन्ना और डा. अंबेदकर ने उन्हें मिलने का अलग-अलग समय दिया। रात्रि नौ बजे से 11 बजे के बीच समय दिए जाने के बावजूद गांधी और जिन्ना सोए हुए मिले। दो बजे दोनों संवाददाता डा. अंबेदकर के पास पहुंचे। उन्होंने प्रश्न किया कि आप इतनी रात तक जाग रहे हैं, जबकि गांधी और जिन्ना तो हमें सोए हुए

मिले। डा. अंबेदकर ने बड़े ही सहज भाव सें उत्तर दिया कि वे सोए हुए हैं, क्योंकि उनका समाज जाग रहा है और मैं इसलिए जाग रहा हूं क्योंकि मेरा समाज सोया हुआ है। वे अनभिज्ञ हैं, वे उनकी तरह जागरूक नहीं हैं। कहने का आशय है कि डा. अंबेदकर के विचारों के अनुकूल दलित नेतृत्व को नई दिशा देने वाला सही कर्णधार अभी दलितों में नहीं आ सका है। डा. अंबेदकर ने अपनी भोगी हुई पीड़ा से दलितों को दूर रखा। वे स्कूल में पढ़ नहीं सके, लेकिन दलितों को शिक्षा के अधिकार दिलाए। जो उन्होंने महसूस किया, उससे दलितों को दो-चार नहीं होने दिया लेकिन अंबेदकर को मानने वालों से कैसा व्यवहार किया जाता है, यह सर्वविदित है। डा. अंबेदकर का कहना था कि हमारा राष्ट्र हजारों जातियों में बंटा हुआ है, इसलिए हम एक राष्ट्र नहीं हो सकते। जब तक वर्णवादी व्यवस्था, जातिवाद कायम है, दलितों का उत्पीड़न एवं अत्याचार कम नहीं हो सकते। इसी मुद्दे पर उन्होंने गांधी से बड़ी मुश्किल से समझौता किया।

अंबेदकर की सोच थी कि संगठित होकर ही दलित सरकार बना सकते हैं, क्योंकि सुखभोगी सभी वर्ग अलग-अलग धर्मों में विभ त हैं। आज भी अनुसूचित वर्ग संगठित नहीं है, इसलिए तीसरी ताकत का गठन नहीं हो पा रहा है। कांशीराम के प्रयासों से दलित न केवल सत्ता में आए, बल्कि राष्ट्र की मुज्यधारा में भी शामिल हो गए, लेकिन उनके मु ि त के द्वार नहीं खुले। यही कारण है कि दलित वर्ग सामाजिक एवं आर्थिक क्षेत्र में व्याप्त अंतर्विरोधों को कम नहीं कर सका और कष्ट भोगने को मजबूर है। बाबासाहब अंबेदकर ने दलितों को शिक्षा, संगठन और संघर्ष का नारा दिया। डा. अंबेदकर को कानूनमंत्री से नवाजे जाने का श्रेय केवल उनकी काबिलियत को जाता है। उन्हें जहां भी अवसर मिला वह दलित विकास की संरचना लागू करते गए। चाहे वह समय गोलमेज परिषद का हो, संविधान निर्माण की बात हो या गांधी से टकराव हो। वे जानते थे कि किसी भी पार्टी के साथ गठबंधन कर वे दलितों का विकास नहीं कर सकते। आज भी दलित निष्ठावश डा. अंबेदकर का दिली स मान करते हैं किंतु वोट दूसरी पार्टी को देते हैं। दलित इस बात को अच्छी तरह जानते हैं कि आज नहीं तो कल यह ब्राह्मणवादी और दलित गठबंधन सभी को दिखाई देगा। इसलिए वे न तो बसपा को वोट देते हैं, न मायावती को, वे तो बाबा साहब के अहसानों को चुकाने के लिए विवश हैं। डा. अंबेदकर द्वारा निर्मित प्रावधानिक संविधान के उपभोग करने के बाद दलितों ने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा कि उनका समाज कहां है, इसलिए दलित राजनीति दिशाहीन हो गई है।

बौद्ध धर्म मे परिवर्तन

सन् 1950 के दशक में अम्बेडकर बौद्ध धर्म के प्रति आकर्षित हुए और बौद्ध भिक्षुओं व विद्वानों के एक सम्मेलन में भाग लेने के लिए श्रीलंका(तब सीलोन) गये। पुणे के पास एक नया बौद्ध विहार को समर्पित करते हुए, अम्बेडकर ने घोषणा की कि वे बौद्ध धर्म पर एक पुस्तक लिख रहे हैं, और जैसे ही यह समाप्त होगी वो औपचारिक रूप से बौद्ध धर्म अपना लेंगे।[9] 1954 में अम्बेडकर ने बर्मा का दो बार दौरा किया; दूसरी बार वो रंगून मे तीसरे विश्व बौद्ध फैलोशिप के सम्मेलन में भाग लेने के लिए गये। 1955 में उन्होने भारतीय बुद्ध महासभा या बौद्ध सोसाइटी ऑफ इंडिया की स्थापना की। उन्होंने अपने अंतिम लेख, द बुद्ध एंड हिज़ धम्म को 1956 में पूरा किया। यह उनकी मृत्यु के पश्चात प्रकाशित हुआ। 14 अक्टूबर 1956 को नागपुर में अम्बेडकर ने खुद और उनके समर्थकों के लिए एक औपचारिक सार्वजनिक समारोह का आयोजन किया. अम्बेडकर ने एक बौद्ध भिक्षु से पारंपरिक तरीके से तीन रत्न ग्रहण और पंचशील को अपनाते हुये बौद्ध धर्म ग्रहण किया। इसके बाद उन्होने एक अनुमान के अनुसार लगभग 500000 समर्थको को बौद्ध धर्म मे परिवर्तित किया।[9] नवयान लेकर अम्बेडकर और उनके समर्थकों ने हिंदू धर्म और हिंदू दर्शन की स्पष्ट निंदा की और उसे त्याग दिया। इसके बाद वे नेपाल में चौथे विश्व बौद्ध सम्मेलन मे भाग लेने के लिए काठमांडू गये। उन्होंने अपनी अंतिम पांडुलिपि बुद्ध या कार्ल मार्क्स को 2 दिसंबर 1956 को पूरा किया।

डा बी.आर. अम्बेडकर ने दीक्षा भूमि, नागपुर, भारत में ऐतिहासिक बौद्ध धर्म में परिवर्तन के अवसर पर,15 अक्टूबर 1956 को अपने अनुयायियों के लिए 22 प्रतिज्ञाएँ निर्धारित कीं.800000 लोगों का बौद्ध धर्म में रूपांतरण ऐतिहासिक था क्योंकि यह विश्व का सबसे बड़ा धार्मिक रूपांतरण था.उन्होंने इन शपथों को निर्धारित किया ताकि हिंदू धर्म के बंधनों को पूरी तरह पृथक किया जा सके.ये 22 प्रतिज्ञाएँ हिंदू मान्यताओं और पद्धतियों की जड़ों पर गहरा आघात करती हैं. ये एक सेतु के रूप में बौद्ध धर्म की हिन्दू धर्म में व्याप्त भ्रम और विरोधाभासों से रक्षा करने में सहायक हो सकती हैं.इन प्रतिज्ञाओं से हिन्दू धर्म,जिसमें केवल हिंदुओं की ऊंची जातियों के संवर्धन के लिए मार्ग प्रशस्त किया गया, में व्याप्त अंधविश्वासों, व्यर्थ और अर्थहीन रस्मों, से धर्मान्तरित होते समय स्वतंत्र रहा जा सकता है.

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

महावीर

अभी के लिए और सभी के लिए हैं

लगभग 2500 वर्ष पहले अहिंसा और सहिष्णुता की शिक्षा देने वाले जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी का जीवन ही उनका संदेश है। उनके सिद्धांत और आदर्श वर्तमान संदर्भों में सभी के लिए प्रासंगिक हैं। सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह, ब्रह्मचर्य और अस्तेय आदि अनेक उपदेशों को अपनाकर आज भी राम राज्य की स्थापना की जा सकती है।

वर्द्धमान महावीर का जन्म दिन महावीर जयंती के रुप मे मनाया जाता है। वर्धमान महावीर जैन धर्म के प्रवर्तक भगवान आदिनाथ की परंपरा में चौबीसवें तीर्थंकर थे। वे कठोर तप से इंद्रियों पर विजय प्राप्त कर जिन अर्थात विजेता कहलाए। संतों का कहना है कि भगवान महावीर अभी के लिए हैं और सभी के लिए हैं....

कोई भी सुखी नहीं रह सकता

भगवान महावीर ने कहा था कि दूसरों को दुखी बनाकर कोई सुखी नहीं रह सकता। महावीर से बढ़कर इस जगत में कोई साधना नहीं है। इसमें असीम सुख, शांति और तृप्ति के साथ ही जीवन की ऊंचाइयों और गहराइयों को छूने की शक्ति है।

एक होकर आगे बढ़े जैन बंधु

महावीर जंयती के दिन दिगंबर एवं श्वेतांबर जैन बंधुओं को एक होकर आगे बढ़ने का संकल्प लेना चाहिए। अपनी मान्यताओं और अपने अहम को ताक में रखकर एक मंच पर आकर समाज कल्याण के लिए कार्य करना चाहिए।

धन से नहीं मन से धर्म हो

महावीर के सिद्धांत आज भी प्रासंगिक हैं। आज धर्म और धर्माचार्यों पर अंगुली उठती है। ऐसे विषम माहौल में समाजजनों को उन लोगों को आगे लाना चाहिए जो सच्चे साधु -संत हैं और नि :स्वार्थ भाव से समाज व धर्म की सेवा कर रहे हैं।

अहिंसा और मैत्री आज की जरूरत

अहिंसा और मैत्री की आज दुनिया को जरूरत है और भगवान महावीर ने यही संदेश दुनिया को दिया था। आज धर्म में दिखावा और आडंबर अधिक आ गया है। अपना नाम गुप्त रखकर गरीबों और पीड़ितों की सेवा करें।

अहिंसा सब समस्याओं का समाधान

विश्व की समस्याओं का एक ही समाधान है- भगवान महावीर के अहिंसा के सिद्धांत का पालन करना। भगवान महावीर ने कहा था- मैं अपने भक्तों को ही अपनी परतंत्रता से मुक्ति देता हूं। इस स्वतंत्रता का अर्थ हमने बदल दिया।

मैं और मेरा से मुक्त करें अपने को

महावीर सभी के लिए हैं। मनुष्य यदि आज मैं और मेरा- इन दो चीजों से अपने को मुक्त कर ले तो मोक्ष संभव है। बच्चों को हमेशा सुसंस्कार दें। जीवन में पहला स्थान माँ का, दूसरा पिता और तीसरा स्थान गुरु का होता है। त्याग जीवन को उन्नत बनाता है।

अलगाव की नीति खतरनाक

तीर्थंकर महावीर ने विश्व मैत्री का अनुपम सूत्र दिया है। नमक की भांति जियो जो सबका स्वाद बढ़ाता है, शकर की तरह घुल जाओ जो सबको मधुरता देती है और प्राण वायु यानि ऑक्सीजन की तरह जियो यानि सबको जीवन दो। यही भगवान महावीर का संदेश है।

भगवान महावीर : अहिंसा के स्रोत

एक बार तीर्थंकर भगवान महावीर पूर्व की ओर खड़े-खड़े सूर्य देव का आतप ले रहे थे। इतने में कुछ लोग वहां आए। भगवान महावीर को उस स्थिति में देख उन्हें हंसी आई और उन्हें शरारत करने की सूझी। एक व्यक्ति ने उन पर धूल उड़ाई, किंतु वे आतप में लीन रहे। इस पर दूसरे ने उन पर कंकड़ फेंके किंतु भगवान ने उसकी ओर देखा तक नहीं। तीसरे ने उन पर थूका, लेकिन भगवान शांत ही खड़े रहे। यह देख वे आपस में कहने लगे, अरे! यह कैसा आदमी है, थूकने पर भी इसे क्रोध नहीं आया, न ही इसने हमें भला-बुरा कहा। तब दूसरा बोला, यह तो कोई पागल मालूम होता है या गूंगा। तीसरा बोला,यह तो कोई ढोंगी दिखाई देता है। मैं इसमें गुस्सा लाता हूं। और यह कह उसने उनके सिर पर बहुत सारी धूल फेंक दी किंतु इसका भी उस संत पुरुष पर कोई असर नहीं हुआ।

सभी कष्टों का निवारण करे हनुमानजी की आराधना

परंपरागत रूप से हनुमान को बल, बुद्धि, विद्या, शौर्य और निर्भयता का प्रतीक माना जाता है। संकट काल में हनुमानजी का ही स्मरण किया जाता है। वह संकटमोचन कहलाते हैं। कहा जाता है कि बजरंग बली ने शनि महाराज को कष्टों से मुक्त कराया था, उनकी रक्षा की थी इसलिए शनि देवता ने यह वचन दिया था हनुमानजी की उपासना करने वालों को वे कभी कष्ट नहीं देंगे। बल्कि कष्टों को दूर कर उनकी रक्षा करेंगे। शनि या साढ़ेसाती की वजह से होने वाले कष्टों के निवारण हेतु हनुमानजी की आराधना करनी चाहिए। बजरंग बली की पूजा से शनि का प्रकोप शांत होता है। सूर्य व मंगल के साथ शनि की शत्रुता व योगों के कारण उत्पन्न कष्ट भी दूर हो जाते हैं।

- मंगलवार को सूर्योदय के समय नहाकर ? श्री हनुमते नम: मंत्र का जप करें।
- मंगल को सुबह तांबे के लोटे में जल व सिंदूर मिश्रित कर श्री हनुमानजी को अर्पित करें।
- श्री हनुमान यंत्र को सिद्ध कर लाल धागे में धारण करें, हर मंगलवार को इसका विधिवत पूजन करें।
- लगातार दस मंगलवार तक श्री हनुमान को गुड़ का भोग लगाएं।
- शुक्ल पक्ष के पहले मंगलवार से यह क्रिया शुरू करें।
- हर मंगलवार को श्री हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- चित्रा या मृगशिरा नक्षत्रों में किसी भी मंगलवार से शुरू कर लगातार 10 मंगलवार तक श्री हनुमान के मंदिर में जाकर केले का प्रसाद चढ़ाएं।
- चमेली के तेल में सिंदूर मिलाकर श्री हनुमान को अर्पित करें। यह उपाय मंगलवार के दिन करने से शीघ्र सफलता मिलती है।

अहिंसा का संदेश देती महावीर जयंती

यदि किसी को हमारी मदद की आवश्यकता है और हम उसकी मदद करने में सक्षम भी हैं फिर भी हम उसकी सहायता न करें तो यह भी हिंसा है। जरूरतमंद की सहायता करना अहिंसा धर्म है। किसी की जान बचाने के लिए अहिंसक प्राणी अथवा प्रेम से भरा हुआ प्राणी अपनी जान भी दे देता है। इस तरह की उत्तम वृत्ति मनुष्यों में ही नहीं पशुओं में भी देखी जा सकती है।

भगवान महावीर ने आज के दिन जन्म लेकर जीवों को अहिंसा, स्याद्वाद और अपरिग्रह का संदेश दिया। सत्य और अहिंसा जैसे महान सिद्धान्त तो सामान्यतः सत्पुरुषों की श्रेणी में आने वाले सभी मनुष्यों में देखे जा सकते हैं। लेकिन महावीर की अहिंसा बहुत सूक्ष्म है।

उनके विचारों में जीवों की रक्षा कर लेना मात्र अहिंसा नहीं है किसी भी प्राणी को तकलीफ नहीं पहुंचाना मात्र अहिंसा नहीं है।

यदि किसी को हमारी मदद की आवश्यकता है और हम उसकी मदद करने में सक्षम भी हैं फिर भी हम उसकी सहायता न करें तो यह भी हिंसा है। जरूरतमंद की सहायता करना अहिंसा धर्म है। किसी की जान बचाने के लिए अहिंसक प्राणी अथवा प्रेम से भरा हुआ प्राणी अपनी जान भी दे देता है। इस तरह की उत्तम वृत्ति मनुष्यों में ही नहीं पशुओं में भी देखी जा सकती है।

दो मित्र जंगल के रास्ते से गुजर रहे थे। उन्होंने देखा कि एक सूखे पेड़ के नीचे दो मृग मृत पड़े हैं। उनमें से एक मित्र ने गौर से उन्हें देखा और चकित होते हुए अपने मित्र से बोला- मित्र! खड़ा न दीखे पारधी लगा न दीखे बाण। मैं तोसों पूछों सखे कैसे तज्या प्राण॥

हे मित्र! यहां पर न तो कोई शिकारी नजर आ रहा है, न ही इन मृगों के शरीर में कोई बाण ही लगा हुआ है, फिर भला इनकी मृत्यु कैसे हो गई। दूसरे बुद्धिमान मित्र ने उसे बताया कि देखो यहां किनारे पर गड्ढा है जिसमें थोड़ा पानी है।

जल थोड़ा नेहा घना लगा प्रीति का बाण
तू पी- तू पी कहत ही दोनों तज्या प्राण

मित्र देखते नहीं हो गड्ढे में कितना कम पानी है और इन दोनों में प्रेम गहरा है। प्यास से व्याकुल दोनों हिरण एक-दूसरे से यह कहते रहे कि पहले तुम पानी पी लो फिर मैं पी लूंगा। एक-दूसरे के लिए बलिदान करते हुए दोनों ने प्राण त्याग दिया।

जैसे बिना जल के कुआं शोभित नहीं होता। मूर्ति के बिना मंदिर की शोभा नहीं होती, जैसे पुष्प के बिना उद्यान मनोरम नहीं लगता वैसे ही अहिंसा के बिना धर्म का अस्तित्व सम्भव नहीं।

भगवान महावीर ने इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करके, अपनी इच्छाओं का निरोध करके परम पद को प्राप्त किया और संसार के प्राणियों को भी उसी मार्ग पर चलने का उपदेश देकर गए। मनुष्य में से यदि इच्छाओं को घटा दिया जाए तो भगवान अवशिष्ट रहते हैं वही मोक्ष है। और मनुष्य में इच्छाओं को जोड़ दिया जाए तो वह मानव ही रह जाता है। यही संसार है।

मनुष्य - इच्छा = भगवान (मोक्ष)
मनुष्य - इच्छा = इन्सान (संसार)

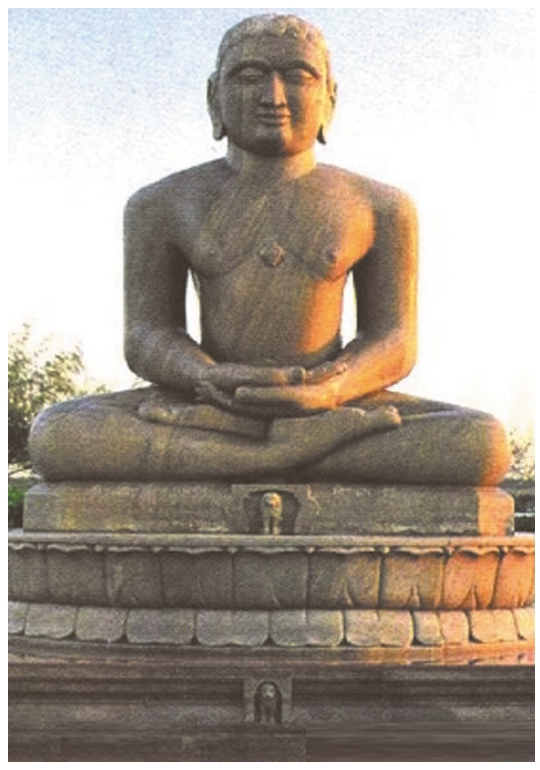

इन हनुमान मंत्रों से वर्ष भर रहें सुरक्षित

जीवन में शक्ति और सिद्धि की कामना को पूरी करने के लिए श्रीहनुमान उपासना अचूक मानी जाती है। दरअसल, श्रीहनुमान व उनका चरित्र जीवन में संकल्प, बल, ऊर्जा, बुद्धि, चरित्र शुद्धि, समर्पण, शौर्य, पराक्रम, दृढ़ता के साथ जीवन में हर चुनौतियों या कठिनाइयों का सामना करने व उनसे पार पाने की अद्भुत प्रेरणा है।

श्री हनुमान चिरंजीवी भी माने जाते हैं। ऐसी अद्भुत शक्तियों व गुणों के स्वामी होने से ही वे जाग्रत देवता के रूप में पूजनीय हैं। इसलिए किसी भी वक्त हनुमान की भक्ति संकटमोचन करने के साथ ही तन, मन व धन से संपन्न बनाने वाली मानी गई है। नए साल की शुरुआत भी हनुमान भक्ति के साथ करें।

यहां बताए जा रहे विशेष हनुमान मंत्र का स्मरण चुस्त व संकटमुक्त रहने की ऐसी कामनासिद्धि कर बहुत ही मंगलकारी साबित होगा।

* स्नान के बाद श्री हनुमान की पंचोपचार पूजा यानी सिंदूर, गंध, अक्षत, फूल, नैवेद्य चढ़ाकर करें।

* गुग्गल धूप व दीप जलाकर नीचे लिखा हनुमान मंत्र लाल आसन पर बैठ साल और जीवन को सफल व पीड़ामुक्त बनाने की इच्छा से बोलें और अंत में श्री हनुमान की आरती करें।

नमो हनुमते रुद्रावताराय
विश्वरूपाय अमित विक्रमाय
प्रकटपराक्रमाय महाबलाय
सूर्य कोटिसमप्रभाय रामदूताय स्वाहा।।

भगवान महावीर
अहिंसा के स्रोत

एक बार तीर्थंकर भगवान महावीर पूर्व की ओर खड़े-खड़े सूर्यदेव का आतप ले रहे थे। इतने में कुछ लोग वहां आए। भगवान महावीर को उस स्थिति में देख उन्हें हंसी आई और उन्हें शरारत करने की सूझी।

एक व्यक्ति ने उन पर धूल उड़ाई, किंतु वे आतप में लीन रहे। इस पर दूसरे ने उन पर कंकड़ फेंके किंतु भगवान ने उसकी ओर देखा तक नहीं। तीसरे ने उन पर थूका, लेकिन भगवान शांत ही खड़े रहे।

यह देख वे आपस में कहने लगे, अरे! यह कैसा आदमी है, थूकने पर भी इसे क्रोध नहीं आया, न ही इसने हमें भला-बुरा कहा। तब दूसरा बोला, यह तो कोई पागल मालूम होता है या गूंगा। तीसरा बोला,यह तो कोई ढोंगी दिखाई देता है। मैं इसमें गुस्सा लाता हूं। और यह कह उसने उनके सिर पर बहुत सारी धूल फेंक दी किंतु इसका भी उस संत पुरुष पर कोई असर नहीं हुआ।

तब उसने उन पर मुष्टि-प्रहार किया किंतु उन्हें शांत खड़े देख उसने उन पर ढेले फेंके और पास में पड़ी हड्डियों की नोक उनके शरीर में चुभोने लगा। इसका भी कुछ असर न होता देख उसने उन पर भाले से प्रहार किया, लेकिन भगवान की शांति भंग न हुई। वे आंखें बंद किए मौन खड़े रहे। उनकी शांत मुद्रा से प्रसन्नता टपक रही थी। अब तो उन सबको पश्चाताप हुआ कि उन्होंने व्यर्थ ही एक साधु पुरुष को तंग किया।

वे उनके चरणों पर गिर पड़े और बोले, भगवान! हमें क्षमा करें, आपको अकारण ही कष्ट दिया।

भगवान महावीर तो अहिंसा के स्रोत थे। उन पर दुष्ट व्यवहार का कैसे असर हो सकता था?

आत्मविकास की ज्योति प्रज्ज्वलित करें : महावीर

भौतिक चकाचौंध एवं आपाधापी के इस युग में मानसिक संतुलन को बनाए रखने की हर व्यक्ति द्वारा आवश्यकता महसूस की जा रही है। वर्तमान की स्थिति को देखकर ऐसा महसूस हो रहा है कि कुछेक व्यक्तियों का थोड़ा सा मानसिक असंतुलन बहुत बड़े अनिष्ट का निमित्त बन सकता है। मानसिक संतुलन के अभाव में शांति के दर्शन करना, आनंद का स्पर्श करना भी दुर्लभतम बनता जा रहा है, जैसे कि रेत के कणों से तेल को प्राप्त करना। इस अशांत वातावरण में मन को अनुशासित व स्थिर करना दुष्कर कार्य बनता जा रहा है। आज मानव तनाव की नाव में बैठकर जिंदगी का सफर तय कर रहा है। बच्चा तनाव के साथ ही जन्म लेता है। गर्भ का पोषण ही अशांत, तनाव एवं निषेधात्मक विचारों के साथ होता है तो बच्चे के मज्जा में तनाव व आक्रोश के बीज कैसे नहीं होंगे। हिंसा के इस युग में एक ज्वलंत प्रश्न है कि शांति कैसे मिले? तनाव से मुक्ति कैसे मिले? मन को स्थिर कैसे बनाया जाए? इन सारे निरुत्तरित प्रश्नों का समाधान आज भी उपलब्ध हो सकता है। जरूरी है कि हम उन्हीं तरीकों और विचारों के साथ किसी भी समस्या का हल नहीं करें, जिनके साथ हमने वह समस्या पैदा की है। समस्या की उत्पत्ति और समस्या के समाधान का मार्ग कभी भी एक नहीं हो सकता।

महावीर ने आत्मा को समय माना। उन्होंने ऐसा इसलिए माना कि जिस दिन आप इतने शांत एवं संतुलित हो जाएं कि वर्तमान आपकी पकड़ में आ जाए तो समझना चाहिए कि आप सामायिक में प्रवेश के लिए सक्षम हो गए हैं। सामायिक अथवा ध्यान जीवन की आंतरिक अनुभूति है जिसका प्रभाव हमारे बाह्य जीवन में परिलक्षित होता है। इसीलिए बाहर के जगत में समय और क्षण के भीतर घटने वाली घटनाओं की उपेक्षा नहीं होनी चाहिए, बल्कि उन्हें रूपांतरित करने का प्रयास होना चाहिए। मन को अनुशासित करना जितना एक योग साधन के लिए उपयोगी है उतना ही एक साधारण व्यक्ति के लिए भी। यह मानव मात्र के लिए उपयोगी है। मनुष्य अनन्त शक्ति का भंडार है। किंतु मन को संतुलित करने का मार्ग नहीं जानता, इसलिए वह अपने आपको कभी निर्बल, कभी दुखी, कभी अज्ञानी और कभी अशांति का अनुभव करता है। इन स्थितियों से निजात पाने का मार्ग है-संकल्प। असल में संकल्प हमें हमारी जीवन-ऊर्जा को अधोगामी होने से बचाता है बल्कि वह उसे उर्द्धवगामी बनाता है। आधुनिक युग का प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी प्रकार की चिंता व तनाव से ग्रस्त है। आज विश्व के सर्वाधिक विकसित व संपन्न राष्ट्र अमेरिका में लोग तनाव व चिंता से निजात पाने के लिए प्रतिवर्ष 10 करोड़ डॉलर से अधिक व्यय करते हैं तथा कई टन मादक द्रव्यों का सेवन करते हैं। तनाव की यह समस्या नई नहीं है। प्राचीन काल में भी व्यक्ति इसके दुष्परिणामों से मुक्त नहीं था। लेकिन वर्तमान में इस समस्या ने काफी उग्र रूप धारण कर लिया है। जहां समस्या है वहां समाधान भी है। अशांत मन को अनुशासित करने की प्रक्रिया का मार्गदर्शन देने वाली कबीरदासजी की इस प्रेरणा का स्मरण रखें-जिन जागा तिन माणिक पाया। किसी भी समस्या के मूल में मन का असंयम होता है। जब मन में कोई बुरा विचार पैदा होता है तो हमारा आचार व व्यवहार भी बुरा बन जाता है। शक्ति जागरण व शांत जीवन का महत्वपूर्ण सूत्र है-संयम। मन को अनुशासित कर असंयम से होने वाली समस्या पर काबू पाया जा सकता है। तनाव व आपाधापी की जिंदगी में शांति के सुमन खिल सकते हैं, बशर्ते जीवन के प्रति सकारात्मकता का क्रम दीर्घकालित व निरंतरता लिए हुए हो।

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

कानून व्यवस्था के नाम पर पुलिस और न्यायापालिका को नजरअन्दाज कर रही है राज्य सरकार : मायवती

लखनऊ ।

बहुजन समाज पार्टी (बसपा) की राष्ट्रीय अध्यक्ष मायावती ने कानून व्यवस्था को लेकर सरकार पर हमला बोला और कहा कि यूपी में कानून-व्यवस्था व अपराध नियंत्रण के नाम पर सरकार व पुलिस, न्यायपालिका को नजरअंदाज करके काम कर रही है। बसपा प्रमुख मायवती ने बुधवार को प्रदेश सरकार पर हमला बोलते हुए कहा कि, यूपी में भी कानून-व्यवस्था व अपराध नियंत्रण आदि के नाम न्यायपालिका को नजरअंदाज किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार जिस प्रकार से पुलिस और न्यायपालिका को नजरअन्दाज करके काम कर रही हैं। वह कानून के राज का मजाक है। बसपा प्रमुख मायावती ने आगे कहा कि राजस्थान तथा फिर इसके बाद मध्यप्रदेश व गुजरात जैसे अन्य राज्यों में शान्ति एवं सौहार्द बिगाड़ने वाली हिंसक घटनाएं हुई है। जिसके बाद सरकार ने प्रथमदृष्टया बदले की कार्रवाई की है। वह सही कदम नहीं। क्या इसी प्रकार के उदाहरणों से नया भारत बनेगा ज्ञात हो कि रविवार को रामनवमी के अवसर पर गुजरात, मुध्य प्रदेश, झारखंड और पश्चिम बंगाल में कई जगह हिंसा हुई थी। इन घटनाओं में दो लोगों की मौत हो गई तो कई घायल हो गए। वहीं उत्तर प्रदेश में कहीं से कोई अप्रिय खबर नहीं आई। इसको लेकर मुख्यमंत्रयी योगी ने भी अपनी सरकार की पीठ थपथपाते हुए कहा है कि यूपी में कहीं तू-तू-मैं-मैं नहीं हुई। उन्होंने कहा यह उत्तर प्रदेश के विकास की नई सोच को प्रदर्शित कर रहा है।

उन्होंने कहा यह उत्तर प्रदेश के विकास की नई सोच को प्रदर्शित कर रहा है। मुख्यमंत्री ने कहा कि यहां अब गुंडागर्दी और अराजकता के लिए कोई जगह नहीं है।

विधान परिषद चुनाव में सपा का सूपड़ा साफ, शिवपाल ने पहले ही कर दिया था इशारा

लखनऊ ।

उत्तर प्रदेश विधान परिषद चुनाव में समजावादी पार्टी का सूपड़ा साफ हो गया है। 36 सीटों पर हुए चुनाव में सपा एक भी सीट जीत नहीं पाई। हैरानी की बात तो यह है कि पार्टी अपने सबसे बड़े गढ़ और मुलायम परिवार के गृहजनपद इटावा में भी बुरी तरह हार गई है। अखिलेश यादव को यह झटका ऐसे समय पर लगा है जब चाचा शिवपाल यादव बागवत का बिगुल फूंक चुके हैं। दूसरी तरफ रामपुर और आजमगढ़ जैसे मजबूत सीटों पर भी सपा को हार का सामना करना पड़ा है। रामपुर के सबसे प्रभावशाली नेता आजम खान का खेमा भी अखिलेश से नाराज है, तो आजमगढ़ संसदीय सीट से सपा अध्यक्ष ने हाल ही में इस्तीफा दिया है। वैसे तो स्थानीय प्राधिकार क्षेत्र की सीटों पर चुनाव में सत्तारूढ़ दल का दबदबा नई बात नहीं है। लेकिन मुख्य विपक्षी दल का इस तरह शून्य पर सिमट जाना बड़ी बात है। खासकर इटावा जैसे गढ़ में भी सपा की हार के बाद राजनीतिक विश्लेषक हैरान हैं। सवाल उठ रहा है कि क्या परिवार में फूट और चाचा शिवपाल यादव की बागवत की भी इसमें भूमिका है? राजनीतिक जानकारों का मानना है कि इटावा में सपा की इतनी बड़ी हार सामान्य नहीं है। इटावा में मुलायम सिंह यादव के बाद सबसे ज्यादा किसी की पकड़ है, तो वह शिवपाल यादव ही हैं। शिवपाल यादव का यहां के प्रत्येक कार्यकर्ता से व्यक्तिगत संपर्क है। ऐसे में इटावा के नतीजों में उनकी भूमिका को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है। विधान परिषद चुनाव में वोटिंग के लिए इटावा पहुंचे शिवपाल यादव ने भी इस ओर इशारा कर दिया था। चेहरे पर मुस्कान के साथ उन्होंने जहां एक तरफ यह कहा कि उचित समय आने वाला है तो दूसरी तरफ यह कहकर सस्पेंस बढ़ा दिया था कि नतीजे आने दो, देख लेना किसकी जीत होगी। शिवपाल ने अपनी जुबान से अधिक कुछ कहने से तो इनकार किया, लेकिन उनके चेहरे के हाव-भाव ने साफ कर दिया था कि वह अखिलेश के खिलाफ नतीजे आने की बात कर रहे हैं। यही वजह बना कि इटावा में पहली बार भारतीय जनता पार्टी ने जीत हासिल की है।

शादी में आलिया को कीमती 8 डायमंड्स का वेडिंग बैंड गिफ्ट करेंगे रणवीर कपूर

मुंबई । बॉलीवुड एक्टर आलिया भट्ट और रणबीर कपूर की शादी को बस कुछ ही समय बचा है। दोनों 14 या 15 अप्रैल को विवाह करने वाले हैं। इनकी इन्टिमेट सेरेमनी आरके हाउस वास्तु में होगी। और जब बात आती है शादी की तो हम गिफ्ट्स की भी बात करते हैं। रणबीर कपूर आलिया को बहुत सोच-विचार करके वेडिंग गिफ्ट देने वाले हैं। रणबीर कपूर ने आलिया भट्ट के लिए 8 डायमंड्स की रिंग बनवाई है। रणबीर कपूर का लकी नंबर 8 है, ऐसे में उन्होंने आलिया भट्ट को खास तोहफा देने का सोचा है। आलिया के जो रणबीर कपूर ने 8 डायमंड्स का वेडिंग बैंड बनवाया है, उसके डायमंड्स उन्होंने खुद पिक किए हैं। यह इंटरनेशनल ब्रांड वैन क्लीफ एंड आर्पेल्स ने तैयार किया है। कई सेलेब्स इस ब्रांड को प्रिफर करते हैं। कई बार इस ब्रांड की लग्जरी एक्सेस्सरीज भी पहने नजर आते हैं। रणबीर कपूर के करीबी दोस्त ने बताया कि एक्टर ने आलिया भट्ट के लिए कस्टम मेड रिंग बनवाई है। यह लंदन स्टोर में बनी है और खुद रणबीर ने आलिया के लिए डायमंड्स का चयन किया है। बता दें कि वैन क्लीफ एंड आर्पेल्स ब्रांड पेरिस का है। 1896 में इस ब्रांड की स्थापना हुई थी। इसकी खासियत यह है कि यह ब्रांड डायमंड को डट लुक देते हुए बेहद ही खूबसूरती से कट करता है। रणबीर कपूर और आलिया भट्ट की शादी 14 या 15 अप्रैल को होने वाली है। दोनों शादी के बाद एक नहीं, बल्कि दो ग्रैंड वेडिंग रिसेप्शन देने वाले हैं।

पूर्वोत्तर राज्यों में अगले पांच दिनों तक भारी वर्षा के आसार

नई दिल्ली । बंगाल की खाड़ी से पूर्वोत्तर भारत तक तेज दक्षिण-पश्चिमी हवाओं के प्रभाव में निचले क्षोभमंडल के स्तर पर रहने वाले उप-हिमालयी पश्चिम बंगाल और आठ पूर्वी राज्यों में अगले पांच दिनों के दौरान व्यापक रूप से बारिश होने की संभावना है। भारत मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) ने कहा कि 14 से 16 अप्रैल के दौरान असम, मेघालय और अरुणाचल प्रदेश में भारी से बहुत भारी वर्षा होने की संभावना है और 13 अप्रैल को उसी क्षेत्र और उप-हिमालयी पश्चिम बंगाल और सिक्किम में बारिश की संभावना है। इस बीच, दक्षिण तमिलनाडु पर मध्य क्षोभमंडल स्तर तक चक्रवाती परिसंचरण के प्रभाव के तहत, केरल, माहे और लक्षद्वीप पर गरज/बिजली के साथ हल्की से भारी बारिश और तमिलनाडु में अलग-अलग जगह बारिश होने की संभावना है। अगले पांच दिनों के दौरान पुडुचेरी, कराईकल, तटीय आंध्र प्रदेश और तटीय और आंतरिक कर्नाटक और 13 व 14 अप्रैल को उन्हीं क्षेत्रों में भारी होने की संभावना है। इस बीच पूर्वोत्तर में चुमुकेदिमा और धनसिरी (प्रत्येक में 10 सेमी) और दीफू, तामेंगलोंग, झरनापानी (6 सेमी प्रत्येक) और वोखा (5 सेमी) में 4 सेमी से अधिक बारिश हुई।

लखीमपुर खीरी हिंसा : गवाहों को दी जा रही जान से मार देने की धमकी

लखीमपुर खीरी ।

मोनू भैया (आशीष मिश्र मोनू) बाहर आ चुके हैं। फिर से हमारी सरकार (बीजेपी) सत्ता में आ गई है, अब तुम लोगों को सबक सिखाया जाएगा% पिछले महीने 10 मार्च को यूपी विधानसभा चुनाव के नतीजों वाले दिन लखीमपुर खीरी हिंसा मामले के गवाह ने बीच रास्ते में रोककर धमकी और हमला किए जाने का आरोप लगाया था। एक महीने बाद ही लखीमपुर खीरी फिर से चर्चा में आया, जब एक अन्य गवाह ने बीजेपी के नेताओं पर पिस्टल की बट से हमला करने का आरोप लगाया। पीड़ित के अनुसार आरोपी जाते हुए कह गए, अगर कोर्ट में गवाही दी तब सीधे गोली मार दी जाएगी। बीते साल 3 अक्टूबर को नेपाल सीमा से सटे लखीमपुर जिले के तिकुनिया में हुई हिंसा की घटना देश और दुनिया में सुर्खियां बटोर रही थी। जमकर खूनी संघर्ष हुआ। फायरिंग और आगजनी में 4 किसानों सहित 8 लोगों की मौत हो गई थी। किसानों का आरोप है कि विरोध प्रदर्शन के दौरान केंद्रीय गृह राज्य मंत्री अजय मिश्रा टेनी के बेटे आशीष उर्फ मोनू और उसके समर्थकों ने किसानों पर गाड़ियां चढ़ा दीं। एक सप्ताह के बाद आशीष को गिरफ्तार किया गया। लेकिन यह आग ठंडा होने का नाम नहीं ले रही है। लखीमपुर खीरी हिंसा के मामले में आशीष मुख्य आरोपी हैं, जो कि जमानत पर बाहर हैं। हाईकोर्ट की तरफ से जमानत मिलने के बाद इस रद्द करने की याचिका सुप्रीम कोर्ट में दायर की गई, जिसपर पिछले सप्ताह शीर्ष अदालत ने फैसला सुरक्षित रख लिया। लेकिन हिंसा के गवाहों पर लगातार हमले की वारदात से सवालिया निशान लग रहा है। सवाल योगी सरकार पर भी उठ रहा है कि कोर्ट के दखल के बावजूद आखिर लापरवाही क्यों बरती जा रही है। दरअसल, मंगलवार को घटना के चश्मदीद गवाह पर रामपुर में जानलेवा हमला किए जाने का मामला समाने आया है। आरोप है कि कुछ लोगों ने रास्ते में उससे मारपीट की और जान से मार देने की धमकी देकर भाग गए। पीड़ित गवाह हरदीप सिंह का कहना है, आरोपी तिकुनिया कांड के मामले में गवाही ना देने के लिए दबाव बना रहे थे। मामले को लेकर बिलासपुर थाने में एफआईआर दर्ज हुई है। रिपोर्ट्स के मुताबिक, पीड़ित हरदीप सिंह हमलावरों ने उस समय हमला किया जब वह गुरुद्वारे से वापस आ रहे थे।

नवाबगंज रोड के पास कुछ लोग गाड़ी में आए और उनसे बात करने के बहाने रुके। लेकिन तभी उन्होंने हरदीप पर हमला कर धमकाने लगे। उन्होंने कहा कि अगर तुमने लखीमप सुप्रीम कोर्ट ने 16 मार्च को यूपी सरकार से मामले में एक गवाह पर हमले के संबंध में विस्तृत हलफनामा दाखिल करने को कहा था।

मुस्लिम फल विक्रेता की दुकान में तोड़फोड़ करने आरोप में चार लोग गिरफ्तार

बेंगलुरु ।

कर्नाटक पुलिस ने श्रीराम सेना से जुड़े चार लोगों को गिरफ्तार किया है। इन सभी पर धारवाड़ जिले में मुस्लिम फल विक्रेता की दुकान में तोड़फोड़ करने के आरोप है। फल विक्रेता नबीसाब ने पुलिस में शिकायत दर्ज कराई, इसके बाद पुलिस ने उन्हें हिरासत में ले लिया। गिरफ्तार किए गए लोगों की पहचान चिदानंद कलाल, कुमार कट्टिमणि, मायलरप्पा गुडप्पनवर और महालिंग एगली के रूप में हुई है। धारवाड़ ग्रामीण पुलिस ने जानबूझकर धार्मिक भावनाओं को आहत करने, गैरकानूनी सभा, दंगा करने और शांति भंग करने की कोशिश के आरोप में 8 लोगों के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज की है। जानकारी के मुताबिक, 15 साल से नबीसाब की दुकान नुगेकेरी हनुमान मंदिर के प्रांगण में है। दरअसल, 9 अप्रैल को मंदिर परिसर में आए कार्यकर्ताओं ने फलों को नष्ट कर उन्हें अपना व्यवसाय जारी न रखने की सलाह दी। राज्य के कानून और संसदीय कार्य मंत्री जेसी मधु स्वामी ने सदन के पटल पर कहा कि गैर-हिंदू मंदिर परिसर और धार्मिक मेलों में अपना कारोबार नहीं कर सकते हैं। उसके बाद से ही हिंदुत्ववादी समूह मुस्लिम विक्रेताओं को सभी धार्मिक स्थलों से खाली करने का पुरजोर मांग कर रहे हैं। लेकिन सभी लोगों ने फल विक्रेता की दुकान में हुई तोड़फोड़ की निंदा की और पूर्व मुख्यमंत्री एच.डी. कुमारस्वामी ने विक्रेता को वित्तीय सहायता दी है। बता दें कि राज्य में हिजाब, हलाल विवाद के बाद मंदिर के सामने मुस्लिम व्यापारियों की दुकान देखकर यह कहना गलत नहीं है कि पिछले कुछ दिनों में सांप्रदायिक घटनाएं बढ़ी हैं।

उबेर के बाद ओला ने भी मुंबई-दिल्ली एनसीआर के बाद कोलकाता और हैदराबाद में बढ़ाया किराया

नई दिल्ली ।

पेट्रोल के भाव कई शहरों में 100 रुपये लीटर के स्तर के पार निकल जाने का असर अब कैब और टैक्सी सेवाओं पर दिखने लगा है। ऐप बेस्ड टैक्सी सेवाएं देने वाली अमेरिकी कंपनी उबर ने मुंबई और दिल्ली-एनसीआर के बाद कोलकाता और हैदराबाद में भी किराया बढ़ा दिया है। इसी तरह प्रतिस्पर्धी कंपनी ओला ने भी कई शहरों में किराया बढ़ाने का निर्णय लिया है। उबर इंडिया एंड साउथ एशिया के हेड ऑफ सेंट्रल ऑपरेशंस नीतीश भूषण ने कहा कि हम ड्राइवर्स के फीडबैक को सुनते हैं और समझते हैं कि तेल की कीमतों में अभी आ रही तेजी से उन्हें दिक्कतें हो रही हैं। तेल की कीमतों में आई तेजी से ड्राइवर्स को हो रहा नुकसान कम करने के लिए उबर ने दिल्ली-एनसीआर और कोलकाता में किराया 12 फीसदी बढ़ाने का फैसला किया है। इसी तरह मुंबई और हैदराबाद में किराया 15 फीसदी बढ़ाया गया है। उन्होंने कहा कि आने वाले समय में कंपनी तेल की कीमतों के ट्रेंड पर नजर रखेगी और उसी के हिसाब से निर्णय लेगी। मामले से जुड़े एक सूत्र ने बताया कि किराए में यह बढ़ोतरी सिर्फ कार कैटेगरी के लिए है। ऑटो रिक्शा के किराए में कोई बदलाव नहीं किया गया है, क्योंकि इस बारे में राज्य सरकारें अलग से फैसला लेती हैं। ओला ने भी प्रमुख शहरों में किराया बढ़ाने का फैसला लिया है। खबरों के अनुसार, कंपनी ने हैदराबाद के अपने ड्राइवरों को ईमेल भेजकर इसकी जानकारी दी है। ईमेल में कहा गया है कि ओला के मिनी और प्राइम कैटेगरी के लिए किराया 16 फीसदी बढ़ाया गया है।

संसद में भड़काऊ भाषण को लेकर सुप्रीम कोर्ट ने उत्तराखंड से मांगी स्टेटस रिपोर्ट

हरिद्वार ।

हरिद्वार में पिछले साल धर्म संसद कार्यक्रम के दौरान भड़काऊ भाषण को लेकर की जा रही जांच में हुई प्रगति को लेकर सुप्रीम कोर्ट ने उत्तराखंड सरकार से स्टेस्ट रिपोर्ट दाखिल करने के कहा है। इसके साथ ही, कोर्ट ने हिमाचल प्रदेश में इस तरह के धर्म संसद के आयोजन को लेकर याचिकाकर्ता को राज्य सरकार को इसकी कॉपी देने की भी इजाजत दी है। कोर्ट ने याचिकाकर्ता को यह भी छूट दी है कि वे इस कार्यक्रम के खिलाफ संबंधित जिला कलेक्टर के सामने शिकायतें दायर करवा सकते हैं। धर्म संसद में दिए गए भड़काऊ भाषण के खिलाफ आपराधिक कार्यवाई की मांग पर पत्रकार कुर्बान अली और सीनियर एडवोकेट अंजना प्रकाश पटना हाईकोर्ट के पूर्व जज की याचिका पर विचार करते जस्टिस ए.एम खानविलकर और अभय एस। ओका की बेंच की तरफ से यह आदेश दिया गया। इस मामले में उत्तराखंड सरकार की तरफ से पेश हुए वकील ने काउंटर एफिडेविट दायर करने के लिए और समय की मांग की है। लाइव लॉ के मुताबिक, राज्य सरकार की तरफ से यह बताया गया कि पुलिस ने इस मामले में चार केस दायर किए हैं और तीन मामलों में चार्जशीट दायर की जा चुकी है। प्रधान न्यायाधीश की अगुवाई वाली बेंच ने याचिका पर 12 जनवरी को नोटिस जारी किया था। सीजेआई के सामने कल फौरन सुनवाई के लिए याचिकाकर्ता के वकील की तरफ से मामले को रखा गया था। इसके बाद, इस मामले को जस्टिस खानविलकर की बेंच के सामने सुनवाई के लिए रखा गया था। साल 2021 में 17 और 19 दिसंबर को हरिद्वार में यति नरसिंहानंद की तरफ से और दूसरा कार्यक्रम दिल्ली में हिन्दू युवा वाहिनी की तरफ से आयोजित किया गया था। याचिकाकर्ताओं ने इस कार्यक्रम के दौरान दिए गए भड़काऊ भाषण को लेकर सुप्रीम कोर्ट ने फौरन सुनवाई की मांग की थी।

वकील रश्मि सिंह, सुमिता हजारिका की तरफ से दायर याचिका में भड़काऊ भाषण को लेकर एसआईटी से निष्पक्ष जांच की मांग की गई थी। केन्द्रीय गृह मंत्रालय, दिल्ली के पुलिस कमिश्नर और डीजीपी उत्तराखंड को पक्ष बनाया गया था। इसके बाद उत्तराखंड सरकार ने विवादित यति नरसिंहानंद को गिरफ्तार किया, जो 16 जनवरी को आयोजित धर्म संसद कार्यक्रम के दौरान मुख्य स्पीकर थे।

देश के कई राज्यों में बना वर्षायोग, लोगों को भीषण गर्मी और लू से मिलेगी कुछ राहत

नई दिल्ली । राजधानी दिल्ली में बुधवार को आंशिक तौर पर बादल छाए रहेंगे। अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः 39 और 22 डिग्री सेल्सियस रहने की संभावना है। पहाड़ों पर पश्चिमी विक्षोभ की सक्रियता से 18 अप्रैल तक रोजाना ही आंशिक तौर पर बादल छाए रहेंगे। दिल्ली-एनसीआर में भीषण गर्मी और लू से थोड़ी राहत बरकरार रहेगी। उत्तराखंड में गुरुवार को कुछ हिस्सों में छिटपुट बारिश व गरज के साथ बौछार भी पड़ सकती है। इससे गर्मी से राहत मिल सकती है। जम्मू कश्मीर में बढ़ती गर्मी के बीच 13-14 अप्रैल को कुछ स्थानों पर गरज के साथ हल्की बारिश एवं तेज हवा की संभावना है। इससे तपती गर्मी से हल्की राहत मिलेगी। मौसम विभाग के अनुसार इस सप्ताह तापमान 40 डिग्री सेल्सियस के ऊपर जाने की संभावना है। पंजाब में भीषण गर्मी की मार झेल रहे लोगों को बुधवार को राहत मिलने की संभावना है। मौसम विभाग की माने तो बुधवार को बादल छाए रहेंगे और कुछ स्थानों पर बारिश भी होने का अनुमान है। बिहार के पश्चिमी और पूर्वी चंपारण, गोपालगंज, अररिया और किशनगंज जिले के एक-दो स्थानों पर हल्की या मध्यम स्तर की बारिश हो सकती है। वहीं यूपी की बात करें तो कानपुर समेत कानपुर देहात, उन्नाव, हमीरपुर, हरदोई, फतेहपुर, फर्रूखाबाद, बांदा, जालौन, महोबा, कन्नौज, चित्रकूट, इटावा आदि जिलों में 13 से 17 अप्रैल के बीच धूल भरी आंधी के साथ बारिश भी हो सकती है। गर्मी के इस सीजन की यह पहली बारिश होगी। हिमाचल प्रदेश में गर्मी से कुछ राहत मिलने के आसार हैं। 15 अप्रैल तक प्रदेश के कई क्षेत्रों में मौसम खराब बना रहने की संभावना है। पश्चिमी विक्षोभ की सक्रियता से मौसम में यह बदलाव आ रहा है। इस दौरान कई क्षेत्रों में अंधड़ चलने का अलर्ट भी जारी हुआ है। मौसम विज्ञान केंद्र शिमला के अनुसार प्रदेश के मध्य व उच्च पर्वतीय भागों में 15 अप्रैल तक बारिश के साथ कई जगह अंधड़ चलने के आसार हैं।

संक्षिप्त समाचार

पेंशनभोगियों और रिटायर्ड कर्मचारियों के लिए सिंगल-विंडो पोर्टल स्थापित

नई दिल्ली । पेंशनभोगियों और रिटायर्ड होने वाले वाले वरिष्ठ कर्मचारियों के लिए अच्छी खबर है। दरअसल, अब उन्हें पेंशन से जुड़ी सभी सुविधाओं के लिए सरकारी विभागों के चक्कर नहीं लगाना होगा। मोदी सरकार ने पेंशनभोगियों और सेवानिवृत्त वरिष्ठ नागरिकों के सुविधा के लिए सिंगल-विंडो पोर्टल स्थापित करने की घोषणा की गई है। केंद्रीय मंत्री जितेंद्र सिंह ने पेंशनभोगियों और सेवानिवृत्त वरिष्ठ नागरिकों की मदद के लिए सिंगल-विंडो पोर्टल स्थापित करने की घोषणा की। सिंह ने जानकारी देकर कहा कि यह पोर्टल न केवल देशभर के पेंशनभोगियों और उनके सहयोगियों से सतत संपर्क बनाए रखने में मददगार होगा, बल्कि त्वरित प्रतिक्रिया के लिए लगातार उनके सुझाव और शिकायत आदि प्राप्त किए जा सकते हैं। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि कॉमन पेंशन पोर्टल का मकसद पेंशनभोगियों की सभी समस्याओं का एक ही स्थान पर डिजिटल मंत्र के द्वारा समाधान सुनिश्चित करना है ताकि उन्हें अलग-अलग विभागों के चक्कर नहीं लगाने पड़ें। जितेंद्र सिंह ने कहा कि पेंशन बकाया की प्रक्रिया, मंजूरी या वितरण के लिए जिम्मेदार सभी मंत्रालय इस डिजिटल से जुड़े रहे हैं और आकलन के बाद समस्या के समाधान के लिए संबंधित मंत्रालय या विभाग के पास शिकायतों को भेजा जाता है। उन्होंने कहा कि पेंशनभोगी, साथ ही नोडल अधिकारी, सिस्टम में निपटान तक ऑनलाइन शिकायत की स्थिति को देख सकते हैं।

नाबालिग लड़की से कथित दुष्कर्म मामले की पड़ताल के लिए भाजपा की पांच सदस्यीय समिति गठित

नई दिल्ली । भारतीय जनता पार्टी के अध्यक्ष जे पी नड्डा ने पश्चिम बंगाल के नदिया में नाबालिग लड़की से कथित दुष्कर्म और फिर उसकी हत्या के मामले की पड़ताल के लिए घटनास्थल का दौरा करने के लिए पार्टी की महिला सदस्यों की पांच सदस्यीय समिति का गठन किया है। भाजपा ने बताया कि तथ्य अन्वेषण समिति के सदस्यों में पार्टी की उपाध्यक्ष और सांसद रेखा वर्मा, उत्तर प्रदेश सरकार में मंत्री बेबी रानी मौर्या, तमिलनाडु से विधायक वनती श्रीनिवासन, खुशबू सुंदर और पश्चिम बंगाल की विधायक श्रीरूपा मित्रा चौधरी शामिल हैं। श्रीनिवासन तमिलनाडु में भाजपा की महिला ईकाई की प्रमुख भी हैं। ह्यगौरतलब है कि नौवीं कक्षा की छात्रा से पांच अप्रैल को आरोपी के घर पर एक जन्मदिन पार्टी में कथित तौर सामूहिक दुष्कर्म किया गया, जिसके बाद छात्रा की मौत हो गई। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने लड़की की मौत की वजह पर शक जाहिर किया था, इसके बाद विवाद उत्पन्न हो गया था। लड़की के परिवार ने उसके साथ सामूहिक दुष्कर्म होने का आरोप लगाया है। बनर्जी ने कहा कि नाबालिग लड़की और तृणमूल कांग्रेस के स्थानीय नेता के बेटे के बीच प्रेम संबंध थे। बनर्जी ने यह सवाल भी किया था कि क्या वह गर्भवती थी। मामले में टीएमसी नेता के बेटे को गिरफ्तार किया गया है।

करौली हिंसा पीड़ितों से मिलने जा रहे तेजस्वी सूर्या को पुलिस ने रोका

करौली । राजस्थान में करौली हिंसा पीड़ितों से मिलने जा रहे भाजपा प्रदेश अध्यक्ष डॉ.सतीश पूनियां और भारतीय जनता युवा मोर्चा (भाजयुमो) के राष्ट्रीय अध्यक्ष तेजस्वी सूर्या को बुधवार को पुलिस ने हिंडौन रोड पर रोक दिया। प्रदेश भाजपा सूत्रों के अनुसार डा.पूनियां और सूर्या करौली हिंसा के पीड़ितों से मिलने के लिए जयपुर से न्याय यात्रा के रूप में रवाना हुए थे और वे करौली जिला बॉर्डर पर पहुंचने पर पुलिस ने उन्हें हिंडौन रोड पर आगे जाने से रोक दिया। मौके पर भारी पुलिस बल तैनात हैं, वहीं काफी संख्या में भाजयुमों के कार्यकर्ता मौजूद हैं और वे आगे बढ़ने की कोशिश कर रहे हैं। कार्यकर्ता राज्य सरकार के खिलाफ तथा भारत माता और जय श्री राम के नारे लगा रहे हैं। इसके पहले डा. पूनियां और सूर्या ने जयपुर में सवाई मानसिंह अस्पताल में भर्ती करौली हिंसा के घायलों से मुलाकात कर न्याय रैली के रूप में करौली के लिए प्रस्थान किया था।

हंसखाली दुष्कर्म व हत्या मामले की जांच के लिए नदिया का दौरा करेगी एनसीपीसीआर टीम

नई दिल्ली । राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग (एनसीपीसीआर) की दो सदस्यीय टीम हंसखाली में एक नाबालिग लड़की से कथित दुष्कर्म और हत्या के मामले की जांच की स्थिति को समझने के लिए पश्चिम बंगाल के नदिया जिले का दौरा करेगी। एनसीपीसीआर के सदस्य सचिव की अध्यक्षता में दो सदस्यीय टीम 13-15 अप्रैल तक राज्य का दौरा करेगी। अधिकारियों ने कहा वे परिवार के सदस्यों के साथ-साथ संबंधित हितधारकों के साथ भी बातचीत करेंगे। घटना चार अप्रैल की है, जब आरोपी ने पीड़िता को अपना जन्मदिन मनाने के लिए अपने आवास पर आमंत्रित किया था। वहां आरोप के मुताबिक, लड़की को बहला-फुसलाकर शराब पिलाई गई और फिर उसके साथ दुष्कर्म किया गया। बाद में एक महिला ने पीड़िता को उसके आवास पर छोड़ दिया, जो कथित तौर पर आरोपी की करीबी सहयोगी थी। 4 अप्रैल की रात को लड़की को पेट के निचले हिस्से में तेज दर्द होने लगा और आखिरकार उसकी मौत हो गई।

मलिक की याचिका को सुनवाई के लिए सूचीबद्ध करने पर विचार करेगा सुप्रीम कोर्ट

नई दिल्ली । सुप्रीम कोर्ट महाराष्ट्र के मंत्री नवाब मलिक की उस याचिका को सुनवाई के लिए सूचीबद्ध करने पर विचार करेगा जिसमें धन शोधन मामले में उन्हें जेल से तत्काल रिहा करने का अनुरोध किया है। प्रधान न्यायाधीश एन वी रमण, न्यायमूर्ति कृष्ण मुरारी और न्यायमूर्ति हिमा कोहली की पीठ ने बुधवार को राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (राकांपा) के जेल में बंद नेता मलिक की ओर से पेश वकील कपिल सिब्बल से दस्तावेज उपलब्ध कराने को कहा। कराने को कहा। कराने को कहा। मलिक ने अपनी याचिका पर तत्काल सुनवाई का अनुरोध किया है। पीठ ने कहा कृपया कागजात दीजिए। सिब्बल ने कहा कि धन शोधन रोकथाम कानून 2005 में लागू हुआ था और मंत्री पर 2000 से पहले किए गए कथित अपराधों के लिए आरोप लगाया गया है। प्रवर्तन निदेशालय ने गैंगस्टर दाऊद इब्राहिम के सहायकों से कथित तौर पर जुड़े संपत्ति सौदे के सिलसिले में मलिक को गिरफ्तार किया था। गिरफ्तारी के तुरंत बाद मलिक ने उच्च न्यायालय में बंदी प्रत्यक्षीकरण याचिका दायर कर अपनी गिरफ्तारी और हिरासत के आदेशों को चुनौती दी थी।

स्वामी, मुद्रक व् प्रकाशक : सुरेश मौर्या द्वारा अष्ट विनायक ओफ़्सेट एफपी,149 प्लोट 26 खोडीयारनगर,सिद्धिविनायक मंदीर के पास , (भाटेना) हो.सो अंजना सुरत
गुजरात से मुद्रित एवं 191 महादेव नगर उधना सुरत गुजरात से प्रकाशित संपादक :सुरेश मौया (M) 9879141480 RNI No.:GUJHIN/2018/751000 (Subject to Surat jurisdiction)

राजस्थान में करौली हिंसा के बाद पलायन को मजबूर हिंदू समुदाय

कई जगह हिंदूओ ने घरों और दुकानों के बाहर संपत्ति बिकाऊके बोर्ड लगाए

www.krantisamay.com
www.epaper.krantisamay.com

जयपुर (एजेंसी), रामनवमी और नवसंवत्सर पर देश के कई राज्यों में हिंसा, पथराव और आगजनी के मामले सामने आए। दिल्ली, मध्य प्रदेश, राजस्थान, गुजरात, पश्चिम बंगाल, महाराष्ट्र, झारखंड, बिहार, कर्नाटक और छत्तीसगढ़ के अलग-अलग इलाकों में साम्प्रदायिक तनाव देखने को मिला। इन घटनाओं में कई लोग घायल भी हुए। राज्यों में हुई हिंसा के मामलों में पुलिस की कड़ी कार्रवाई जारी है। अब तक गुजरात, मध्य प्रदेश और अन्य राज्यों से कई लोगों की गिरफ्तारी हो चुकी है। इसके अलावा एमपी में हिंसा में शामिल आरोपियों के घरों और दुकानों को भी जमींदोज कर दिया गया है। जयपुर राजस्थान के करौली में नवसंवत्सर (दो अप्रैल) को हिंदू संगठनों की बाइक रैली पर हुए पथराव के बाद स्थिति तनावपूर्ण है। इस बीच मुस्लिम बहुल इलाकों से हिंदू अपने घर और दुकान बेचकर दूसरी जगह पलायन कर रहे हैं। दो घरों और कुछ दुकानों पर तो एक वर्ग विशेष के लोगों ने कब्जा कर लिया है। वहीं कई जगह हिंदूओ ने घरों और दुकानों के बाहर संपत्ति बिकाऊ के बोर्ड लगा दिए हैं। एक वरिष्ठ आइपीएस अधिकारी ने कहा कि पिछले एक सप्ताह में लोग अपना घर और दुकान छोड़कर या तो करौली में ही दूसरी जगह रहने लगे हैं या फिर ताला लगाकर दूसरी जगह चले गए हैं। इन लोगों को वापस लाने के प्रयास किए जा रहे हैं। पलायन करने वालों में जाटव, खटीक, धोबी और कुमावत समाज के लोग शामिल हैं।

भाजपा युवा मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष तेजस्वी सूर्या व प्रदेश भाजपा अध्यक्ष सतीश पूनिया करौली का दौरा करेंगे। राज्य सरकार में पंचायती राज मंत्री रमेश मीणा ने पलायन की बात को गलत बताते हुए कहा कि

यह अफवाह फैलाई जा रही है। हिंदुओं का पलायन नहीं हुआ है। वहीं भाजपा के राज्यसभा सदस्य किरोड़ी लाल मीणा ने 195 ऐसे लोगों की सूची प्रशासन को सौंपी है, जिन्होंने अब तक पलायन किया है।

झारखंड के लोहरदगा के हिरही गांव में 10 अप्रैल की शाम रामनवमी शोभायात्रा में पथराव के बाद भड़की सांप्रदायिक हिंसा एवं इससे उत्पन्न तनाव थमने का नाम नहीं ले रहा है। रामनवमी की रात एक दर्जन वाहनों और तीन घरों को फूंके जाने के बाद पुलिस-प्रशासन की चाक-चौबंद सुरक्षा व्यवस्था के बाद भी देर रात उपद्रवियों ने जहां हेसल गांव में झोपड़ीनुमा एक होटल में आग लगा दी थी, वहीं मंगलवार की रात शहर के अमलाटोली बुचन गली में फिर पत्थरबाजी हुई। इसके बाद क्षेत्र में फिर तनाव व्याप्त हो गया। एहतियात के तौर पर अफवाह फैलने से रोकने के लिए रामनवमी की आधी रात से ही जिले में इंटरनेट सेवा ठप कर दिए जाने के बाद प्रशासन ने पूरे मामले की जांच के लिए मंगलवार को एसआइटी का गठन कर दिया। इसमें तीन डीएसपी समेत कई पुलिस पदाधिकारियों को शामिल किया गया है। बहरहाल संबंधित क्षेत्रों में जहां पुलिस की गश्ती बढ़ा दी गई है, वहीं ड्रोन से भी स्थिति पर नजर रखी जा रही है। इधर घटना को लेकर क्षेत्र में राजनीतिक सरगर्मी भी तेज हो गई है।

मप्र के खरगोन में रामनवमी पर शोभायात्रा के दौरान हुए पथराव-आगजनी की घटनाओं के बाद प्रशासन की कार्रवाई चल रही है। प्रशासन के दस्ते ने करीम नगर स्थित अतिक्रमण कर बनी बेस्ट बेकरी पर बुलडोजर (बैकहो लोडर) चलाया। शाम को बस स्टैंड पर कांग्रेस नेता व पूर्व पार्षद अलीम शेख के चार मंजिला होटल पर भी कार्रवाई की गई। पुलिस ने अब तक 95 उपद्रवियों को गिरफ्तार किया है। इनमें से 83 को जेल भेजा गया। छह नाबालिग अपचारियों को न्यायालय में पेश किया गया। शहर में लगे कर्फ्यू में कोई छूट नहीं दी गई है। गौरतलब है ?कि 10 अप्रैल को रामनवमी पर शहर के तालाब चौक से शोभायात्रा निकलने की तैयारी चल रही थी। इस दौरान जैसे ही डीजे बजना शुरू हुआ, शोभायात्रा पर पथराव शुरूहो गया। इसके बाद अगले दिन सुबह तक शहर में कई स्थानों पर पथराव हुआ।

25 से अधिक स्थानों पर आगजनी की गई। वहीं बड़वानी के सेंधवा में शोभायात्रा के दौरान पथराव करने वाली युवती का वीडियो सामने आने के बाद पुलिस-प्रशासन ने उसके मकान को भी जमींदोज कर दिया। युवती का नाम साबिया बताया जा रहा है।

राजस्थान में पुलिस खानसामा का मानदेय बढ़ाया

लांगरी को अब हर महीने मिलेंगे 8316 रुपए

www.krantisamay.com
www.epaper.krantisamay.com

जयपुर (एजेंसी)। राजस्थान में थाना पुलिस, जेलकर्मियों के खानसामा लांगरी को अब हर महीने 8316 रुपए मिलेंगे राज्य सरकार ने लांगरी के मानदेय में बीस फीसदी की बढ़ोत्तरी कर दी है लांगरी को बढ़ा हुआ मानदेय एक अप्रैल 2022 से मिलेगा। गृह विभाग से लांगरी के मानदेय बढ़ाने के आदेश जारी किए गए हैं. प्रदेश में थानों और पुलिस लाइन, जेलों तथा होमगार्डकर्मियों के लिए चलने वाली मैस में लांगरी खाना बनाते हैं करीब

ढाई हजार लांगरी हैं, जो पुलिसकर्मियों के लिए सुबह-शाम खाना बनाते हैं. वहीं, होमगार्ड में 27 और जेल में 105 लांगरी खाना बनाते हैं. इसकी एवज में इन्हें हर महीने 6930 रुपए मासिक मानदेय मिल रहा है।

पिछले दिनों मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने विधानसभा में बजट सत्र में लांगरियों के मानदेय में 20 फीसदी की बढ़ोत्तरी करने की घोषणा की थी। इसके बाद मानदेय बढ़ाने का प्रस्ताव पुलिस मुख्यालय, जेल महानिदेशालय और होमगार्ड मुख्यालय से गृह विभाग भेजे गए. गृह विभाग से फाइल वित्त विभाग भेजी गई. इसके बाद वित्त विभाग ने 7 अप्रैल को लांगरी का मानदेय बढ़ाने पर सहमति दे दी. इस पर गृह विभाग से मानदेय बढ़ाने के वित्तीय व प्रशासनिक स्वीकृति के आदेश जारी किए गए। लांगरी का मानदेय बढ़ाने की मांग हर साल की जाती है इस सम्बंध में राज्य सरकार को प्रस्ताव भी भेजा जाता है बजट में अमूमन मुख्यमंत्री लांगरियों का मानदेय लगभग दस प्रतिशत बढ़ाने की घोषणा करते आए हैं. इस बार मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने लांगरियों का मानदेय 20 फीसदी बढ़ाने की घोषणा की. इसके बाद अब उनका मानदेय 6930 रुपये से बढ़कर 8316 रुपये हो गया है। मैस में काम करने वाले लांगरी पुलिस, जेल और होमगार्ड कर्मियों को खाना बनाकर खिलाते हैं, लेकिन कम मानदेय के कारण उनके परिवार का चूल्हा जलने में परेशानी आ रही है.

बढ़ती महंगाई में इतने कम मानदेय में किसी भी परिवार की रसोई चलाना मुश्किल होता है।

कर्फ्यू का समय एक दिन और बढ़ाया ढील भी की गई कम

आयेगी बीजेपी की न्याय यात्रा, पुलिस प्रशासन हुआ सतर्क

www.krantisamay.com
www.epaper.krantisamay.com

करौली(एजेंसी)। करौली में कर्फ्यू का समय एक दिन और बढ़ा दिया गया है। इसके साथ ही इसमें दी जाने वाली ढील की समय सीमा को आधा कर दिया गया है। जिला प्रशासन ने अब कर्फ्यू 14 अप्रैल की सुबह सात बजे तक के लिये बढ़ा दिया है।

जिला कलेक्टर राजेंद्र सिंह शेखावत ने इसके आदेश जारी किये हैं। वहीं बुधवार को कर्फ्यू में ढील केवल 4 घंटे की दी जायेगी।

इस दौरान चार घंटे तक सभी दुकानें खुल सकेंगी। नवसंवत्सर पर करौली में भी बाइक रैली पर हुये पथराव और भड़की हिंसा के बाद वहां कर्फ्यू लगाया गया था।

उसके बाद ही में हाल ही में इसमें ढील देने की शुरुआत की गई थी।

पुलिस प्रशासन को मिले फीडबैक के बाद इसकी समय सीमा को कम कर दिया गया है। मंगलवार को दिनभर कर्फ्यू में ढील दी गई थी।

जिला प्रशासन को मिले फीडबैक और बुधवार को करौली में आने वाली बीजेपी की न्याय यात्रा को देखते हुये ऐहतियात के तौर पर कर्फ्यू की अवधि बढ़ाकर ढीली की अवधि कम दी गई है।

दूसरी तरफ उपद्रव मामले की जांच के लिए गृह विभाग की जांच टीम करौली आयेगी। यह टीम 18 से 20 अप्रेल तक करौली में रहेगी।

टीम अलग अलग लोगों से मिलकर सुनवाई कर पूरे घटनाक्रम की जांच करेगी।

18 अप्रेल को सरकारी अधिकारी, पुलिस अधिकारी और मौके पर तैनात सुरक्षाकर्मियों के बयान लिए जाएंगे। 19 अप्रेल को आमजन की सुनवाई की जायेगी और साक्ष्य एकत्र किये जायेंगे।

20 अप्रेल को जांच में आवश्यक अन्य पक्षों से साक्ष्य जुटाये जायेंगे। करौली में भड़की हिंसा के बाद इस पर राजनीति भी जमकर हो रही है। बीजेपी और कांग्रेस दोनों ही पार्टियां अपने अपने प्रतिनिधिमंडल भेजकर मामले की जांच कर चुके हैं।

उसके बाद आज बीजेपी की न्याय यात्रा करौली आयेगी। इसको लेकर पुलिस प्रशासन पूरी तरह से चाक-चौबंद है। इस न्याय यात्रा में राजस्थान बीजेपी अध्यक्ष सतीश पूनिया और भाजयुमो के राष्ट्रीय अध्यक्ष तेजस्वी सूर्य मौजूद रहेंगे।

न्याय यात्रा को देखते हुये 3 आईपीएस, 10 एएसपी और 15 आरपीएस अधिकारी करौली में भेजे गए हैं।

न्याय यात्रा रैली को लेकर पुलिस प्रशासन पूरी तरह से अलर्ट मोड पर है। पूरे शहर में चप्पे-चप्पे पर भारी पुलिस फोर्स तैनात है।

कर्फ्यू में ढील की कम की गई अवधि कारण बुधवार को बाजार में सुबह केवल परचून और सब्जी तथा दूध की दुकानें ही खुली हैं।

कम समय अवधि के कारण बड़े दुकानदार असमंजस की स्थिति में हैं।